# प्रताप चरित्र



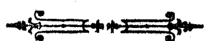




वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप.

केसरीसिंह बारहठ

# प्रताप चरित्र





रचयिता

केसरीसिंह बारहठ

सोन्याणा (मेवाड़)



आदर्श प्रेस, केसरगंज अजमेर में छपी

प्रथमबार २००० | सम्वत् १९९२ | मूल्य १।)

प्रकाशक

केसरीसिंह बारहठ
मुकाम सोन्याणा
पोस्ट कांकरोली ( मेवाड़ )



मुद्रक
नथमल लूणिया
आदर्श प्रेस, केसरगञ्ज अजमेर

# भूमिका

इस देश के क्षत्रिय राज्यों के इतिहास में राजवंश और चारण जाति का बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। बहुधा चारण ही राजकवि भी होते थे। कई बार जब राष्ट्र अथवा समाज पर आक्रमण करने वाली शक्तियों का सामना करने को देश के सामन्त अपने प्राणों को बलिदान करने के लिए रण में जाते थे तब इन ही कवियों के उत्साही वाक्य उनको कर्त्तव्य पथ पर डटे रहने में उत्साह व बल देते थे। बल्कि कई अवसरों पर चारण वीर स्वयं भी रणक्षेत्र में उतर कर युद्ध करते थे। इस कारण चारण जाति हमारे लिए श्रद्धेय है।

बारहट केसरीसिंहजी जो यह काव्य हिन्दी संसार को भेंट कर रहे हैं इसी जाति के आदरणीय रत्न हैं। मुझे यह विश्वास है कि यह काव्य भारतवासियों को प्रिय एवं उत्साह वर्धक होगा। महाराणा प्रताप का नाम संसार में अमर हो गया है। यद्यपि उनसे अधिक वीर योद्धा संसार में हो गये हैं उनकी सी देश भक्ति और देश सेवा भी कई अन्य वीरों में मिलती है और

विवेक एवं बुद्धि में उनसे बड़े अनेक राजा इसी देश में हुए हैं तथापि जिस परिस्थिति में कठिन संकटों का सामना करते हुये अपूर्व दृढ़ता, वीरता, स्वधर्म परायणता और स्वतन्त्रता का परिचय महाराणा प्रताप ने दिया है उसके उदाहरण संसार के इतिहास में मिलना अत्यन्त कठिन है। महाराणा प्रताप का इसी लिए हमारे हृदय में ऊँचा स्थान है और अनन्त काल तक यह शुद्ध श्रद्धा बनी रहेगी। उनका नाम ही हमें सदा उत्साहित और गौरवान्वित करता रहेगा।

महाराणा प्रताप के जीवन को काव्य रूप में उपस्थित करके बारहटजी ने हिन्दी साहित्य व हिन्दी समाज की बड़ी उत्तम सेवा की है। इस दृष्टि से यह पुस्तक अपने ढँग की अनोखी है। काव्य को इतिहास की कसौटी पर जाँचना तो व्यर्थ होगा। इतिहास में घटनाओं के समय, स्थान, और सत्यता को देखा जाता है। काव्य में भावों की सचाई परखनी पड़ेगी। कवि महाशय का यह दावा न होगा कि उनका ग्रंथ केवल एतिहासिक खोज का परिणाम है। यों तो उनका सारा ग्रन्थ एतिहासिक घटनाओं के तागों से बुना हुआ है। किन्तु इसकी हृदयग्राही विशेषता इसका सुन्दर काव्य है जो ओजस्वी है और समाज को मान मदिरा पिलाने वाला

है। मुझको आशा है इसका पान हजारों परिवारों में बड़े चाव से होगा।

हीरे को तो जोहरी परखे। काव्य के भाव व साहित्य की विशेषता को कवि और भाषा को विद्वान ही जान सकते हैं। मैं न तो कवि हूँ न भाषा का ज्ञानी। इस लिये कवि महाशय की रचना की समालोचना करने का मुझे अधिकार नहीं है। मैं तो केवल यह कह सकता हूँ— इसे आग्रह से कहना भी चाहता हूँ कि इस पुस्तक के पन्ने पन्ने में रस है, भाव है, श्रद्धा है, और इसीलिये ओज है। सचमुच बारहटजी ने इसमें अपने मन एवं हृदय की सारी शक्ति लगादी है। एक चारण वीर के लिए जो सर्वोत्कृष्ट लक्ष्य हुआ करता था उसको इन्होंने सिद्ध कर लिया है। यह रचना कवि की हृदय तन्त्री है। मैंने कई वार अपूर्व चाव और आनन्द के साथ इस काव्य के छन्दों को स्वयं कवि महाशय के मुख से सुना है और एक दो पवित्र आत्माओं के तो नेत्र इस काव्य को सुनते हुए अश्रु पूर्ण भी देखे गये हैं। बस, यही तो काव्य का सच्चा चमत्कार है।

इस युग में समाज को स्वतन्त्रता की भूख है। इसलिये भी प्रताप की कष्ट कहानी हमें रोचक एवं शिक्षा प्रद होगी। किन्तु यदि हम वीर शिरोमणी महाराणा

प्रताप की इस कारण से पूजा करते हैं तो यह स्मरण रखना चाहिये कि कवि महाशय की कविता को हमें उनके विषय देश और काल की दृष्टि से अवलोकन करना होगा। यदि कहीं हमारी सङ्कीर्णता और मदान्धता में हमने इससे अपने में मुसलमानों के प्रति ईर्षा अथवा घृणा के भाव उठने दिये तो काव्य का उज्ज्वल उद्देश्य कलुषित हो जायगा। जो मुसलमान देश पर आक्रमण करने वाले थे जो देश के क्षत्रिय राज्यों को अपने अधीन करने में लगे हुए थे उनका विरोध करना उस युग में कर्तव्य था। किन्तु इस समय की वीर गाथा से यदि आज भारत की शान्ति व राष्ट्रीयता के पवित्र श्रोत में द्वेष की कालिमा आजावे अथवा उसकी प्रगति अविश्वास और कट्टरता की चट्टानों से रुक जावे तो लज्जा व शोक से मानना होगा कि हमारे लिये यह अमृत भी विष का काम करेगा।

उदयपुर—मेवाड़<br>मृगशिर कृष्णा ११<br>सं० १९९२

मोहनसिंह मेहता

# निवेदन

हिन्दी साहित्य के इस उन्नत युग में भारत के बड़े २ विद्वानों और महा कवियों के समक्ष इस अपनी तुच्छ कृति को ले कर उपस्थित होते हुए मुझे संकोच होता है। परन्तु क्या हो, मेरे साहित्यक मित्रों के आगे मेरी कुछ चली नहीं।

यदा कदा मेरी सामयिक और वीर रस की फुटकर काव्य रचनाओं को सुनकर मेरे मित्रों ने मुझे विवश किया कि मैं कोई काव्य लिखूं।

मुझसे जहाँ तक बन पड़ता है, वीर रस की ही रचना किया करता हूँ। ऐसी दशा में मेरे काव्य का आधार वीर गाथा ही होना प्रायः निश्चित था। फलतः मैंने महाराणा प्रताप की जीविनी को काव्यबद्ध करने का साहस किया। वीर केसरी प्रताप के विषय में अनेक गद्य और पद्य ग्रंथ उपस्थित थे परन्तु उनका शृङ्खला बद्ध काव्यमय जीवन मेरे दृष्टिगोचर न होने से मैंने यह प्रयास किया है। मुझे इतिहास से भी कुछ प्रेम है।

अतः कविता लिखते हुए मैंने कोरी कल्पना का ही आधार नहीं लिया है, प्रत्युत यथासंभव इतिहास की छाया पर ही चला हूँ। हाँ-यह अवश्य है कि मैंने रायबहादुर महामहोपाध्याय पं० गोरीशङ्करजी ओझा की सोध पर ही पूर्णतया आधार नहीं रखा है। जहाँ तहाँ मैंने राजपुताने के इतिहास के जन्मदाता कर्नलटाड और महाकवि सूर्यमल मिश्रण की कृतियों का भी

आश्रय लिया है। बल्कि इस काव्य में यत्र तत्र किम्वदंतियों का भी समावेश हुआ है। उदाहरणार्थ--

"प्रताप-मान-सम्बाद"

"महाराणी का पैदल प्रयाण"

"ननद भावज का वार्तालाप"

"भामाशाह का स्वागत" आदि

पाठक जानते हैं कि कवि और इतिहासवेत्ता के क्षेत्र भिन्न २ हैं। ऐसी परिस्थिति में इस काव्य में इतना अन्तर तो अवश्य ही पाया जायगा जितना कि काव्य और इतिहास में होना स्वाभाविक है--

इसी प्रकार इस काव्य को साम्प्रदायिक और राजनैतिक दृष्टि से पक्षपात युक्त समझना भी इसके प्रति अन्याय होगा।

महाराणा प्रताप ने स्वतंत्रता की रक्षा के लिए युद्ध किया था, जिसमें उनकी तरफ हकीम सूर जैसे मुसलमान योद्धा भी थे। इसी प्रकार बादशाह अकबर की सेना में अब्दुर्रहीमखान खाना जैसे हिन्दू प्रेमी और अनेक राजपूत राजा लड़े थे। इसी प्रकार इन सबका यथोचित वर्णन इस काव्य में किया गया है। इस विषय में मेरे उदारचेता, माननीय मित्र डाक्टर मोहनसिंहजी महता-एम० ए० एल० एल० बी० पी० एच० डी० बार० एटला ने भूमिका में जो भाव प्रकट किये हैं वे सर्वथा अनुसरणीय हैं।

मेरी यह रचना विक्रम संवत १९८४ में ही समाप्त होगई थी परन्तु कई साँसारिक विघ्न बाधाओं के कारण पूरे सात वर्ष बाद इसे मुद्रित करा सका हूँ इस काव्य में जो भी त्रुटि रही हो वह

मेरी है। उसके सुधार के लिये सज्जन पाठक मुझे अवश्य सूचना देने को कृपा करें। अच्छाई जितनीभी हो उसका सारा श्रेय चरित्रनायक तथा आदरणीय एवम् विद्वान मित्रों को है।

अन्त में मैं अपने विद्या प्रेमी तथा उदार स्वामी श्रीमान महाराजाधिराज हिन्दू सूर्य महाराणाजी श्री १०८ श्री भूपालसिंहजी बहादुर जी० सी० एस० आइ० के० सी० आई० ई० के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ कि श्रीमानों की उदारता से इस ग्रंथ को विज्ञ संसार के सामने इस रूप में प्रस्तुत करने का अवसर प्राप्त हुआ है।

श्रीमानों के वीर, वदान्य सामन्तगण देवगढ वदनोर करजाली शाहपुरा, वनेड़ा, कानोड़, वानसी, के प्रति हार्दिक धन्यवाद अर्पण करता हूँ कि जिन्होंने उचित सहायता प्रदान की।

इसके अतिरिक्त स्वनामधन्य स्वर्गीय महाराज साहब चतुरसिंहजी, स्वर्गीय शास्त्री शोभालालजी महोदय, एवम् किसोरसिंहजी बारहठ एम० आर० ए० एस० स्टेट हिस्टोरियन पटियाला, व पण्डित उमाशंकरजी द्विवेदी कविरत्न जिन्होंने इस काव्य के संशोधन में परिश्रम किया, रावतजी साहब भगवानपुरा जिन्होंने अर्ज कर श्रीमान श्रीजी हजूर दामइकबालहू के सामने इस काव्य के कुछ अंश मालूम करवाए, मोहीठाकुर साहब अमरसिंहजी व ठाकुर साहब रामसिंहजी राष्टवर केलवा ने इसकी टिप्पणी लिखी एवं ठाकुर साहब डूंगरसिंहजी भाटी मोइने व आसिया इश्वरदानजी सेंगटिया ने प्रूफ संशोधन में सहायता दी आसिया आइदानजी मन्दार ने प्रेस कोपी बनाई। तथा जिन महानुभावों ने इसके प्रकाशन के पूर्व ही इसकी प्रतियें काफी तादाद में खरीद

कर मुफ्त वितरण करने का बचन दे इसके प्रकाशन में प्रोत्साहन दिया उन सबका मैं हृदय से आभारी हूँ।

महता फतहलालजी साहब व कुँअर सा० तेजसिंहजी महता बी. ए. एल एल. बी. व कुँअर सा० लालसिंहजी सक्तावत बी. ए. एल० एल० बी० सेटलमेन्ट ओफिसर जागीरात मेवाड़ व कुँवर सा० लक्ष्मीलालजी जोसी० एम० ए० एल० एलबी० व डाक्टर सा० अम्बालालजी आयुर्वेद शास्त्री अजमेर व डाक्टर सा० ऊँकारसिंहजी जोधपुर का भी मैं कृतज्ञ हूँ।

इस काव्य के लिखने में मुझे कहाँ तक सफलता मिली है इसका निर्णय सहृदय पाठक और निष्पक्ष समालोचक ही करेंगे। परन्तु यदि इसके पढ़ने से, पाठकों का थोड़ा भी मनोरञ्जन हुआ और उनके हृदय में स्वदेश प्रेमी हिन्दू सूर्य महाराणा प्रताप के प्रति श्रद्धा बढ़ी तो मैं अपने समय का सदुपयोग और परिश्रम को सार्थक समझूंगा।

**दोहा**

*भाषा एकहु की भली, मिली नहीं तालीम।*
*तातें ताके दोष को, मैं मनु नीम हकीम॥*
*समुझि यहीं करि हैं क्षमा, जे बुध हृदय उदार।*
*जे दर्शी पर दोष के, तिनहीं हरष अपार॥*

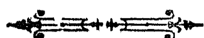
आपका विनम्रसेवक
**केसरीसिंह बारहठ**
**सोन्याणा-मेवाड़**



काव्य प्रणेता केसरीसिंह बारहठ

|| ॐ ||

# कवि परिचय



भारतवर्ष ही क्या संसार का शायद ही कोई देश ऐसा होगा जो वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की कृति एवम् कीर्ति से परिचित न हो। सचमुच महाराणा शूरता, वीरता, स्वतंत्रता और धर्म-परायणता का अवतार होकर उस समय हिन्दुओं का हिन्दुत्व और क्षत्रियों का क्षात्रत्व कायम रख गया। यही कारण है कि आज संसार में महाराणा का स्थूल शरीर नहीं रहा, परन्तु यश और प्रताप अब तक वैसा ही छा रहा है, बल्कि दिन प्रतिदिन और बढ़ता जारहा है। यही नहीं बहुधा स्थानों में तो देवताओं के समान उनकी चित्र-सेवा और उपासना तक होती है। क्यों न हो !

> "यद्यपि है न प्रताप जग, तदपि प्रताप प्रताप।
> आर्यन हर्ष अमापप्रद, यवनन को संताप ॥"

इस संसार की क्रीड़ा-स्थली में मनुष्य मात्र भला या बुरा कृत्य करके ही जीवन समाप्त करते रहते हैं, लेकिन सौभाग्य से

जिसकी जैसी कृति कवि कलाप एवम् कलाम में चढ़ जाती है वही कालान्तर तक जगत में बनी रहकर उत्तरोत्तर कविता की कसौटी पर कसाती रहती है। शूरकी शूरता, दानी की उदारता, सूम की कृपणता और वैभवी की विलासिता विशेष कर सुकवि की प्रखर कविता का आश्रय पाकर ही पृथ्वी पर अधिक टिक सकती है। प्रकृति की रचना में हर पदार्थ बनता और बिगड़ता है और कवि की रचना में वह सदैव बना रहता है। इसीलिये तो संसार में कवि की विधि से तुलना की जाकर विशेषता मानी गई है।

"विधिते कविसब विधि बड़े, यामें संशय नांहि।
षटरस विधि की सृष्टि में, नवरस कविता मांहि॥"

यों तो कवि प्रायः भिन्न भिन्न जाति के भिन्न भिन्न रसों के वक्ता हुए हैं, किन्तु कवि ख्याति से वीर-रसको यथोचित वर्णन कर तदनुसार ही आचरण करनेवाले जैसे चारण जाति के कवियों का उल्लेख मिलता है वैसा अन्य जाति के कवियों का पता नहीं चलता। चारण जाति के कवियों की इसके अतिरिक्त और भी विशेषता रही है कि इस जाति का पुरुष समाज तो सबका सब वीर रस का वक्ता और तदनुसार आचरण करता हुआ ही है, परन्तु स्त्रियें तक कवि और शक्तियें होती रही हैं।

ऐसे अनेकों उदाहरण उपस्थित हैं कि जब जब देश की स्वतंत्रता, धार्मिकता, और क्षत्रियों की मान-मर्यादा पर आक्रमण हुए तब तब चारण कवियों ने वीरतापूर्ण वाक्यों से क्षत्रियों को प्रोत्साहन देकर केवल युद्ध और संघर्ष को देखते ही

रहे हों सो नहीं प्रत्युत स्वयम् भी समरांगण में शत्रुओं से भिड़-कर वीर क्षत्रियों का हाथ बटाते हुए वीरगति को प्राप्त होते रहे। यही नहीं कभी कभी तो क्षत्रियों से भी आगे बढ़ कर आक्रमण कारियों से लोहा ले शत्रुओं के छक्के छुड़ा रणचंडी को रक्तधारा, शंकर को मुण्डमाला और पित्रों को रक्तपिन्ड चढ़ाया है और साथ ही निर्भयता एवम् निष्पक्षता युक्त चाहे राजा हो या रंक उसकी उचित अनुचित वीरता और कायरता एवम् गुण अवगुण की निस्संकोच आलोचना समालोचना कर प्रत्येक क्षत्रिय को मान एवं मर्यादाच्युत नहीं होने देने में सच्चेष्ट रहते आये हैं।

इसी कारण से क्षत्रिय समाज में चारण जाति के प्रति अधिक श्रद्धा, भक्ति और आदर है और साथही निम्नोक्त पद्यानुसार भावना भी।

"चारण तारण क्षत्रियां, भगता तारण राम।
वे अमरापुर लेचले, ये नवखंड राखे नाम॥"

—प्राचीन

"जोगो किणहीन जोग, सहजोगो कीनो सकव।
लूंठा चारण लोग, तारण कुल क्षत्रियाँ तणों॥"

—महाराजा मानसिंहजी, जोधपुर

"करो घणो कहे किशनसी, नृपा चारणानेह।
अमर मरयाने ये करे, दे सुन्दर जश देह॥"

—रावत किशनसिंहजी बिजोल्या

"चारण तारण क्षत्रियां, यह जग में विख्यात ।
सो जवान उरधारिके, इन चरणन में आत ॥"

—रावत जवानसिंहजी, कोठारिया

"अयश इन्द्रभयनाक, रहे लिये ताको शरण ।
यों डूंगर मयनाक, रतनासर चारण चरण ॥"

—डूंगरसिंह भाटी, मोही

इसी आदरणीय चारण जाति के सोदा बारहट कुल में ग्रन्थ कर्ता बारहट केसरीसिंहजी का मेवाडस्थ "सोन्याणा" ग्राम में जन्म हुआ है। आपका बड़ा ही सरल स्वभाव, साधारण रहन सहन और प्रेममय-व्यवहार है। पूर्ण परिचय बिना आप से मिलने वाला यह नहीं समझ सकता कि आप ऐसे कवि हैं। लेकिन जब वह आपकी रचना सुन लेता है तो मुग्ध हुए बिना नहीं रह सकता। वास्तव में आपकी रचना में रोचकता, सामयिकता, यथोचितता और प्रासादिकता का होना तो मानो नैसर्गिक है।

कहा जाता है सर्व प्रथम मेवाड़ में आपके पूर्वज बारूजी अपनी माता बखड़ीजी की आज्ञानुसार महाराणा हमीरसिंहजी के समय में ५०० घोड़े लेकर आये, उस समय महाराणा को घोड़ों की पूर्ण आवश्यकता थी। मगर समय की गति से तत्त्तण उनकी कीमत चुकाना सामर्थ्य से बाहिर था। उस परिस्थिति में बारूजी ने वह तमाम घोड़े इस शर्त पर कि गया हुआ राज वापिस मिल जाय तो उचित कीमत चुकादें अन्यथा कुछ नहीं, महाराणा के नज़र कर दिये। संयोगवश

हमीर को अपना राज्य वापिस मिल गया, तब घोड़ों की उचित कीमत के अतिरिक्त इस सेवा के उपलक्ष में महाराणा ने बारू को अपना आदरणीय "पोलपात" बनाकर यथेष्ट जीविका एवम् सम्मानादि से सम्मानित किया। इसका विस्तृत वृतान्त ग्रंथकर्ता ने स्वयम् पद्यमय किया है।

आपके वंश में निर्भीकता, वीरता, सरलता और स्पष्ट वादिता तो मानो वंश परम्परागत गुण है। इन्हीं गुणों की प्रधानता के कारण आपके पूर्वज नरुजी के समय में किशनगढ़ की कुमारी चहारुमतिने अपने को विधर्मी सम्राट् औरंगजेब के आक्रमण से बचा निजाश्रय में लेने की प्रार्थना महाराणा राज-सिंह के पास भेजी। उस पर महाराणा और मेवाड़ के सामन्त गणों में विचार विनिमय होकर यही स्थिर हुआ कि इस समय हमको औरंगजेब की प्रज्वलित क्रोधाग्नि में इन्धन नहीं बनना चाहिये, इतने ही में नरूजी भी आ सम्मिलित हुए, और यह विचार सुनकर एकदम आवेश में आ उन्होंने सब सामन्त-गण को फटकार कर महाराणा की इस कायरतापूर्ण नीति का पूर्णतया विरोध किया और साथ ही इस प्रकार एक प्रार्थी अबला कुमारी की रक्षा न कर युद्ध से मुंह मोड़ना क्षत्रियोचित कार्य नहीं होना कह कर महाराणा को किशनगढ़ पहुँच प्राणान्त तक उक्त कुमारी की रक्षा करने के लिये बाध्य किया। इसी पर महाराणा अपना पूर्व विचार बदल कर किशनगढ़ पहुँचा और बादशाह औरंगजेब को किशनगढ़ आते हुए आगरे के पास अपने सामन्तगण द्वारा रुकवा कर आप चहारुमति से पाणिग्रहण कर स्वस्थान को ले आया।

इसी प्रकार जब औरंगजेब उदयपुर पर चढ़कर आया और परिस्थिति के अनुसार महाराणा राजसिंह को उदयपुर खाली कर देने की योजना करनी पड़ी, उस समय किसी दरबारी ने नरूजी से कह दिया कि आप तो यहाँ के "पोलपात" हैं सो शायद ही दरवाजा छोड़ बाहिर चलें। बस इसी पर आप बड़ी पोल नामक दरवाजे पर डट गये और महाराणा के कहलाने पर भी दरवाजा नहीं छोड़ कर आखिर शत्रुओं से लोहा ले कुटुम्बादि के २२ आदमियों सहित वीरगति को प्राप्त हुए।

वर्त्तमान समयमें ग्रंथकर्ता के भ्रातृज ठा० केसरीसिंहजी बारहठ भी बड़े ही निर्भीक, स्पष्टवक्ता और उच्च कोटि के कवि हैं। आपकी रचना प्रायः बहुत ही मार्मिक, सामयिक तथा सारगर्भित होने के अतिरिक्त क्षत्रियों की प्राचीन ऐवम् अर्वाचीन कालीन स्थिति की परिचायक और पूर्व गौरव, निज कर्त्तव्य मानमर्यादा ऐवम् कुलाभिमान की स्मृति दिलाने वाली होती है। और कभी कभी चेतावनी के चूंगटिये नामादि शीर्षक से कतिपय पत्रों में निकली है और निकलती रहती है।

इस वंश में उपरोक्त गुणों के अतिरिक्त धर्म-परायणता और उदारता भी कम नहीं रही है। जसूजी ने मेवाड़ में १२ शिखरबन्द मन्दिर बनाकर उनके यथेष्ट जीविका की व्यवस्था करदी जो आज तक विद्यमान है। "जसूजी के" भ्राता "दौलतसिंह" ने हाड़ोती में थोनपुर के महिमारिया लक्ष्मीदास के यहां शादी के उपलक्ष में अपने याचक वृंद को एक लक्ष मुद्रा का दान दिया, इसी से आपके वंशज 'लाखवरीशा' की उपाधि से सम्बोधित किये जाते हैं।

उक्त परम्परा गत गुणानुसार ही हमारे कविवर ग्रन्थकर्त्ता ने इतिहास किम्वदन्तियों और प्रचलित पद्यावली के आधार पर इस ग्रन्थ 'प्रताप-चरित्र' की रचना में निर्भीकता और स्पष्टता को पूरा स्थान दिया है। यहां तक कि आपके कतिपय मित्रों ने व्यवहार दृष्टि से इस रचना के कतिपय शब्दों एवम् स्थलों को बदल देने की अनुमति दी किन्तु एक इतिहास लेखक के कर्तव्य एवम् सत्यता और स्पष्टता के नाते आपने स्वीकार नहीं किया।

ग्रन्थ में स्वतन्त्रता और धर्म परायणता के लिये महाराणा की असीम कष्ट सहिष्णुता, मेवाड़ के सामन्त गणों की स्वामि-भक्ति-युक्त वीरता और शूरता, महाराणी की पतिभक्ति तथा साहसिकता, एवं भामाशाह की त्याग-वृत्ति और देश-प्रियता, इसी प्रकार कंवर मानसिंह कछवाह की धर्मभीरुता और स्वार्थ-परता का यथावत स्पष्ट रूप से चित्र-चित्रण किया जाकर शिशोदिये एवं राठोड़ वंशीय बालिकाओं का ननद-भोजाई संवाद नाम से जो स्थल बांधा गया है उससे उस समय के राजपूतों ही को नहीं किन्तु बालिकाओं एवम् महिलाओं को भी कितना कुलाभिमान था उसका यथेष्ट दिग्दर्शन कराया गया है। यों तो महाराणा प्रताप की कृति और कीर्ति में अनेक कवियों के अनेक ग्रन्थ पद्यमय उपलब्ध हैं, लेकिन मौलिकता, सरलता,सुन्दरता, उत्कृष्टता, सामयिकता और एतिहासिकता का इस ग्रन्थ में अधिक मात्रा से समावेश हुआ है। इस विषय में विशेष लिखने की आवश्यकता नहीं। बारहटजी की रचना वास्तव में कैसी है यह

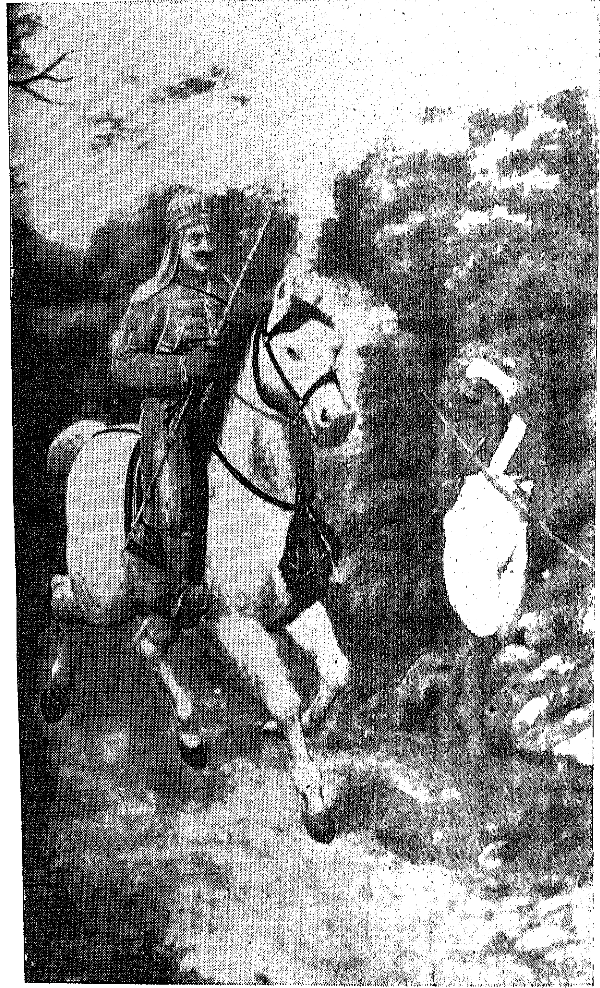
सुज्ञ एवम् मर्मज्ञ पाठक ग्रंथ को आद्योपान्त पठन कर स्वयं निश्चय कर लेंगे।

अन्त में यह हार्दिक कामना व्यक्त किये बिना नहीं रह सकता कि कविकुलाराध्य महाशक्ति श्री करनी हमारे कविवर बारहटजी को चिरायु कर सांसारिक विघ्नबाधाओं से बचाये रक्खे एवं पुनः ऐसी ही और वीर क्षत्रियों के कुल गौरव की गरिमामय गाथाएं पद्य-बद्ध कर यथा समय प्रकाशित करने की शक्ति प्रदान करे, जिससे वीररस प्रधान साहित्य के विशाल क्षेत्र में नवयुग का संचार होकर साहित्य-रसिकों को और अधिक लाभ एवं आनन्द मिल सके।

इत्यलम्

मोही, मेवाड़ }

कवि किंकर—
डूङ्गरसिंह भाटी



वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप.



# समर्पण



**मनहर**

पूरन पवित्र परताप, है चरित्र तेरो ।
पढिवे तें मेट देत संकट त्रिताप के ॥
मेरे जानिवे में राम नाम सो महान मंत्र ।
पाठ के करे तें हठि जात पुन्ज पाप के ॥
छत्रिन को मान अभिमान जाति हिन्दुन को ।
जपें फल दे हैं सम संजीवन जाप के ॥
आप ही की वस्तु तातें आप अधिकारी याके ।
रान श्री प्रताप नाथ समार्पित आप के ॥

**केसरीसिंह बारहठ**



# MAHARANA PRATAP.

*PRATAP—the light that blazed*
*In the pitch dark*
*Of Adharama;*

*PRATAP—the invincible sun*
*That dimmed Akbar's radiance:*

*PRATAP—the man of destiny*
*Who saved Hinduism:*

*I bow to thee*
*O prince of Warriors;*

**H. S. Mordia.**



वर्तमान मेदपाटेश्वर महाराजाधिराज महाराणाजी श्री १०८
श्री भूपालसिंहजी बहादुर जी. सी. एस. आई. के. सी. आई. ई.

# मनहर



ज्ञान वान आशन को, कृपा सिन्धु दासन को ।
मेदपाट सासन को, पूर्ण हक वारो है ॥
मुन्डन की माल वारो, तंबीरन खाल वारो ।
सुधाकर भाल वारो, देन सुख वारो है ॥
रवान वारो कनक चढान, वारो विजिया को ।
दुरगा को प्यारो, ध्वंस दच्छ मख वारो है ॥
रान भुवपाल प्रजा पाल के, दयाल सदा ।
च्यार मुख वारो, एक लिंग रखवारो है ॥



# विषय-सूची

॥ ॐ ॥

# प्रताप-चरित्र

## मंगलाचरण

दोहा

श्री लम्बोदर[1] सुघर सुर, बर दायक सुख धाम ।
ता सों पितु माता सहित, सविनय करों प्रनाम ॥१॥
अविनासी ओंकार अज, निरधारन आधार ।
ता मायापति ब्रह्म को, वन्दों बारम्बार ॥ २ ॥

सौरठा

श्री इकलिंग सहाय, रहत सदा महारान के ।
प्रनवों तेरे पाय, तू कर कृपा कृपायतन ॥३॥

दोहा

श्री वन्दो करनी[2] सकति मो भय हरनी मात।
असरन सरनी अम्बिका, जय करनी निज जात ॥४॥

---

१ गणेश २ शक्ति

वन्दो मैं गुरु पद विमल, रूपसिंह[1] गुनरास।
कविता सीख्यो करन कछु, उन तैं केसवदास॥५॥
प्रभु कृपालु गनइसपुरि, सेवक छोगालाल।
डिंगल भाषा दोलजी—मोतीसर[2] गुनमाल॥६॥
वन्दों मैं उन नरन कों, जिन कर मेरी लाज।
स्खलन[3] सदा करिये छमा, मेरे खल महाराज॥७॥
नहिं वन्दों सज्जन नरन, वे तो परमानन्द।
योंही सहज सुभाव सों, करि हैं कृपा कविन्द॥८॥
चारण शिक्षालय रच्यो, हो श्यामल कविइन्द।
कृपा रान सज्जन करि-कृ, उत्तम रच्यो प्रबन्ध॥६॥
यहि शिक्षालय महँ रह्यो, कछु दिन केसवदास।
जहाँ आय नहिं जात हो, कोउ सिसु होइ निरास॥१०॥
उदय नगर उन दिनन महँ, सुन्दर कविन समाज।
सुकविन सर्व सिरोमनी, हो स्यामल कविराज॥११॥
किसनसिंह कवि बारहठ, अरु उज्वल जयकर्न।
पुनि स्वामी गनईसपुरि, भूषन चारन वर्न॥१२॥
मोड़सिंह महियार हो, अरु आसिया जवान।
इन आदिक मेवार मनु, हुती कविन की खान॥१३॥

---

१ ग्रंथ कर्त्ता के बड़े भाई २ जाति-विशेष ३ भूल

पुनि बखतावर राव पटु, ज्ञाता रस सिंगार ।
तिनकी कविता माधुरी, और कुशल बिवहार ॥१४॥
बारठ रामप्रताप को, अति मो कों आल्हाद ।
सीख्यो उत्तम व्याकरन, कविता गुन प्रासाद ॥१५॥
पुनि कबि कोविद उदयपुर, विप्रन बीच अनेक।
नय गुन वारे चतुर नर, कायस्थन महँ केक ॥१६॥
महाजनन में हू कितैक, सुघर अमात्य[1] सुहात ।
प्रज्ञा बल पटुता बिहद, जिनकी कही न जात ॥१७॥
उमराव[2] रु सरदार अति, बीर धीर कवि बुद्ध ।
सस्त्र सास्त्र साहित्य में, सिच्छित बहु मति सुद्ध ॥१८॥
यावदार्य कुल कमल हो, रवि सज्जन महारान।
जिन के गुण को करि सकों, मैं नहि नैक बखान ॥१६॥
कुल गौरव सों मुलक सों, साहित्य संगीत।
गुनी जनन भट गनन सों, पूरन बाढी प्रीत ॥२०॥
दयानन्द गनईसपुरि, स्वामी उभय सुजान ।
संगति इनकी लहि भयो, सज्जन सज्जन रान ॥२१॥
अल्प दिनन में प्रभु कियो, सब विधि राज-सुधार ।
स्वर्ग सिधारे नृप सजन, भुज फतमल धरि भार ॥२२॥

---

१ प्रधान मंत्री । २ सरदार सोलह बत्तीस ।

॥ मनहर ॥

कीरति बढी रु राज लच्छमी बढन लागी,
अरिन हिय में ताप ताहि की बढी रही।
इज्ज़त अमित बढ़ी सुभट कबिन्दन की,
वंस परिपाटी सम बीरता बढ़ी रही।
राजन में प्रीति निज देस में प्रजा हू बढी,
बढी छात्र सिच्छा भृत्य सभ्यता बढी रही।
जाके राज-सासन में सबही बढ़ी पै हाय,
एक रान सज्जन की ऊमर बढ़ी नहीं ॥२३॥

दोहा

भूप भयो मेवार पति, महाराना फतमाल।
समय नृपन राखन सरम, आरज धरम उजाल ॥२४॥
चलन हारफतमल चतुर, परिपाटी प्राचीन।
राज रीत रुचि वीर-रस, धन धन धरम धुरीन ॥२५॥

मनहर

कीरति को प्रकट खजाना सब खूटि जातो,
खत्री-वट खत[1] को अधर्म कीट खावतो।
घटतो बनिज आदि सनातन धर्म जू को,

---

१ बही नामा



महाराणा प्रताप के सुयोग्य वंशधर वैकुँठ वासी महाराणा श्री फतहसिंहजी बहादुर.

स्वदेसी लिबास धुर[1] खाता को लिखावतो ?।
कै को पुराना साह[2] राज रीति पैठ देतो ?,
बीर-बाना ज़ोर-हुन्डो[3] कौन सिकरावतो ?।
वर्तमान काल मे न लैतो फतमाल जन्म,
(तो) राजस-दुकान को दिवालो कढि जावतो॥२६॥

दोहा

सरल चित्त धन सेवकन, दानी सुहृद दयाल।
सदाचार राखत सदा, महाराना भुवपाल ॥२७॥

मनहर

डोलन लगी ही यह समय समुद्र बीच,
अधिक पुरानी ताते और तन छीनी है।
हिम्मत को हार बर्दवान हू उतार लिये,
फूट-कूट चुम्बक तैं महा भय भीनी है।
ऐसी बेर हू में नाथ केवट कुसल होइ,
प्रभु निरविघ्नता सों पार पार दीनी है।
पौन अनुकूल महारान भुवपाल आज,
छत्रिन समाज की जहाज़ तार दीनी है ॥२८॥

---

१ आसामी २ खानदानी सेठ ३ पहुँचे तुरत की हुंडी

सवैया

छत्रि समाज अस्वस्थ भयो पुनि,
स्वास घट्यो अरु आस बिछूटी ।
छीन भयो तन हीन भयो बल,
तीन हूँ नारि त्वरा लहि तूटी ।
पूरन रोग असाध्य भये पर,
दे जिय दान रु कीरति लूटी ।
वैद्य धनंतरी व्है भुवपाल ने,
स्कूल दई है सँजीवनि बूटी ॥२९॥

मनहर

बरुद विसाल हिन्दु भान के धरन हार,
वंस उजवाल निकलंक कीर्ति लहिये ।
आरियन धरम बचावने को मोटी ढाल,
दुष्टन पै तेज करवाल जिम बहिये ।
वर्तमान काल को पिछान पुनि नीति पाल,
रान फतमाल के पवित्र गुन गहिये ।
दीनन दयाल दीप मालिका करोरन लौं,
रान भुवपाल चिर आयु सदा रहिये ॥३०॥

———

# कवि कामना

मनहर

राजी होय दासन को देनो जो चहे तो नाथ,
"केसव" कहत जरा मेरी ओर ध्यान दें।
ज्ञान औ विज्ञान दे रु पूरो खानपान दे रु,
दीनानाथ! आयु सकुटुम्ब बलवान दें।
राज सनमान दे रु कवि की ज़बान दे रु,
और सब झंझट[1] को मेरे जान जान दें।
देस जो दिये तो दै पवित्र मेदपाट देस,
मालिक जो दै तो सबही को महारान दै॥३१॥

घनाक्षरी

ाहन करे तो चित्रकूट[2] गढ ही को कर,
वाहन करे तो हय-साला रान खासी कर।
च्छ जो करे तो गोरधन[3] सु विलास वारो,
मच्छ जो करे तो उदैसागर* विलासी कर।

---

१ झगड़ा २ चित्तौड़गढ़ ३ स्थान विशेष जहाँ गौएँ रहती हैं
* उदयसागर वह तालाब है जहाँ महाराणा व मानसिंह का वार्तालाप हुआ था।

धार धार अंजस[1] अपार गुहिलोत[2] तन को,
बार-बार बिचरों मैं भूमि वीर[3] रासी पर।
ऐरे करतार! तौ सों पूरन विनय यही,
चारन करै तो मेदपाट[4] को निवासी कर ॥३२॥

दोहा

हो इक घटना सत्य को, फोटो अँग प्रत्यंग।
तापर केसवदास ने, कछुक चढायो रंग ॥३३॥

पहिले कहि प्रभुता पता, लाभ जनम को लेहुं।
मैं मम तुच्छ मनुष्य को, पीछे परिचय देहुं ॥३४॥

पत्ता के जस कों पढत, पंडित लहै न पार।
सो कैसे कहि सकत हों, मैं मति मंद गँवार ॥३५॥

राम नाम ऋषिवर रटे, पण्डित विविध प्रकार।
तातें मूढन रटन कों, कहा नहीं अधिकार ॥३६॥

कोउ कह कविता क्यों करी, बिनु तुम काव्य विवेक।
रह्यो गयो नहिं मोहि तें, सो बातन की एक ॥३७॥

कहूं ठौर इतिहास की, कहूं ठौर किंवदन्ति[5]।
कहूं पुराने काव्य की, केसव सरन लहन्त ॥३८॥

---

१ स्वाभिमान २ महाराणा का शीशोद वंश ३ वीर पुरुषों का समूह ४ मेवाड़ ५ दन्त कथा

# वंश-महिमा

मनहर

हरीदास चारन को मेदपाट देस दीनो,
सांगा की वदान्यता को करों का बखान मैं।
बारहठ कर्न[1] अगवानी जगतेस कीनी,
साका[2] रतनेस जुको सोर सुर थान में।
पिता भक्त चूंडे[3] राज त्यागन प्रतिज्ञा करी,
तैसी ही निभाई बीर कर्म मन बान में।
रान पुरखान के समान को जहान आन,
दान में रु मान में कृपान में ज़बान में ॥३९॥

दोहा

साह सिकन्दर आदि लै, गोरी जुलकर नैन[4]।
सुभट सबल नोसेरवां, आए भारत ऐन ॥४०॥
उन लगि तैं अरु आज लौं, जूंझि परे जवनीस[5]।
नहि कोऊ आगे नयो, सीसोदन ने सीस ॥४१॥

---

१ मुंदियाड़ बारहठजी के पूर्वज २ सैनिक बल घट जाने पर फाटक खोलकर शत्रु सैन्य में कूद पड़ने आदि का अवसर ३ महाराणा लाखा के बड़े पुत्र ४ एक बादशाह का नाम ५ मुसलमान बादशाह

# चरित्र नायक का जन्म

## दोहा

इहि कुल में पातल अधिप, जनमे करुनागार ।
कीरति तिनकी कहत हों, अपनी मति अनुसार ॥४२॥

पन्द्रह सो सत्तानवे, जैष्ठ सुक्ल सुभ तीज ।
जन्म भयो परताप को, वन्दित विधु ज्यों बीज ॥४३॥

## मनहर

भारत उथान को रु साह अपमान को रु,
मान सरमान श्री गनेस क्रम-क्रम भो ॥
सीसोदन यस कौ रु हिन्दुन के हर्ष को रु,
महावीर-रस को विकास एकदम भो ।
ओज इतिहास स्वर्न अच्छर लिखान को रु,
मित्रन प्रमोद यवनान[1] भौन गमभो ।
महावीर रान परताप के जनम साथ,
इतने पदारथ को जग में जनम भो ॥४४॥

---

१ मुसलमानों के घरों में ।

# राज्यारोहण

## दोहा

दयसिंह सासन समय, तुरकन लिय चित्तौर ।
ेन दिन बाढत प्रबल दल, जवनन को अति ज़ोर ॥४५॥
ाल पाय दिव गमन किय, उदयसिंह नरपाल ।
ठि गयो गद्दी तबै, मन्द बुद्धि जगमाल ॥४६॥
ाना को जगमाल हो, नवमो राज कुमार ।
ाने अनुचित उचित को, कीनो कछु न विचार ॥४७॥
ानी भटियानी पर सु, रही कृपा महारान ।
ा बल तैं जगमाल तहँ, बन बैठो वह रान ॥४८॥
ाह क्रिया नृप उदय हित, सबहि गए सरदार ।
ामसिंह कहि सगर[1] सों, नृप ग्वालेर निहार ॥४९॥
आवत नज़र न है यहां, कहां कँवर जगमाल ।
सगर कही तुम नहिं सुनी, वह तो भये नृपाल ॥५०॥
अक्खिय अक्खयराज इम, सोनगरा सरदार ।
अग्रज बञ्चित नृप अनुज, यह कैसो व्यवहार? ॥५१॥
सुनियत यह सोनीगरा, गोडवार जागीर ।

---

१ प्रताप का छोटा भाई

महाराना परताप को, हो मामा रन धीर ॥५२॥
सांगा[1] अरु किसनेस[2] सों, अक्खिय अक्खय राज।
व्है है किम तुमरे छतैं, ऐसो अनुचित काज ॥५३॥
बिनु सम्मति चुण्डावतन, कैसे बनि है काम।
बनि है तउ रहि जाय है, वह तो कागज[3] खाम ॥५४॥
यह हू तो नहिं है उचित, ग्रह कलेस दुख ग्राम[4]।
अकबर अरि उत मांग[5] पर, घूमत आठों जाम ॥५५॥
कढिगो गढ हम करन तैं, और मुलक नहिं आस।
ऐसी गति फिर होय तो, क्यों नहि सेष विनास ॥५६॥
चूंडावत राठौर भट, और झल्ल चहुवान।
सबन कही जग अनुसरे, राज रीति घर रान ॥५७॥
जब लग जोधा रान के, हम ठाढे अनुरत्त।
तिन घर कैसे होइ है, ऐसी गति अनुचित्त ॥५८॥
करिके नृप उत्तर क्रिया, आये भट उमराव।
जहां गए बैठो जगा[6], मन महँ जोम[7] अमाव ॥५९॥
इन कहि गद्दी के अधिप, है प्रभु रान प्रताप।
बैठहु भट जगमाल तुम, अपनी बैठक आप ॥६०॥
सांगा कृष्णा चुण्ड कुल, यों कहि के ढिग आय।
पकरि बाँह जगमाल की, आखिर दियो उठाय ॥६१॥

---

१ देवगढ वालों का पूर्वज २ सलुम्बर वालों का पूर्वज ३ कच्चा सनद ४ समूह ५ शिर ६ जगमाल ७ घमंड

षट्पदी

जेहि सुपुत्र भट चुण्ड पितु, भक्ति दृढ कीन्ही।
जेहि सुपुत्र भट चुण्ड, राज गद्दी तजि दीन्ही।
जेहि सुपुत्र भट चुंड[1], पाट सेवा गहि लीन्ही।
जेहि सुपुत्र भट चुंड, मही को चकित कीनी।
नि बली राव रन मल्ल[2] को, खलन कीन खल खंड के।
गा रु सुभट वर किसनसी, यह प्रपौत्र वहि चुण्ड के ६२

दोहा

ुरत गयो जगमाल तब, अकबर पास रिसाहि।
भेद नीति कर साह भल, दियउ ज्हाज़पुर ताहि॥६३॥
कछुक काल पीछे कहत, वह जगमाल कुमार।
मर्‍यो सिरोही समर महँ, अपनो नाम उबार॥६४॥
हिन्दुन भाग्य प्रताप तैं, भो प्रताप महारान।
यवन मनोरथ बिफल भो, भारत को उत्थान॥६५॥
अरु गद्दी उत्सव अधिप, कुम्भलगढ महँ कीन।
मित्रन को मन मुदित भो, खल पुरुषन को खीन॥६६॥
नहीं अरथ[3] सेना नहीं, नहीं मुलक कर आप।
विनु सम्पति के राज्य को, मालिक भयो प्रताप॥६७॥

---

१ सलूंबर और देवगढ वालों के मूल पुरुष २ मंडोवर के राव रिड़मल ३ धन

धन बल ठाहर[1] आत्म बल, गढ बल ठां गिरि आस।
सैना बल ठां हृदय बल, पातल नृप के पास ॥६८॥
पूरन खुरली[2] बीच पटु[3], बड़े बीर बलवान।
लिय जयमल राठौर तैं, सैनिक सिच्छा रान ॥६९॥

सौरठा

प्रभु कविता गुन पाय, ओज बढ्यो दिन दिन अमित,
जानहु व्यर्थ न जाय, केशव लाभ कवित्त को ॥७०॥



१ ठौर २ शस्त्र विद्या ३ चतुर

# शक्तिसिंह की वैमनस्यता

## दोहा

श्रीमन उदय महीप के, पुत्र प्रसिद्ध पचीस ।
बड़े बहादुर अरु बली, अमित सभी अवनीस ॥७१॥
पातल नाम प्रभात को, अग्रज तिन में आप ।
जिन को जस सब जगत में, अजहूं होत अलाप[1] ॥७२॥
लघु भ्राता तिन को लखहु, बीर सक्त बलवण्ड[2] ।
पाइ तरुन पन सुदृढ पन, अति ही भयो उदण्ड ॥७३॥
अनुज सहित नृप दिवस इक, आप गए आखेट ।
रहे दूर कछु राह तैं, भइ बराह तै भेट ॥ ७४ ॥
सभ्यो लक्ष्य सुभटन दुहुन, तीर धनुष तैं तान ॥
को जाने को बान तैं, सूकर तज दिय प्रान ॥ ७५ ॥
कही सक्त हम वध करिय, कही रान हम कीन ।
व्यर्थ ही बढ्यो विवाद बहु, ईस्वर गति आधीन ॥७६॥
चढ्यो रौद्र-रस दुहुंन चख, काढी दुहुंन कृपान ।
इक इक प्रति जूँझन भए, आहव महँ अगवान ॥७७॥
देखि पुरोहित द्वंद को, अरे खरे बिच आय ।
गुरु धर्म दृढ पन गह्यो, दोउन सपथ दिवाय ॥७८॥

---

१ गाया जाता है २ उग्र बल शाली

दोऊ रुकत न देखिके, करि उर घाव कटार ।
नारायन[1] सुरपुर गए, अपनो नाम उबार ॥ ७६ ॥
कैते कारन लहि अउर, बान्धव बढ्यो विरोध ।
मेटत भावी को मनुज ?, समझहु सबहि सुबोध ॥ ८० ॥
सीसोदा सगतेस ने, मुलक तज्यो मेवार ।
दिल्ली मग जावत दुखित, विधि-विधि करत विचार ॥ ८१ ॥
क्यों न बिगारों देस को, ध्रुव लीनी हम धार ।
मैं हूं नहिं मेवार को, मेरी नहिं मेवार ॥ ८२ ॥
क्यों नहिं झल्लहुँ, खग कहो ? घल्लहुँ क्यों नहिं घात ?
वे नहिं मेरे भ्रात हैं, मैं नहिं उनको भ्रात ॥ ८३ ॥
उलटन मैं फिर आय हौं, कैतो सहों कलेस ।
मातृ भूमि मेवार ! है अब तो को आदेस ॥ ८४ ॥
दिल्ली पहुँच्यो जाय द्रुत, सगतसिंह स सोद ।
लीनो आम[2] बुलाय तब, मानि साह मन मोद ॥ ८५ ॥
तुरकन को दिल्ली तख़्त, सेवत है सगतेस ।
बहु आदर वैतन बहुत, पै कछु हृदय कलेस ॥ ८६ ॥
राना कीका[3] को अनुज, यह सब जानत भेद ।
सोची इमि पतसाह ने, या तैं बहुत उमेद ॥ ८७ ॥

---

१ पुरोहितजी का नाम २ राज सभा ३ बादशाह राना प्रताप को कीका नाम से संबोधन करता था क्योंकि प्रताप की ऊमर बादशाह से कम थी ।

# अकबर की नीति

## दोहा

इत अकबर वैभव बढ्यो, पूरन सर्व प्रकार ।
दीखत नृप दसकंध सो, दिल्ली को दरबार ॥ ८८ ॥
मन अकबर कीनो मतो, करि हैं खुदा करीम ।
भारत में निज बल भरौं, निस्चल तुरकन नीम ॥८९॥
नहिं हिन्दुन तैं तोरनी, रखनी उनतैं प्रीति ।
छत्रिन तैं संबन्ध की, रही हुमायूं नीति ॥ ९० ॥
तातैं भारत काफ़िरन, सनै सनै समुझाय ।
करि ले हौं आधीन कुल, बहु बिसवास बढ़ाय ॥९१॥
इमि गुनि के अकबर यवन, कीनो उचित उपाय ।
भारत के बहु भूपती, परे आन तब पाय ॥९२ ॥
दीन इलाही नाम को, इक मत थप्पिय साह ।
दुहुं दीनन एकत करन, अकबर को अति चाह ॥९३॥



## बादशाह की कूट नीति

वैष्णवन बीच बैठि कबहूं विनोद करें,
माला धारिलेत कबौं वृन्दा[1] महामाई की।
कबौ पातसाह गउरोचन तिलक करें,
प्रभुता बढ़ावें कबौ जैनन समाई[2] की।
बैठि दरबार विभचार की मनाई करें,
परख करात परतीय सरसाई की।
सरब जिहान मतिमान तैं ठगाय गई,
ठाह पारी एक रान चतुर ठगाई की ॥६४॥

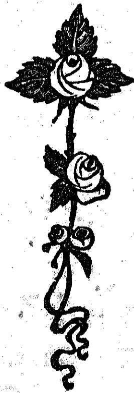
दोहा

अकबर को व्यवहार लखि, हिय दुर्बल मतिहीन।
कैतें भूपति साह के, आइ भए आधीन ॥६५॥
कितै लोभ बस व्है कुमति, भीरु कितै भयभीन।
भारत नृप बहु साह के, आइ भए आधीन ॥६६॥
इमि अकबर नय निपुन अति, चली भेद गति चाल।
लिये फोरि ललचाई के, भारत के नरपाल ॥६७॥
पलट्यो ऊदल जोधपुर, अरु भगवँत आमेर।
बूँदी जेसलमेर बलि, नरपति बीकानेर ॥६८॥

---

१ तुलसी, २ जैन धर्म ध्यान

दतिया झांसी नृप दुमति, नरवर क्लीव[1] नृपाल।
सीरोही आदिक सबहि, पलटि गये भुविपाल ॥९९॥
इनकी कहा पातल अनुज, सगर और जगमाल।
पामर एहू पलटि गे, कहा कहौं वहि काल ॥१००॥
धर्यो नृपन गनिका धरम, परे अकब्बर पौर[2]।
चंद्रसेन इक भट चतुर रह्यो मुररि रट्ठौर ॥१०१॥



१ नामर्द, २ दरवाजा

# राठौड़ चन्द्रसेन की स्वाधीनता

## मनहर

केसव कहत वहिबेर के महीपन में,
याकी दृढ़ टेक एक बार बार मानौं मैं।
वंस उजवारो रजपूती रखवारो सदा,
छात्र धर्म प्यारो नृप पूरन प्रमानौं मैं।
सुहृद स्वतंत्रता को द्रोही परतंत्रता को,
जवन-कुमंत्रता[1] को बाधक हो जानौं मैं।
पातल को सुघर संबन्धी होय तैसो बीर,
कीरति पवित्र चन्द्रसेन की बखानौं मैं॥१०२॥

## दोहा

प्रीति करी परताप सों, पातसाह बल पेल।
भयो हतो पै मिटि गयो, नग कंचन को मेल॥१०३॥
प्रभु इच्छा तैं यह सुपह, मरिगो भटन कुमंत्र।
आखिर दम तक अधिपती, तोऊ रह्यो स्वतंत्र॥१०४॥

---

१ खोटी सलाह

# महाराना के हृदय के दर्शन

दोहा

नहीं द्वेस इसलामि[1] तैं, है नहिं रहे विदेस[2] ।
यवन आततार्इ[3] भए, तातैं रोष विसेस ॥१०५॥



१ मुसलमानों से, २ विदेशियों से, ३ जलमी

## प्रताप-प्रतिज्ञा

दोहा

सुघर रान सबही सुन्यो, और नृपन आचार।
पराधीन भूपन दिए, बार बार धिक्कार ॥१०६॥
अरि गन तैं डरि हौं नहीं, करिहौं नहीं कुकर्म।
पग अकबर परिहौं नहीं, धरिहौंनहीं विधर्म ॥१०७॥

मनहर

सारीरिक सक्ति घटे प्रान के पयान समैं,
तदपि घटाय हौं न मैं तो मनुसाई[1] को।
कदाचित स्वास बढ़ि जाय अंतकाल बेर,
तदपि बढाय हौं न तुरक बड़ाई को।
वृद्धता लिए तै झुकि जाय हैं सरीर तोहू,
तनिक झुकाय हौं न सीस आततार्ई[2] को।
प्रानप्रिय परिजन को भूलि यदि जैहैं तोहू,
भूलि हैं न पत्ता कबौ भारत भलाई को ॥१०८॥

"

हिन्दुअन राज्य रह्यो हिन्द है हमारो देस,
तुर्कन को आधिपत्य का बिधि सहौंगो मैं ?

---

१ आदमियत २ आततार्ई ( जुल्मी )

देखि देखि दुर्हृदन हृदय दहौं गो कैसे ?
वंस परिपाटी पर कैसे ना बहौं गो मैं।
कैसे मैं विधर्मिन तैं दया की चहौं गो भिच्छा,
तुरुष्कन ही पै तेग कैसे ना गहौं गो मैं।
तुर्क के कृपाम्बु[1] महँ मीन ना रहौं गो बनि,
दीन ना रहौं गो पराधीन ना रहौं गो मैं ॥१०९॥

"

पातल प्रतिज्ञा जबै हिन्दुअन कान लागी,
रटन ज़बान लागी सबै वाह वाह की।
उतरन लागी कान्ति पराधीन भूपन की,
मुख तैं कढन लागी ध्वनी आह आह की।
धरकन लागी छतियान मुगलानन की,
फरकन लागी अँखियान दुख दाह की।
धर्म अनुरागी होन रान की खबर लागी,
पलक[2] न लागी फेर वैसी पातसाह की ॥११०॥

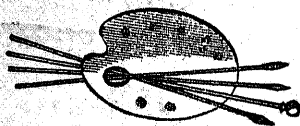
---

१ कृपाम्बु ( कृपा का जल ) २ सुख की निद्रा न आना

# अकबर की अन्तर्वेदना

## दोहा

अकबर सुनि सुनि खबर यह, खिन खिन है मन खीन।
कहहु खुदा कैसे करौं?, अब पातल आधीन॥१११॥
इनको बिनु जीते अधिप, जीते जिते अजीत।
हाय! गमाये व्यर्थ हम, गाये जै सब गीत॥११२॥
दिन दिन बाढ़त दुसह दुख, तन अकबर संताप[1]।
आठ पहर चवसठ घरी, सोचत रहि यत आप॥११३॥



१ कष्ट

# गुजरात पर शाही सैन्य

दोहा

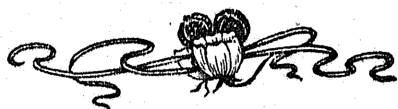
तिन दिन गुज्जर धर हि तैं, खबर पहूँची आन।
यहां भयो विद्रोह अति, प्रभु! तुम करहु पयान ॥११४॥

सौरठा

सुनत चढ्यो पतसाह, बीरन चित रन कहँ बढ्यो।
हिन्दू तुरक सिपाह, भारत के हाजिर भए ॥११५॥

दोहा

भीम युद्ध गुज्जर भयो, जीत गयो पतसाह।
छिती¹ नयो जस फिर छयो, अकबर लयो उछाह॥११६॥



¹ पृथ्वी

# मानसिंह और बादशाह का परामर्श

दोहा

दिल्ली पति नित तिन दिनन, बैठत आम[1] बनाय।
भारत के हिन्दू तुरक, प्रनमि पलोटत पाय ॥११७॥

मानसिंह—

इक दिन अकबर साह सौं, कूर्म[2] अर्ज़ इमि कीन।
भारत के सब भू-पती, अब हज़रत आधीन ॥११८॥

बादशाह—

कहत साह ऐसी कुँवर, अब लग तो न लखाय।
व्यर्थ प्रसंसा करत हो, बहु बिधि बात बनाय ॥११९॥

सवैया

हम आब हयात[3] पियो न कबौ,
जग के जल स्वच्छ पिए न पिए।
पुनि पारस हात लगो न यदी,
मनि मानिक पुञ्ज लिए न लिए।
लखिये ! खगराजन[4] ज़ोर भयो,
सुक[5]-सारिका[6] बंध दिए न दिए।

---

१ राज्यसभा २ कछवाहा (मानसिंह) ३ अमृत ४ गरुड़ ५ तोता ६ मैना

र एक पता महारान बिना,
सब भूप अधीन किए न किए ॥१२०॥

नसिंह—
यों ऐसी तुम कहत हो, कहिय मान कछवाह।
पत्ता महारान को, चरनन लाऊँ साह ॥१२१॥

दशाह—
ाह कहिय पुरुषार्थ तैं, कहहु असंभव कौन?
राना कुल आज लौं, किहि के ज़ोर भयो न ॥१२२॥

ानसिंह—
हत मान उद्योग तैं, प्रभु पूरत हैं आस।
जेमि भेज्यो पाताल बलि, अरु पांडव बनवास॥१२३॥

ादशाह—
ेरो मत भारत महीं, करौं एक दुहुँ दीन।
ाना बाधक व्है रह्यो, सो किमि होय अधीन?॥१२४॥

ानसिंह—
कृष्ण कियो सब कौरवन, निज प्रज्ञा बल नास।
कर्म करन में जे कुसल, ते नहिं होत निरास॥१२५॥

बादशाह—
राना कीका व्है रह्यो, धर पर धरम धुरीन।
कैसे करि हौं ताहि को, कुँवर आत्मबल हीन?॥१२६॥

मानसिंह—

साम दाम अरु भेद तैं, साधहुँ काम सुभाय।
माने नहिं महारान तो, करि हौं दण्ड उपाय ॥१२७॥

बादशाह—

कांटे थे जो कढि गए, मेरे तन के माहिं।
इक कंटक सों मोहि को, निद्रा आवत नाहिं ॥१२८॥

मानसिंह—

अटक कटक लौं आप को, पुस्कल राज्य प्रसार।
सो इक नृप हित करत क्यों, हज़रत! सोक अपार॥१२९

बादशाह—

राना को गहि लाइबो, है नहिं सहज कुमार!
पै कृत कारज होन कछु, तुम पर दारमदार ॥१३०॥

मानसिंह—

माने नहिं महारान तो, कही मूँछ गहि मान।
गहि आनौं गहलोत को, कंठन डारि कमान ॥१३१॥

बादशाह—

कौरव दल मँह ज्यों करन, पांडव महँ पाराथ।
मान हमारे तुम मरद, हो भट दच्छन हाथ ॥१३२॥
खेटा[1] करहू खलन सौं, भेटा कर लै भीर।
मन हेटा[2] करहु न मरद, बेटा! तू है बीर ॥१३३॥

---

१ लड़ाई झगड़ा २ नीचा

वे—

हुरि अहमदाबाद तैं, कीनी कुँवर सलाम।
दिय साह तव गर बँधी, अबै लाज इसलाम ॥१३४॥

थमहि मान कुमार को, सेनप कीनो साह।
ाबल अरु बंगाल की, बिजय करी खग बाह ॥१३५॥

वि लोकन को इन दियउ, पुनि खट कोटि पसाव।
रु उन्नति आमेर की, कूरम[1] करी अमाव ॥१३६॥

ब विधि ही सौं हो सुघर, भारत दैन भरोस।
ै यवनन आधीन भो, पूरव करमन दोस ॥१३७॥

राज्य बढावन साह को, अरु आमेर[2] सुधार।
पुनि जस रान प्रताप को, कारन[3] मान कुमार ॥१३८॥

---

१ कछवाहा ( मानसिंह ) २ जयपुर की पहले की राजधानी ३ हेतु

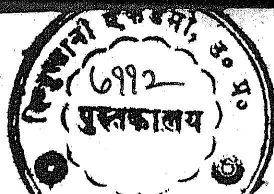
# मानसिंह का आगमन

दोहा

द्रुतहिं चढिय मेवार दिस, मान बढिय मनमोद।
आवत बिनु आमंत्रन हि, सुनी रान सीसोद ॥१३९॥
कूरम मान कुमार के, चित्त बढी जय चाह।
आय अहमदाबाद तैं, डूंगरपुर की राह ॥१४०॥
किहि कारन आवत कुँवर, सो बहु समुझि सकेन।
कुम्भलगढ तैं कैलपुर, आय उदयपुर ऐन[1] ॥१४१॥
इनकी पहुनाइ यहां, नृप तब करी सनेम।
व्यञ्जन जैतें बनि परे, परुसाये युत प्रेम ॥१४२॥
कहनो कूरम कँवर को, रंच न सहनो रान।
मान न रहनो मान को, यह भावी बलवान ॥१४३॥
कुम्भकर्न राना करी, आमेर हि आधीन।
चउ पीढी लग रान की, कुर्म दासता कीन ॥१४४॥
उदयसिंह सासन समय, कुर्म भारमल खास।
पलटि भयो चित्तौर तैं, दिल्लीपति को दास ॥१४५॥
ओरहु बहु दबि के अनल, रही हृदय महारान।
समय पाय प्रकटी सबै, समुझहु सर्व सुजान ॥१४६॥

---

१ घर






ऊपर [illegible] समुद्र के, भेट भई दुहुँ भूप।
दोउ जन बातन में दिपहिं, जैसे छाया धूप ॥१४७॥
मन दुहुँअन के नहीं मिले, प्रकट दिखावत प्रीत।
मिले तऊ दोउ नृप कुँवर, जैसे राजन रीत ॥१४८॥
कुसल प्रस्न दोउन किए, दोउन प्रेम दिखाय।
परिषद विच पातल पति, आप विराजे आय ॥१४९॥
कहन लगे कूरम कुँवर, इत उत बात चलाय।
अपने आगम को यहां, सब कारन समुझाय ॥१५०॥

---

# श्री प्रताप मान सम्वाद

मान—

मनहर

कहत कुमार मान सुनिये प्रताप रान,
गुज्जर[1] के युद्ध में उदग्ग खग्ग खनकी।
ईस्वर कृपा सौं पातसाह की विजय भई,
सुभट समेत सीख लीनी मैं घरन की।
जावत अमेर मम उर तैं तरंग कढी,
मेदपाट आवन उमंग बढी मन की।
सेष चमकात चतुरंगिनी उधर चढी,
मेरे हिय इच्छा दृढी आप सौं मिलन की ॥१५१॥

प्रताप—

,,

यहां कहां सुन्दर विसाल वे दिवानखाने ?,
उदय तलाव तीर साधारन झोंपरी।
इहां राज राजन के योग्य खान पान कहां ?,
माल[2] मकई की खाद्य जिनस रहै धरी।
इहां बहु मूल्य गल-गलम गलीचे कहां ?,
इहां तो बिछावन को नीठ ही मिली दरी।
कण्टक पहार झार कष्ट के अगार बीच,
कूरम कुमार यहां आयके कृपा करी ॥१५२॥

---

१ गुजरात २ धान्य विशेष

"

मान—

मेरे गर परयो साही सैना को अपार भार,
कार्यक्रम ही सौं अवकास नहि पाऊँ मैं।
कबैं कामरूप[1] देस दच्छिन चढ़ाई कबैं,
काबुल कबैंक मुलतान पर जाऊँ मैं।
दास को तो ऐसे चिरवास है न एकठोर,
मित्रन सौं मिलन निरास ही रहाऊ मैं।
माननीय स्थान यह रावरो उदयपुर,
आप सिर मौर हो यहाँ पै क्यों न आऊँ मैं ॥१५३॥

"

प्रताप—

देस के सिवाय मेरो गमनागमन है न,
येही मुलतान येही काबुल की घर है।
स्वामी है न एकलिंगनाथ के सिवाय सीस,
ताकी पद सेवा भार निसि औ अहर[2] रहै।
देस की स्वतंत्र चाहना के सिवा काम नही,
धर्म के सिवाय और काहू को न डर है।
आवै या न आवै तोहू कूरम[3] हमारे आप,
रान कहे यहां तो तुमारो मान! घर है ॥१५४॥

---

१ बङ्गाल २ दिन ३ कछवाह

,,

मान—

रावरे हितू हैं सदा बाक्य मन कर्मना तें,
तातें मन मेरो कहिबे को अभिलाख्यो है।
कहत बिचारे कोऊ मानत न ताकी एक,
सारे मित्र मण्डल को आप ठेल[1] राख्यो है।
लाभ अरु हानि को बिचार मैं न लावत हों,
ऐसो हट नाहक ही कैसे झेल राख्यो है।
महाराज ज्ञानी ह्वै अज्ञानी की-सी बात करो,
केवल स्वतंत्रता मे कहा मेल राख्यो है ॥१५५॥

,,

प्रताप—

प्यारी हे स्वतंत्रता सबै ही जीव धारिन कों,
छोरि कर याको मैं तो मन बहलाऊँ ना।
ह्वै के परतन्त्र तीनलोक को न राज चाहौं,
काहू के डराए हू तें दिल दहलाऊँ ना।
देवन के देव एकलिंग है हमारे नाथ,
ताके अतिरिक्त सीस काहू पै नमाऊँ ना।
हारजाऊँ समर, उजार जाऊँ देस, देह—
डारि जाऊँ तोऊ ज़मींदार[2] कहलाऊँ ना ॥१५६॥

---

१ ठेल ( अवहेलना ) २ ज़मीन के बदले सेवा करने वाला

,,

बन्धन ते छूटिवो वही को कवि मोक्ष कहे,
परिवो जही में पारतन्त्र ही प्रमान ते।
बालमीक व्यास आदि पुंगव महान मुनि,
कृष्ण भगवान गीता सास्त्र में बखानते।
याही हेत पण्डित परिस्रम सो ग्रंथ पढे,
याही के निमित्त रषि-राज राख छानते।
ऊँचे है महातमा जे सुनिये कुमार मान,
मुक्ति ओ स्वतन्त्रता में भेद नहि मानते॥१५७॥

,,

मान—

लीजिये लिखाय तुम लाखन के प्रान्त आज,
पीजिये कृपाम्बु[1] भूप! साह की निगाह को।
दीजिये हमारो साथ पूरन प्रसन्नता सौ,
सुसोभित कीजे दरबार-हिन्द-नाह को।
मारिये तै मरे और जाहिके जिलाए जिये,
कीजै नहि नेक भंग ताके उतसाह को।
तांन दीजै आप यौं न जांन दीजै व्यर्थ टेक,
मांन लीजै रांन फरमांन पातसाह को॥१५८॥

---

१ कृपा का जल

"

प्रताप—

जा पै चढिजाय स्याम रंग रंगरेज हाथ,

ठौर वहाँ कहाँ है बिचारे अदरंग को।

कर्मनासा¹ जैसी छुद्र सरिता को दाव कहां ?,

जमिगो है हृदय प्रभाव जहां गंग को।

कीजै कहा याकौ अब रान परताप कहे,

मेरो तो स्वभाव है सदा तै एक रंग को।

प्रथम पधारते तो सुनते तुम्हारी मान !,

मैने मान लीन्हो फरमान एकलिंग को ॥१५६।

"

मान—

सम्मति हमारी है सलाम करिवे की रान,

जिनकी सलाम बीच सम्पति को धाम है।

जिनकी सलाम ही तें भूपन के भूप होत,

जिनकी सलाम तैं जहान बीच नाम है।

जिनकी सलाम तै असाध्य सोउ साध्य होत,

जिनकी सलाम तैं सधै न कौन काम है।

नाहक ही ऐसो हट आप गहि लीजै नांहि,

एक बैर कीजै पातसाह सौं सलाम है ॥१६०॥

---

१ दुष्ट नदी

प्रताप—
,,

कैसें तुर्क चर्नन मे तेगन धरत भूप,
वदन[1] झुकाय कैसें सीस को नमावें है ?
करत सलाम आत कैसें है विलोम[2] गति ?,
पीछी चोबदार कैसें लूम[3] पकरावें है ?
कैसें कर बद्ध[4] होय आमखास रहैं खरे,
कैसें महिपाल अधोदृष्टि[5] सौं रहावें है ?
कहा करें मान ! हम सदातैं असिक्षित है,
ऐसी सभ्यता सों वन्दे करनो न आवे है ॥१६१॥

मान—
,,

कीनी है सलाम जिन भूपन ने मान कहे,
ताके निज भौंनन में रहत अनन्द है।
जाकी राज-रानियां उदग्र महलों के मध्य,
नूपुर बजात चली जात मन्द मन्द है।
दम्पति[6] की सुखद विलासता विलोकि वे कों,
नभ मे घरीक रुकिजात गति चन्द है।
साह की कृपा के कैते सुघर बिलासी वृंद,
सुख के हिन्डोरे चढे झूलत नरिन्द है ॥१६२॥

---

१ शरीर २ पिछे पेर लोटना ३ आम खास के हाजर वासियो के पकड़ खड़े रहने की रस्सी ४ हाथ जोड़कर ५ नीची नजर ६ पति-पत्नि

प्रताप— ”

कोउ नर सर्वभांति ऊचोहूँ चढ्यो तो कहा ?,
जाको जस एक बार तांत[1] पै चढ्यो नहीं।
कँवर! अपार धन धाम में बढ्यो तो कहा,
जाको मन जाति अभिमान में बढ्यो नहीं।
पढि के पुरान वेद पण्डित भयो तो कहा ?,
जोपै कुल-धर्म-पाठ रंच हू पढ्यो नहीं।
हायन[2] हजार स्वास सुख तै कढ्यो तो कहा ?,
देस हित एक हू उसास जो कढ्यो नहीं ॥१६२॥

मान— ”

आपनो अवस्य निज गृह को प्रबन्ध कीजै,
देस वृच्छ सूकि जाय अथवा हर्‌यो रहै।
यापै हरि तूठिजाय केधो अति रूठि जाय,
एक दम ऊठिजाय के यह गिर्‌यो रहै।
आपनी तो और तैं कृपालु कलपान्तर[3] लौं,
दासता की बेरी बीच सर्वदा जर्‌यो रहै।
मेरी मति को तो है प्रताप! यह मूल मन्त्र,
भारत भले ही परतन्त्र ह्वे पर्‌यो रहै ॥१६३॥

---

१ जिसका जस सारंगी, सितार आदि तांत पर गाया जाय।
२ वर्ष ३ महाप्रलय

"

प्रताप—

मित्र वारि डारौं और मन्त्री वारि डारौं मान !,
सैना वारि डारौं सब याके पद नख पै।
गजन अलान[1] युत बाजि कार[2] वांन वारौं,
हीरन की खान वारि डारौं भव्य मुख पै।
और हू हमारे पास होय ताकों बैर बैर,
हैर हैर वारि डारों हिन्दुअन हक[3] पै।
धर्म के सिवाय धन धाम वारि डारों मैं तो,
प्रान वारि डारौं प्यारे भारत मुलक पै ॥६५॥

"

मान—

जानत हो रान बलि भूप की कहानी आप,
मुलक गमाय दीनो धर्म हित कारी व्है।
त्यौंही हरिचन्द्र नीच सेवा में नियुक्त भयो,
ताको सरवस्व धन गयो धर्म अनुसारी व्है।
नगर बिहारी बनचारी बनि जावे सीघ्र,
सम्पति को फेर कबहू न अधिकारी व्है।
पीन[4] होय खीन होय कुली अकुलीन होय,
धर्मध्वज धारी सो तो निस्चय भिखारी व्है ॥६६॥

---

१ हाथी का ठाण २ घोड़ों की कतार ३ अधिकार ४ पुष्ट

"

प्रताप—

धर्म के निमित्त आप कूरम कुमार ! सुनो,
 पितामह पंथ हरिचन्द्र को गहोंगो मैं।
धर्म हितमान ! सरवस्व को तिलाँजलि दे,
 हर्म्मन[1] निवासी वन अटन चहोंगो मैं।
धर्म हित देखिये सरीर रहि जाय तौ लों,
 सामयिक कष्ट कोटि कोटि ही सहोंगो मैं।
हिन्दुन के धर्म पै नितान्त बलिहारी होय,
 होतो छत्रधारी पै भिखारी ज्यों रहोंगो मैं ॥१६७॥

"

मान—

अकबर पातसाह भारत के भूपन को,
 दासता की जकर[2] जंजीर जरि दीने है।
जापै भयो कोप को कटाच्छ जवनेस जूको,
 ताके घर संजमनी[3] बीच भर दीने है।
कैते नृप सीस आसमान सों अराय रहे,
 धाय-धाय चर्नन में सस्त्र धर दीने है।
आप कों बिगारबे की बात है कितीक रान !,
 बड़े-बड़े साहन कों मात[4] कर दीने है ॥१६८॥

---

१ मेहलात २ बांध देना ३ यमपुरी ५ क़ैद

प्रताप—

"

भीलन की पल्लिन[1] मे फिरत रहोंगो सदा,
कुटी मे रहोंगो महलात मे रहोंगो ना।
खावत रहोंगो बेल पात गिरि कन्दरन,
पारतन्त्र व्यंजन को पावत रहोंगो ना।
कूरम! विधर्मिन को दास हों कहोंगो कहा?,
मै तो तुर्क हाथ व्है के दुच्छन रहोंगो ना।
जाति व्हे रहोंगो मैं विजाति व्हे रहोंगो कहा?,
मात व्है रहोंगो मातहत[2] व्है रहोंगो ना ॥१६९॥

मान—

"

भारत के भूप सब साह के आधीन भए,
छत्रिन की जाति मग आपको गहेगी ना।
धकत दिलीस्वर की क्रोध की अगनि बीच,
बनिके पतंग[3] देह आपनी दहेगी ना।
केवल स्वतंत्रता के कारन विलासता कों,
छोरि कर कष्ट नेक कबहू सहेगी ना।
रान श्री प्रताप यह डावरे[4] सी बात करो,
रावरे रखेते ही स्वतंत्रता रहेगी ना ॥१७०॥

१ पाल, भीलों के घर २ सेवक ३ पतंगे, जोति पर गिरने वाले जानवर, कीट, ४ बच्चे

,,

प्रताप—

भारत के भूपति स्वतन्त्रता चहै न चहै,
　　नवरोजा जार कर्म कछू सहैगे ना।
सीसवद बन्स होय जनानी सवारी अग्र,
　　खूरम हजूर मह पैदल बहैगे ना।
दास के समान आमखास मे खरे ही खरे,
　　रेसम की लूम[1] रास हमरो गहेगे ना।
फलचर कहेंगे अनचर कहेंगे लोग,
　　बनचर कहेंगे अनुचर कहेंगे ना ॥१७१॥

,,

मान—

आप अनभिज्ञ तुर्कराज की व्यवस्था हू तें,
　　नाहक ही ऐसे दोष ताहिते मढात है।
केते ही अयोग्य योग्य पद को पहुँचिगए,
　　दरिद्री किते ही ते वदान्यता बढ़ात है।
सहज असीम ऐसी सुन्दर वहां की सिच्छा,
　　महा-महा मूरख जे मिरजा[2] कहात है।
साह की कृपा सों रान दिल्ली दरबार बीच,
　　केते ही असभ्य भूप सभ्य भए जात है ॥१७२॥

---

१ आमखास की रस्सी जिसको पकड़कर खड़े रहते थे।
२ मुसलमानी पद

"

प्रताप —

छाती हैन छाती वह रान परताप कहै,
जाति दुख देखि एक बारहू धकैगी ना।
हैन वह बुद्धि जो विधाता की सी क्यौन होय,
मात्रभुवि मान अपमान परखेगी ना।
हैन वह दृष्टि ओह! दीन की पुकार सुनि,
हृदय विदार एक बारहू तकेगी[1] ना।
हैन वह सभ्य जाके नैंन ते कुमार मान,
जाति दुख देखि एक बूंद टपकेगी ना ॥१७३॥

"

मान—

जाति के सुधारिवे को ध्यान सब ही को तोड,
ऐसी तदाकार[2] वृति आपने लही है का?।
तुर्कन अनीति काज देस की फिकर करो,
आप बिनु और भूप देस मे नही है का?।
राजपुत्र सन्तत ही भुवि पे स्वतन्त्र रहे,
ईस्वर ने कौर[3] दीनी तुमको सही है का?।
कहत कुमार मान मान लीजे मेरी बात,
व्यर्थ टेक महारान आपने गही है का ॥१७४॥

---

१ तकेगी ( देखेगी ) २ तदाकार ( विरोधवृत्ति, एकाग्रचित्त )
३ कोरदीनी ( लिखदी हे क्या सही ) दस्तावेज पर राज्य चिन्ह

प्रताप—

क्यौंन कहि देत हो चकोर को कुमार जाइ,
　　चन्द पे अचूक चख नाहक दए हो क्यौं।
क्योंन कहि देत सिह सावक[१] को बिना अर्थ,
　　कौतुक मे कुम्भिन के कुल को हए हो क्यौं।
कञ्ज को निसंक मान स्पष्ट कहि देत क्योंन,
　　सूरज पे व्यर्थ तुम मुग्ध व्हे रहे हो क्यौं।
मानि लेहै सब ही तो मेहू मान जानि लेहो,
　　मोको कहिबे को व्यग्र[२] अबही भए हो क्यौं॥१७॥

मान—

आप यो कहेगे तुम कञ्चन अधीन भए,
　　कंचन को त्यागी कौन पुरुष जहान है।
आन तान कंचन मे खान पान कञ्चन मे,
　　कंचन ते दान सान[३] कहत कुरान है।
राज रीति कञ्चन ते हार जीत कञ्चन ते,
　　कञ्चन ते प्रीति नीति पढत पुरान है।
सबै ज्ञान कञ्चन ते सबै मान कञ्चन ते,
　　कञ्चनेन[४] पीछे दौर परे भगवान[५] है॥१७६॥

१ सिंहसावक ( सिंह का बच्चा ) २ व्यग्र ( आतुर ) ३ सान ( सांनसोकत ) ४ कञ्चनेंन ( एनमृग ) ५ भगवान ( रामचन्द्र )

ाप—
,,
लि को निवास खास कूरम है कञ्चन में,
कञ्चन ते बुद्धि पण्डितन की रहै नही।
ञ्चन ते परीच्छित भूप मदमस्त भयो,
कञ्चन प्रभाव नीति-मग पै बहै नही।
मार लदे हो अति भार मान! कञ्चन के,
क्योन आप हो कों यह मरज दहै नही।
ोभा जो बढावै कान की तो हे सदा ही श्रेष्ठ,
(पै) कान तोरि डारे ऐसो कञ्चन चहै नही॥१७७॥

ान—
,,
ुनिए प्रताप महारान! फिर मान कह्यो,
अकबर को जो कोउ करत अहेत है।
हके अति रुष्ट पद-भ्रष्ट करि देत सीघ्र,
सम्पति सबै ही च्छन बीच हरि लेत है।
हेन्दू और तुर्कन को राखत समान भाव,
योग्यता-नुसार पद अर्पित स-हेत है।
ख़ीजे ते खलन खेंचि काढत खिती[1] ते खोदि,
रीझे मन माने साह मनसब देत है॥१७८॥

ताप—
,,
ताकी रीझ खीज की तो मो को परवाह है न,
कृपा को भिखारी है प्रताप सूल-धारी[2] को।

---

१ खिती ( पृथ्वी ) २ सूलधारी ( शंकर )

"

प्रताप—

क्यौन कहि देत हो चकोर को कुमार जाइ,
चन्द पे अचूक चख नाहक दए हो क्यौं।
क्योन कहि देत सिंह सावक[1] को बिना अर्थ,
कोतुक मे कुम्भिन के कुल को हए हो क्यौं।
कञ्ज को निसंक मान स्पष्ट कहि दैत क्योंन,
सूरज पे व्यर्थ तुम मुग्ध व्है रहे हो क्यौं।
मानि लेहै सब ही तो मेहू मान जानि लेहो,
मोको कहिबे को व्यग्र[2] अबही भए हो क्यौं॥१७॥

"

मान—

आप यो कहेगे तुम कञ्चन अधीन भए,
कंचन को त्यागी कौन पुरुष जहान है।
आन तान कंचन मे खान पान कञ्चन मे,
कंचन ते दान सान[3] कहत कुरान है।
राज रीति कञ्चन ते हार जीत कञ्चन ते,
कञ्चन ते प्रीति नीति पढत पुरान है।
सबे ज्ञान कञ्चन ते सबे मान कञ्चन ते,
कञ्चनेन[4] पीछे दौर परे भगवान[5] है॥१७८॥

---

१ सिंहसावक ( सिंह का बच्चा ) २ व्यग्र ( आतुर ) ३ सान ( सांनसोकृत ) ४ कञ्चनेन ( एनमृग ) ५ भगवान ( रामचन्द्र )

प्रताप—

कलि को निवास खास "कूरम है कञ्चन में,
कञ्चन ते बुद्धि पण्डितन की रहै नही।
कञ्चन ते परीच्छित भूप मदमत्त भयो,
कञ्चन-प्रभाव नीति-मग पे बहै नही।
कुमार लदे हो अति भार मांन! कञ्चन के,
क्योन आप हो कों यह मरज दहै नही।
सोभा जो बढावै कान की तो हे सदा ही श्रेष्ठ,
(पै) कान तौरि डारे ऐसो कञ्चन चहै नही ॥१७७॥

मान—

सुनिए प्रताप महाराज! फिर मान कह्यो,
अकबर को जो कोउ करत अहेत है।
व्हेके अति रुष्ट पद-भ्रष्ट करि देत सीघ्र,
सम्पति सबै ही च्छन बीच हरि लेत है।
हिन्दू और तुर्कन को राखत समान भाव,
योग्यता-नुसार पद अर्पित स-हेत है।
खीजे ते खलन खेंचि काढत खिती[1] ते खोदि,
रीझे मन माने साह मनसब देत है ॥१७८॥

प्रताप—

"ताकी रींझ खीज की तो मो को परवाह है न,
कृपा को भिखारी है प्रताप सूल-धारी[2] को।

---

१ खिती ( पृथ्वी ) २ सूलधारी ( शंकर )

मेरी मति हू मे योग कौऊ नहि देहै तोऊ,
साथ कौन चाहना है कछुहु गजारी[1] को।
कूरम कुमार मान! कैतोहू प्रपंच करो,
पत्ता ना बनेगो पत्ता कबहु लजारी[2] को।
राव व्है रहैगे किधो रंक व्है रहैगे पर,
पद न लहैगे हम हफतहजारी[3] को ॥१७९॥

मान—

सादर बुलात आम खास मै सबन साह,
हिन्दू और तुर्कन मै भेद कछु आनै ना।
सैना-पति कीने हम[4] हिन्दुन को मान युत,
दोउन को जानत है आपने बिराने[5] ना।
कौषाध्यक्ष[6] कोऊ, कोउ नृप है सलाहकार[7],
तुर्कन के पक्ष कौ कुतर्क करि ताने ना।
मान कहै पातसाह दिल्ली दरबार बीच,
हिन्दू भूप जिनको महत्व कम माने ना ॥१८०॥

---

१ गजारी (सिंह) २ लजारी (लजवन्ती बूंटी) जो छूते ही मुरझा जाती है ३ हफ्तहजारी ( हफ्तहजारी का पद जो बादसाह के कृपापात्रों को मिलता था ४ हम (मानसिंह पातसाह का सेनापति था जिससे कहता है कि हम लोगों को सेनापति बना दिए है ५ बिराने ( अपने पराए ) ६ कोषाध्यक्ष ( खजांची टोडरमल ) ७ सलाहकार ( मन्त्रणा देनेवाला ) बीरबल का सम्बोधन

प्रताप— „

सुनी हम हिन्दू भूप दिल्ली दरबार महँ,
बार-बार नमिना विलौम[1] गति घूमते।
दास व्है कभी न भूप आसे[2] की करत आस,
कबहों न आमखास लूमन के लूमते।
सहत कभी न क्षुद्र कंचुकी[3] की तारना को,
व्है के मति हीन तुर्क सेवा मैन भूमते।
आदरलहत[4] नित्य तुमरे बिरादर जे,
करन ते दाबि दाबि तखतन चूमते ॥१८१॥

मान— „

मान कहे तुर्कन के चूमैंगे तखत तोऊ,
रंकता सौं रावरे समान न रहायँगे।
राजन के योग्य रुचिकारक अनेक वस्तु,
राज्य बिनु सुन्दर पदार्थ कैसें पायँगे।
षोड़स प्रकार वारे भोजन अरोगिबेके,
आपकौं तो मान्यवर सुपने ही आयँगे।

---

१ विलोमगति ( पीछे पैर लौटना ) २ आसा ( खड़े रहने से दरबारी राजा लोग थक जाते थे जिससे आसे की लकड़ी को कांख के नीचे रखते थे ३ कंचुकी ( छड़ीदार ) जो राजाओं को दाटदपट बताते थे ४ आदरलहत ( इसमें व्यङ्ग है महाराणा कहते हुए भी नहीं करते अर्थात् सब करते हो )

रूखे[1] भए साह के प्रताप महाराज सुनो,
टूक[2] बिनु भूखे बाल बाला बिललायँगे ॥१८२॥

प्रताप—

भूखे रहि जायँगे हमारे जन, मान! तोहू,
बबरची खाने दिस कबहौं तकैंगेना।
पाय है प्रसन्नता सों व्रच्छन के पत्रन मे,
कञ्चन के पात्रन बिहीन बिलखैंगेना।
जठरा बुझाय हैं कठौर माल-मकइ[3] तें,
व्यञ्जन अनेक भरे थाल निरखैंगेना।
ऊमर लौं ऊमरे[4] भखेगे बेसवादी तोउ,
तुर्क के प्रसादी हम जरदा[5] चखैंगेना ॥१८३॥

मान—

बेर बेर राना कैसे बोलत असह-नीय,
ऐसे बैन कहे कहा सान रह जावेगी।
चढेगो कुमक[6] पात-साह को हुकम पाय,
क्यौन गुहिलोतन[7] को दिल दहलावेगी।
सीताराम सपथ नितान्त हम साची कहै,
तनुजा तुमारी कौन ठौर छुप जावेगी।
कहत कुमार मान मानिये प्रमान यह,
पहुमी के पेट मे पनाह[8] नहि पावेगी ॥१८४॥

---

१ रूखे ( नाराज ) २ टूक ( टूकरे ) ३ मालमकई ( मेवाड़ी धान ) ४ उमरे ( गूलर के फल ) ५ जरदा ( चावलों का बना हुआ भोजन ) ६ कुमक (सैनिक मदद) ७ गहलोत (शीशोदिये) ८ पनाह ( शरण )

"

प्रताप—

तनुजा हमारी सो तो छत्रिन को ब्याहेगी रू,
मुग़लों की सम्पदा पै प्रेम नहि लावेगी।
भानुकी मरीची दिश पच्छिम उदै व्है तो हू,
जवन जनान खाने बीच नहि आवेगी।
इन कौ तो औसर मिलेगो कहां ऐसो श्रेष्ठ,
जीवित अजीवित ही ये तो जरि जावेगी।
हिन्दुवानी होइ के जो हुरम कहावे मान !,
पहुमी के पेट मे पनाह वही पावेगी ॥१८५॥

"

मान—

आपको प्रतिष्ठा कों बचाइबे को आए हम,
पूरन पगे हैं निज जाति अनुराग मे।
शाह के अतीव कृपापात्र बनि जाओ शीघ्र,
मान कहै तुमरे बदी न ऐसी भाग में।
बोवत हो जैसे बीज तैसे फल पाइ लेहौ,
जान निज डारत हो जानकर आग मे।
बोलत जुबान मद छाके के समान आज,
गरमी बढ़ी है रान ! रावरे दिमाग में ॥१८६॥

प्रताप—

"

हमारे दिमाग बीच गरमी बढ़ी है पर,
रावरे दिमाग ऐसी ठण्डक भई है क्यौं ?।
आपनो गँवाय के बसीठ[1] बनि आए और,
सभ्यता को सीख एक साथ ही दई है क्यौं ?।
नीचे की कहावत को और अनुकर्ण कर,
मान यह क्षुद्र मति राजने लई है क्यौं ?।
"मेरी तो गइ तो गइ सोच है कछून दई,
जेठजी की गाय हाय गौठ[2] मे रई है क्यौं" ?॥१८७॥

"

मान—

भूपति दशानन की दशा तुम भूलत हो,
कौरव सुयोधन को कार्यक्रम कीजे ना।
बात जयचन्द पृथीराज की बिसरि गए,
मेरे कहिवेतै रान और अकरीजे ना।
ह्वैके क्रान्तिकारी कुल डारत हो कष्ट बीच,
प्रकट हलाहल को जान बूझ पीजे ना।
कीजे ना विरोध शाह जूसो नेक[3] सेवा काज,
ऐसो हठ नाहक ही आप गहि लीजे ना ॥१८८॥

१ दूत २ गवाड़ा, गौओं के रहने का स्थान ३ थोड़ी

"

प्रताप—

आर्यावर्त देश आर्य धर्म है हमारो सदा,
कहा यवनान को है भारत मे वासता।
हिन्दुन की जाति-गन गौरवता जान लागी,
भावी वश आन लागी छत्रिन की नाशता।
छात्र धर्म कारन विलासिता को त्यागि देत,
ये तो है हमारी गहिलोतन की खासता[1]।
जौ लौं प्रान वायु फुरमान मे फिरेगो तौ लौं,
पत्ता तो करेगो ना विधर्मिन की दासता॥ ८६॥

"

मान—

भीम[3] चतुरंगिनी दिली तै निकरेगी तव,
कहा यह भूमि शेष फन पै हिलेगी ना?।
साह को हुकम पाय आप पै पिलेगी तव,
कहा मूछ तुर्कन की भौंह न मिलेगी ना?।
सरिता छलेगी रक्त गिद्धिनी गिलेगी गूद[4],
मैं तो यह मानत हों कर में झिलेगी ना।
चलत जवान इहि बेर मुख बीच तैसी,
रन मे कृपान ऐसी रावरी चलेगी ना॥१६०॥

---

१ विशेष गुण २ मुसलमान ३ भयंकर ४ मस्तिष्क का भेजा

"

प्रताप—

मान ! रन सागर के बीच बप्प वन्शिन की,
जो पै हिय पङ्कज की पाँखुरी खिलेगी ना।
भारत की आह परताप सुनि एक बेर,
जोपै निज आंखिन मे आग प्रजलेगी ना।
जाकी सांग शत्रुन के हृदय सिले न जो पै,
जो पै दृढ नीम तुर्क जाति की हिलेगी ना।
छत्री व्है विधर्मिन पै तेगन झिलेगी तो, तो,
कुंभीपाक[1] मध्य ठौर मांगे हू मिलेगी ना ॥१६१॥

"

मान—

कहत कुमार मान आहरे[2] अमर भए,
कूर्म कुल वारे कोऊ जग मे जिए नहीं ?।
आप निकलंक व्है बिराजे इन्द्र आसन पै,
हिन्दुन समाज कबौं हमको छिए नहीं ?।
आप व्है स्वतंत्र अश्व मेध यज्ञ कीन्हे कैते ?,
दान पुन्य विप्रन ने हमते लिए नही ?।
शाह की कृपा के हेत जाति ते बहिष्कृत है,
काहू ने हमारे साथ भोजन किए नही ? ॥१६२॥

१ नर्क २ आहड़ नामक ग्राम में रहने से महाराणा के वंशज आहरे कहलाते हैं

"

प्रताप—

स्वाभिमान खोय आप तुर्कन के दास भए,
क्यों न यह सत्य दोष आप पे धरों नहीं ।
हिन्दुन दबाए भरमाए किते राजन कों,
स्खलन[1] तुम्हारी यह क्यों न पकरो नही ? ।
और हू अनेक बात कीन्ही हे अकथनीय[2],
ताते दण्ड देय वेतै कबहू टरों नहीं ।
कृपा करि मान कछवाह कहि दीजै मोहि,
क्योंन अब जातिच्युत[3] आपको करों नहीं ? ॥१९३॥

मान—

तान कर मूँछ उग्र बचन उचारे मान,
मेरे सम आन कौन महाबीर धर में ? ।
बिना श्रम तोलों आसमान को भुजन पर,
कूदि परों रनाङ्गन बोलि हर हर में ।
भटन सुलाऊँ में डुलाऊँ भुवि मण्डल कों,
नारिन रुलाऊँ शत्रुओं की घर घर में ।
मेरो नाम मान महाबीरन को मान हरों,
रान परताप है कृपान मेरे कर में ॥१९४॥

---

१ भूल २ कहने में नहीं आने योग्य ३ जाति से गिरे हुए

प्रताप—

छत्रिन को मान सरवस्व मान हिन्दुन को,
कूरम कुमार एक साथ ही गमाते क्यों ?।
कहत प्रताप सिर नभ मे लगाते विहि,
धर्म रिपु तुर्कन के पाव में जमाते क्यों ?।
दासता की बेरिन मे आप जकराते कैसे ?,
बब्बर[1] अकब्बर के फेर मह आते क्यों ?।
होती जो कृपान मूठ मुठी मे तुम्हारे तो, तो,
मुट्ठी भर तुर्कन की मुट्ठी मे समाते क्यों ? ॥१६५॥

मान—

मान कहे रान नाहि मानी है हमारी बात,
भावी बश कारन तैं भई मति बावरी।
माननीय महलों पै घूक[2] बुलवाय देहों,
देश डुलवाय देहों गिरिन दरी दरी[3]।
जहां पे सशंक-भाव राव उमराव रहे,
दौरि हे निशंक तहां जम्बुक बिलावरी[4]।
जानी हम श्चय पिछानी तव प्रकृती को,
व्है हैं घूर धानी राजधानी यह रावरी ॥१६६॥

१ बाबर बादशाह २ उलू पक्षी ३ कन्दरा गुफा ४ जंगली बिल्ली

"

प्रताप—

है तो राज इन्द्र तोऊ तुरक गुलाम कहे,
ऐसी या रजाइ[1] को कितोक रह्यो दाम है ?।
सुघर तिया पै एक रोज नवरोज[2] गई,
(तो) ऐसी सुघराई को कुमार कहा नाम है ?।
बीर है पै शत्रुन के पाव धरि देत शस्त्र,
ऐसी वीरताई मे कितोक रह्यो राम है ?।
है तो अलकासी[3] पे पराए तन्त्र राजधानी,
ऐसी राजधानी को तो दूरिते प्रनाम है ॥१६७॥

"

मान—

देश छूटि जैहैं धनधाम खूटि जैहैं रान,
फूटि जे हैं बान्धव जे आप के बने बने ।
तूटि जे हैं डार अवलम्ब हेत गहिबे की,
दुःख में विछूटि जे हैं भृत्य हू जने जने ।
लूटि जे हैं भवन गरीबन के ठोर ठोर,
साथ मे रहेंगें उमराव हू इने गिने ।
राम रूठि जे हैं यों अक्कबर के कोप कीन्हे,
साहस हु ऊठि जे हैं रावरो सने सने ॥१६८॥

---

१ राजापन २ नवरोजे का उत्सव बादशाह अकबर ने चलाया जो साल में एक दफे होता था ६ कुबेर की पुरीसी

,,

प्रताप—

कृष है शरीर अस्थि[1] मात्र को कलेवर है,
असन-अभाव-आतम-बल तो घटेगो का ?।
रहिवे को सुदृढ सुथान है न जीवरक्खा[2],
भीर परे मृगन को 'दोरियो' रटेगो का ?।
शशन सियारन के अग्र छोरि साहस कों,
पलायन होय एतो चित्त पलटेगो का ?।
महामत्त कुञ्जर बिदारिबे की बेर मान,
पिञ्जर रह्यो है तोऊ केसरी हटेगो का ? ॥१९९॥

,,

मान—

जो न पातशाही चतुरंगिनी चढाय लाओं,
जो पै गहिलोत[3] करूँ मुसल-इमान ना।
जो न मेदपाट रुण्ड मुण्डन तै पाटि देहो,
जो पै शाह चर्न झुकवाऊं सिर रान ना।
जो पै परताप को बुलाऊं आमख़ास नाहि,
जो पै दिन एक मे भुलाऊँ कुलकान ना।
पानि धरि मौंछ पै कुमार मान बोलि उठ्यो,
एती जो करौं न तो तो मेरो नाम मान ना ॥२००॥

१ हड्डी २ गढका परकोटा ३ शीशोदिए

दोहा

कही नही पातल कछुं, बडपन अपने बीर ।
सहिन सक्यो संभर[1] सुभट, धकि बोल्यो रनधीर ॥२०१॥

मनहर

बोल्यो चहुआन राव कोठारिय दुर्ग ईश,
शीशवद् वंश यमराज ते डरेंगे ना ।
मोद सो भिरेंगे रन क्षेत्र मे झरेंगे पर,
एडिन की ठौर वीर अगुँठे धरेंगे ना ।
कहा कछवाह रुण्ड मुण्ड बिखरेंगे नाहि ?,
कहा मुण्ड माली बेल सिरन भरेंगे ना ? ।
आप ही जो आये होतो यही पहुनाई व्है है,
फूफा को लिवाय लै हो सीम पे टरेंगे ना ॥२०२॥

"

मान—

नृपति प्रतापादित्य[3] महा अभिमानी रह्यो,
कामरूप[4] देशते निकारयो छलबल तें ।
पूरन स्वतंत्र अपगानी[5] जे प्रबल हते,
मार मार तिनकों धपाए गिद्ध पलते[6] ।

---

१ चहुआन २ मेव के हद से-मतलब मालपुरे का ३ बंगाल का राजा जिसको मानसिंह ने जीता था ४ बंगाल ५ काबली ६ कचे मांस ते

तोरि जट-वारे[1] और गुज्जर[2] विजय कीन्ही,
नेक ना हट्यो हूँ कबौं का हू बडे खल ते।
मैनें इम पातशाह अमल जमाय दीनो,
भारत दबाय लीनो सारो भुज बल ते ॥२०३॥

"

को

जाया करो हिन्द में जमाया करो तुर्क राज,
शीश को नमाया करो अग्र मुगलान के।
दौलत कमाया करो ऊचे पद पाया करो,
मुट्ठी मे समाया करो अकबर खान के।
विजय मनाया करो आप इसलामिनि की,
सुन्दर बनाया करो खण्ड महलान के।
शत्रुन रिझाया करो कुंवर! दबाया करो,
तुर्कन के पांव और कंठ हिन्दुआन के ॥२०४॥

दोहा

महीप जिमायो मान को, शामिल नहि शीशोद।
और धक्यो ता तै अधिक, जोस छक्यो वह जोध॥२०५॥
अन्न अनादर-भय सुभट, कोर[3] एक कर लीन।
शिर धरि चल्यो रिसाइ के, भीम रौद्र-रस भीन ॥२०६॥

---

१ जाटों की राजधानियें २ गुजरात ३ ग्रास

कछुक कुँवर दुवाद कहि, ऊठि गयो तजि थाल ।
कर प्रछालन[1] नहि किए, लीन्हे पोंछि रुमाल ॥२०७॥
कुँवर कहिय पुनि धोइ है, हम प्रताप इक साथ ।
शीशोदा सरबस्व ते, हम लोहू ते हाथ ॥२०८॥
बदि[2] बदि के बहु दुरबचन, अधिनायक[3] आमेर ।
मुख बिगारि मुरझाइ के, मान चल्यो अजमेर ॥२०९॥
यवनन के सम्पर्क तै, दूषित मानहि देखि ।
समये उदय-समुद्र को, भोज्य पदार्थ अनेक ॥२१०॥
बैठो जहँ कूरम बली, सो जमीन खुद्वाय ।
शुद्ध कराई वह धरा, गंगाजल छिरकाय ॥२११॥



१ धो डालना २ कहि कहि के ३ स्वामी

# मानसिंह का पश्चाताप ।

दोहा

मग मह जावत कुँवर मन, दुखी भयो तजि दर्प[१] ।
दंत खिर्‌यो सो दीखियतु, पर्‌यो करंड[२] हि सर्प ॥२१२॥
मन अच्छरि[३] इत व्है मुदित, हिय योगिनि इत हर्ख ।
करत जातइत मन कुँअर, विधि-विधि तर्कवितर्क ॥२१३॥

सवैया

भगवान कहा मन मेरो भयो,
जिहि लागि उदैपुर दौरि गयो ?।
पुनि और गयो तो गयो पर मै,
हठ जीमन को किहि काज लयो ?।
फिरि एहू लयो तो लयो जियरा,
नृप पातल तै नमि क्यों न गयो ?।
बदनाम भयो बहु भारत में,
अरु जाति बहिष्कृत और भयो ॥२१४॥

"

खोन गयो उनकी न स्वतन्त्रता,
आपनी कीरति खोन गयो मैं ।

१ घमण्ड २ टिपारा ३ अप्सरा

देन गयो उन कंठ कुठारन,
आपने पाँव पै आप लयो मैं।
मै उनकौ हनिबैको गयो नहिं,
हा उलटो हनि[1] चित्त रयो मैं।
लेन गयो नहि पातल कों पर,
आपनो गौरव देन गयो मैं ॥ २१५॥



1 चित्त को मसोस मारकर

## खेद प्रकाश

दोहा

कथा उदय सागर कुँवर, जथा जोग समुझाय।
हृदयविथा पतशाह ढिग, कहत बहुत बिलखाय[1] ॥२१६॥

घनाक्षरी

उदधि प्रतापादित्य[2] बीच व्है निशंक कढी,
प्रबल तुफानन को कछु ना लग्यो उपाय।
बेग सों बहाई महासागर निजाम बीच,
गुज्जरेस सिन्धु मह दास ने दई घुमाय।
काबुल समुद्र कृपालु! निर विघ्न कढी,
आप के प्रताप सों ही ईश्वर करी सहाय।
मान कहै मेरे अभिमान की जहाज आज,
रान दरियाव मह एकदम बूड़ी हाय ॥२१७॥

मनहर

खैबर के घाटे तें कृपालु बाल बाल बच्यो,
फिर्‌यो निरभीक दास अरब उजार मैं।
कढिगो कुशल सिन्ध दक्खिन के जंगल तै,
बंग देश खाडिन तै और बार बार मै।

---

१ मुरझाय २ बंगाले का राजा

बँधी रही ढाल तरवार व्हां कमर मेरे,
फोज मुख ताकत ही रही मम लार मै।
कीर्ति-धन खूटि गयो ईश्वर हू रुठ गयो,
लूट गयो हाय देवबारी[1] के पहार मै ॥२१८॥

"

मान कह्यो प्रतिष्ठा गमाई हुइ पाऊँ कैसें ?,
जहांपना ! देखिये बुझाऊँ कैसे ताप कों ?।
पत्ता के किये को अपमान मै छुपाऊ कैसें ?,
हाय गहलोतन लुपाऊँ कैसे दाप[2] को ?।
मेरे मुख जैसो मुख रान को बनाऊँ कैसें ?,
हाय ! मै मिटाऊँ-कैसें जाति-च्युत[3] छाप को ?।
मन को मनाऊँ-कैसें ? ढूढाहर जाऊँ कैसें ?,
बदन बताऊँ कैसे हाय अब बाप को ? ॥२१९॥

सवैया

स्पर्श भए हमरे तन तैं पट,
ना उनको पहिनै[4] पहिनावे।

---

१ उदय सागर के समीप पहाड़ी नाका जिसको देवारी कहते हैं शुद्ध नाम देवबारी है २ घमण्ड ३ जाति से गिरा हुआ ४ पहरते हैं

# खेद प्रकाश

दोहा

कथा उदय सागर कुँवर, जथा जोग समुझाय।
हृदयविथा पतशाहढिग, कहत बहुत बिलखाय[१] ॥२१६॥

घनाक्षरी

उदधि प्रतापादित्य[२] बीच व्है निशंक कढी,
प्रबल तुफानन को कछु ना लग्यो उपाय।
बेग सों बहाई महासागर निजाम बीच,
गुज्जरेस सिन्धु मह दास ने दई घुमाय।
काबुल समुद्र कृपालु! निर विघ्न कढी,
आप के प्रताप सों ही ईश्वर करी सहाय।
मान कहै मेरे अभिमान की जहाज आज,
रान दरियाव मह एकदम बूड़ी हाय ॥२१७॥

मनहर

खैबर के घाटे तें कृपालु बाल बाल बच्यो,
फिर्‌यो निरभीक दास अरब उजार मैं।
कढिगो कुशल सिन्ध दक्खिन के जंगल तै,
बंग देश खाडिन तै और बार बार मै।

---

१ मुरझाय २ बंगाले का राजा

बँधी रही ढाल तरवार व्हां कमर मेरे,
फोज मुख ताकत ही रही मम लार मैं।
कीर्ति-धन खूटि गयो ईश्वर हू रुठ गयो,
लूट गयो हाय देवबारी[1] के पहार मैं ॥२१८॥

"

मान कह्यो प्रतिष्ठा गमाई हुइ पाऊँ कैसें ?,
जहांपना ! देखिये बुझाऊँ कैसे ताप कों ? ।
पत्ता के किये को अपमान मै छुपाऊ कैसें ?,
हाय गहलोतन लुपाऊँ कैसे दाप[2] को ? ।
मेरे मुख जैसो मुख रान को बनाऊँ कैसें ?,
हाय ! मै मिटाऊँ-कैसें जाति-च्युत[3] छाप को ? ।
मन को मनाऊँ-कैसें ? ढूढाहर जाऊँ कैसें ?,
बदन बताऊँ कैसे हाय अब बाप को ? ॥२१९॥

सवैया

स्पर्श भए हमरे तन तैं पट,
ना उनको पहिनै[4] पहिनावे ।

---

१ उदय सागर के समीप पहाड़ी नाका जिसको देवारी कहते हैं शुद्ध नाम देवबारी है २ घमण्ड ३ जाति से गिरा हुआ ४ पहरते हैं

छुइ गए हम तै कोउ बासन,
ना उनमें वह भोजन पावैं।
बैठि गए हम जो तिहि ठौर कों,
खोदि सबै जल गंग सनावैं।
आप कहो चुनवावें चिता,
अथवा कि कहो हम गोर[1] खुदावें ॥२२०॥



१ कब्र, मुसलमानों के गाड़ने का स्थान

# अकबर का आश्वासन

सवैया

अति शोक समुद्र भरयो हिय मे,
पर नेकु कबौ झलकावनो ना।
अपनी अँखियानते आपति मे,
पुनि आंसुन को ढलकावनो ना।
हम मानत, मान गयो तुमरो तउ,
जाहिर में बिलखावनो ना।
रखि हिम्मत कूरम! कुन्त[1] सदा,
कहा शत्रुन पै झलकावनो ना? ॥२२१॥

,,

इमि कायरता करि के कबहू,
अभिधान[2] प्रसिद्ध मिटावनो ना।
सहि के अपमान स्वजातिन तैं,
विष घूंट कभी गिट जावनो ना।
कछवाह अबे गुहिलोतन पै,
कहा खग्ग दुधार लटावनो ना?।
करनो धरनो रहिमान करे-पर,
काम परे सिट जावनो ना ॥२२२॥

---

१ भाला, शस्त्र विशेष २ प्रसिद्ध नाम

"

तुम तो हमरे कहिबे ते गए,
तिहि तै तुमने नुकसान लयो।
कुल रान कभी गजनी पति तैं,
लगि आजलो नेक न हाय नयो[1]।
तुमरे कछु आंच लगी तन में,
पर मेरो सबै जरि पुर्न गयो।
तुम मान! कछू मत सोच करो,
यह तो अपमान हमारो भयो ॥२२३॥

दोहा

रचि सेना चतुरंगिनी, तुम चढि जाहु तुरन्त।
पकरहु रान प्रताप को, मन रखि मान! निचन्त ॥२२४॥
सब महीप सूबा सहित, सब तुम साथ सिपाह।
कै तो आनहु कटहरे, के दरगाह अलाह × ॥२२५॥

---

१—नम्र होना।

× या तो पकड़ कर हमारे क़िले में ले आओ या अल्लाह की दरगाह में भेज दो अर्थात् क़त्ल कर डालो।

# अजमेर से मानसिंह की चढ़ाई

दोहा

भारत के ले भूप गन, अरु मन मानि उछाह।
पकरन रान प्रताप को, चढ्यो मान जय चाह ॥२२६॥
सोरह सो तेंतीस पुनि, शुभग मास वैशाख।
मान चल्यो अजमेर तैं, छक्यौ रौद्र-रस छाक ॥२२७॥
दल बहु सजि डेरा दियउ, मांडलगढ ढिग[1] मान।
वहां जाय लरनो उचित, मतो कीन महरान ॥२२८॥
उमरावन कीनी अरज, अकबर बल वह आत।
गिरिन सहारो लइ प्रभो !, लरनो उचित लखात॥२२९॥
हायन[3] चम्मालीस मह, बड शाके[4] द्वै बार।
यहां भए ताको अधिप, बुधिबल करहु बिचार॥२३०॥
तातें हय गय भटन त्रुटि, है हमरे अति हाल[5]।
उन तै जीत न सकहिगें, बिनुसहाय गिरिमाल॥२३१॥
महाराना तब मुदित है, लीनी मानि सलाह।
कसी पताका करिन पै, अति मन रन उतसाह ॥२३२॥
दिय मिलान खमनोर[6] ढिग, मांडलगढ़ तै मान।
आए हलदी घाट इत, कुँभलगढ़ तें रान ॥२३३॥

---

१—समीप। २—विचार। ३—वर्ष। ४—जिस युद्ध में सब के सब मारे जांय। ५—इस समय। ६—गांव का नाम।

अभिधा[1] हलदी घाटि जहँ, गिरिन बीच चोगान।
सम भुवि छापर-सोलहन, जित तित तने वितान।२३४॥
दोय कोस के दूर दल, दहुअन डेरा दीन।
आनन्दित वर वीर इत, उत प्रमुदित अछरीन॥२३५॥
उदयसिंह शासन समय, कटे बहुत सरदार।
अल्प फौज तैं आहरे, तोकि लई तरवार॥२३६॥
आन मिले मकवान अब, चूंडा अरु चहुआन।
कुल पँवार भट्टीकमध, स्वामिय धरम सयान॥ ७॥
सोलंकी आए सुभट, द्रुत गति सारंग देव।
तानत खग तुरकान पै, भल जानत रन भेव॥२३८॥
पुंजा नामक समर-पटु, रह्यो मेरपुर राव।
ले पहुँच्यो भट भीलगन, आहव उमंग अमाव॥२३९॥
अनी सहस-त्रय प्रभु इते, उत पुनि पांच हजार।
कान परी नहि सुनत कछु, सिन्धुन गान उचार॥२४०॥
इहि अन्तर मह एक दिन, पेखत विकट पहार।
आयो मान अहेर को, अल्प सथ्थ असवार॥२४१॥

--*--

---

1—नाम।

## महाराणा की वीरोचित उदारता

दोहा

अरज करी सुभटन यहाँ, प्रभु अवसर यहँ पूर।
कैद करें गहि कूर्म को, व्है जो हुकम हजूर ॥२४२॥
रान कही अरि दल-रहित अनुचित कर्म अतीव।
हम रच्छक दृढ़ धर्म तो, दे हैं विजय दईव ॥२४३॥

कवि वचन—

तिय अरु शत्रु एकान्त वन, काहू को मिल जात।
तो मुशकिल बहु ऋषिनको रहत सुन्यो मन हाथ॥२४४॥

मनहर

पारासर जैसे मत्सगंधा को एकान्त पाय,
काम वासना को तृप्त करिवे टरे नहीं।
द्रोन से अपूर्व वीर चक्रव्यूह बेध काल,
बाल अभिमन्‍ कहँ गहिबे मुरे नहीं।
कर्न के कहे पै कान नेक न किरीटी दीन्हो,
धर्म युद्ध ठान भुज धरम धरे नहीं।
कौन परताप महारान सो अरिन कैद—,
करि तो सकै पै छमा करि के करे नहीं ॥२४५॥

दोहा

कउ कहत महारान की, भई महा यहँ भूल।
लेते बदला मान तैं, हतो समय अनुकूल ॥२४६॥

पै देखहु यह भूल को, महिपति कितनो मोल ।
सबल छमी निरगर्व धनी, ताहि सके को तोल ? ।। २४७ ।।

मनहर

प्रचुर पहारन में हजारन फौज परी,
ताके ढिग कूर्म कर्न मृगया विचारी है ।
शत्रुन निकट असहाय फिरै शून्य हिय,
माननीय कच्छप[1] की कैसी मति मारी है ।
गहिबे की अरज भई त्यौं गहिलोत[2] हूतें,
पातल छमा की तहां नजर प्रसारी है ।
मान अविचारता पै कैते अविचारी वारौं,
रान की उदारता पै बली[3] बलिहारी है ।। २४८ ।।

गद्य

महाराणा की सैना में गवालियर का राजा रामशाह तँवर, अपने पुत्र शालीवाहन, भवानीसिंह और प्रतापसिंह सहित, मकवाना[4] मानसिंह सज्जावत शादड़ी का, झाला बीदा सुलतानोत देलवाड़े वालों का पूर्वज, सोनीगरा मानसिंह अखेराजोत, डोडिया भीमसिंह सरदारगढ़ वालों का पूर्वज, रावत नेतसिंह सारँग देवोत कानोड़ वालों का पूर्वज, रावत कृष्णदास सलूम्बर वालों का पूर्वज, रावत जोगा[5] आमेट वालों का पूर्वज, रावत सांगा देवगढ़ वालों का मूल पुरुष, राठ्ठवर रामदास बदनोर के राठ्ठवर जयमल्ल के

१—कछवाहा । २—सीसोदिया । ३—राजावली ।
४—भाला जाति । ५—जगा, आमेट रावत का पूर्वज ।

सातवां पुत्र, पानड़वे का राणा पूँजा, पुरोहित गोपीनाथ, पुरोहित जगन्नाथ, पडिहार कल्याण, महता जयमल्ल बच्छावत, महता रत्नचन्द्र खेतावत, महासाहाणी जगन्नाथ, राष्ट्रवर शंकरदास कैलवे वालों का पूर्वज, सोदा बारहठ शाखा के चारण जेसा और केशा ( केशव ) सोन्याणे वाले ग्रंथ कर्ता के पूर्वज आदि विद्यमान थे। इनके अतिरिक्त हकीम सूर पठान शाहजादा आदि भी मुगलों से लड़ने में महाराणा की सैना में सम्मिलित थे।

दोहा

गिरि माला मह वक्र गति, है कुछ दूर बनास[1] ।
हिन्दू अरु तुरकान को, अब यहँ होहि बिनास॥२४६॥

छंद

दुहुँ ओर होत सिन्धून राग,
दुहुँ ओर मोह संसार त्याग।
दुहुँ ओर ओज सुभटन दिपन्त,
दुहुँ ओर इष्ट देवन जपंत॥
दुहुँ ओर बंब भेरी बजन्त,
दुहुँ ओर मत्त मद्‌भर गजंत।
दुहुँ ओर हींस व्हे हयन वृन्द,
दुहुँ ओर करभ[2] गज्जत मदन्ध॥२५०॥
दुहुँ ओर ध्वजा दण्डन फरक्क,
दुहुँ ओर सूरन हूरन हरक्क।

१—नदी का नाम [illegible] ऊंट।

दुहुँ ओर विरुद बन्दी जपन्त,
दुहुँ ओर भीरु खोहन छिपन्त।
दुहुँ ओर करत हय अटन फेर,
दुहुँ ओर रहे प्रेतादि घेर।
दुहुँ ओर फिरत प्रच्छन्न दूत,
दुहुँ ओर होत भटभेर भूत ॥२५१॥
दुहुँ ओर चिरागन भो उजास,
दुहुँ ओर विजय की करत आस।
दुहुँ ओर कन्दरन शब्द घूक[1],
दुहुँ ओर बन्दर न होत हूक॥
दुहुँ ओर खरे जामिक[2] सुबीर,
दुहुँ ओर चढत उतरत स्वनीर।
दुहुँ ओर शोर बाजन सुनाव,
दुहुँ ओर विचारत युद्ध दाव ॥२५२॥
दुहुँ ओर सयन भट गनन कीन,
विश्राम दियउ गज अरु तुरीन।
जब रह्यो निशा को अन्त भाग,
सब उठे सुभट निन्द्राहि त्याग॥
करि ईष्ट देव वन्दनदु ओर,
गीतादि पाठ पढियतदु ओर।

---

१—घूघा पक्षी। २—पहरेवाले—चौकीदार।

दुहुँ ओर थटिय भट गनन थाट,
दुहुँ ओर बोलियत विरुद्ध भाट॥२५३॥
दुहुँ ओर भटन किय नित्य नेम,
दुहुं ओर तजे संसार प्रेम।
दुहुं ओर धरत निज इष्ट ध्यान,
दुहुँ ओर करत जल गंगपान॥
दुहुँ ओर कसे संनाह टोप,
दुहुं ओर सत्व गुन भयो लोप।
दुहुँ ओर तुलसी मंजरि चढाय,
दुहुं ओर लाज लंगर न पाय॥२५४॥
दुहुं ओर पढ़त आयत कुरान,
दुहुँ ओर धरत शिव शक्ति ध्यान॥

दोहा

पहर रात रहते पहल गहकिय सिन्धुन गान।
प्रतना दुहुँ खल भल परी, होन घोर घमसान॥२५५॥
धरनि प्रसारिय यश धवल, आरजकुल उज्वाल।
भटन देत भाषण शुभग, भारत-हित भूपाल॥२५६॥

——

# महाराणा प्रतापसिंह का भाषण

## छंद हरि गीतिका

सुन्दर हरिद्री घाट के ढिग एक दीर्घ वनस्थली।
जग की अलौकिक सर्व आभा आइके इहि ठां मिली॥
इक ओर सुन्दर बह रही वर-सरित कलकल-नादिनी।
इक ओर है गिरिश्रृंग-माला अन्तरिक्ष[1]-विवादिनी२५७
तिहि ठौर पै महारान के सरदार सब ही हैं खरे।
जिन बीर गनने बीर रस निज रोम रोमन में भरे।
श्रीमान रान प्रताप इक चट्टान ऊपर हैं खरे,
बलवान पानि कृपान है अरु रूप रुद्रहि को धरे॥२५८॥
देशाभिमान विशाल मूरति आन ठाढी है गई,
तिहि बेर वृत्ति नृपाल ने महती-रजोगन की लई।
अब बीर बान्धव भृत्यगन सों आप भाषन कर रहे,
जनु भीम-भारत-भारकोनिज भटनके भुजधर रहे२५९
बान्धव तुम्हारे देश पै अति कठिन आपति है खरी।
करनो तुमारी मातृ भुवि को तुर्क चाहत सहचरी[2]।
जिनको[3] हि मित्र प्रमानते वह शत्रुता आसन चढ़े,
स्वाधीनता तुमरी बिनाशन छिप्र[4] आवत है बढे॥२६०॥

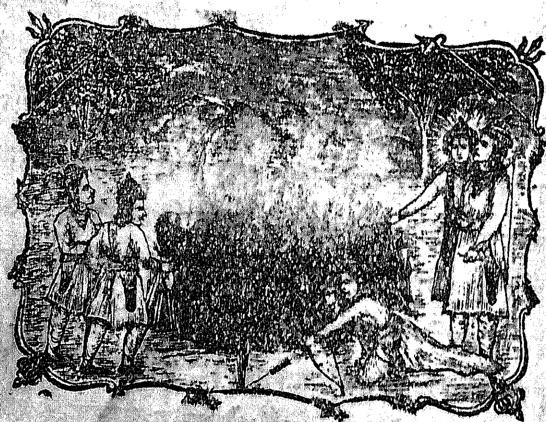
---

१—आकाश। २—साथ रहने वाली दासी। ३—मानसिंह आदि। ४—जल्दी।

ुनि और कूर्म सुपुत्र खींचत मातृ भू की चूनरी,
रु अंकशायी तुर्क की करनी विचारी है खरी।
्या आप करि है सहन ऐसे नीच कार बलात को ?,
ीचे दिखावहुगे कहा तुम वीर छत्रिय जात को ?।२६१।
्या पूर्वजों के नाम पै तुम फेरि हो हरताल को ?,
्या आप त्याग कराय हो नहि रुद्र-जीर -मालको ?।
ह वीर जननी काश्यपी चिरकाल तें मेवार है,
जेसकी परावधि शक्ति संयुत ह्वै रही तरवार है।।२६२।।
ान्धव! तुमारे पुर्वजों ने यों रखी है वीरता,
जेसके न निकसो पास ह्वै कबहू बिचारी भीरुता।
उमराव बान्धव आप जो निज के हमारे अंग है,
जेनके भरोसे पै लयो हम शत्रुअन तै जंग है ।।२६३।।
नेर्वीर वसुधा ह्वै गई क्या आज यह मेवार की ?,
्या आज कुँठित ह्वै गई है धार निज तरवार की ?।
्या आज इस मेवार के भट ह्वै गए निर्जीव है?,
ा वीरसन्तति जिनहिको अति ह्वै गई अबक्लीब है?२६४।
जेहि दोष तै गज वृन्द आवत सिंह कानन² पै बहा,
ह तो उनहिको भ्रम नहीं तो और कारण है कहा ?।
ा तिमिरते छिप जायगी यह रश्मि दिनकरकी महा ?,
ुक जायगी तृणढेर देखत अग्नि अबप्रजलित कहा ? २६।५

१—नपुसंक। २—जंगल। ३—किरण।

लुप जायगी क्या वेद महिमा वृहस्पति[1] मत के चला।,
रूपजायगी[2] अनृत[3] गती क्या सत्यके आगे भला।।
संसार याहि असार में मरनो सबन को कष्ट है,
पर मान युत मरनो नरन को परम उत्तम इष्ट है ॥२६६॥
यश अयश रहि है अवनि पै अघ पुन्य आत्मा लार है,
जो रखहिगें दृढ धर्म को तिहि रखहिगे करतार है।

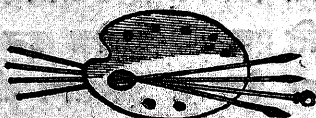


१—नास्तिक मत। २—ठहर जायगी। ३—झूट।

# सुभटों का उत्तर

छंद हरि गितिका

सुनिके यही विधि भूप-भाषण सुभट उत्तर देतहैं,
हम वीर जग आदर्श हैं अरु स्वामि-भक्त सचेत हैं।
हट जाँयेगे क्या मेदपाटी वीर इन तुरकान तें ?,
सिट जाँएगे शीशोदिये क्या आज कूरममान तै ?२६७॥
भट हिन्दु तुर्कन युद्ध में नहिं आज क्या जुट जाँयेगे ?
क्या आज हम दोऊन में से एक नहिं मिट जाँयगे ? ।
निश्चिन्त है नर वीर हमको शीघ्र आज्ञा दीजिए,
उद्धार भारत भूमि को तरवार बल तै कीजिए ॥२६८॥
हम शक्ति सरित प्रवाह है खल काष्टवत बहि जाँयेगे,
कीरति तुमारी स्वच्छ कविगन मुक्त कंठन गाँयेगे।
ढहि जायेगा छिन एक मे जो खरा आलय पाप का,
रहि जायगा चिर हिन्दमे इक नाम रान प्रताप का।२६९



# शाहीदल में मानसिंह का भाषण

छंद हरि गितिका

याही गती सों शाह दल में मान भाषण देत हैं,
सब आप सुभट सुयोग्य है अरु स्वामि धर्म सचेत है।
सब सुनहू सैनप कान दे यह आज कारन और है,
निज शाह का पूरन विरोधी हेरु शत्रु सजोर है ॥२७०॥
महारान हाय प्रताप ने अपमान मेरा जो किया,
तिहि रोष तै हम विवश है यह ज़हर का प्याला पिया।
अब आप सब इक चित्त है परताप को गहि लीजिए,
अथवा बली यम राज के इनको हवाले कीजिए ॥२७१॥

---

# मानसिंह के सुभटों का उत्तर

छंद हरि गितिका

हम शेख मुगल पठान है सिट जाँयेगे नहिं मरन ,तै
हट जाँयेगे नहि एक पग हूँ नीच इन काफिरन तै।
हमतो पताका देश मे इसलाम की फहरायँगे,
जयलाभ तुमको अर्पिके हियहिन्दुअनहहरायँगे २७२॥

१—कँपा देंगे।

दोहा

निज निज मति सो इमि नृपन, दुहु दल भाषण दीन्ह।
सुभटन स्वामिन के शपथ करि करि के प्रण कीन्ह।२७३।
एते मह अब उगिगयो, उदयाचल पै अक्क[1]।
दयो प्रथम ही शाहदल दुन्दुभि ऊपर डक्क ॥२७४॥
द्रुत द्रुत सों दुहु दल चढ़न, कुहुक[2] नकीबन कीन।
समर पधारन शिवहि को, दूत निमंत्रन दीन ॥२७५॥
सुनत भई इत सेन में, आज्ञा युद्ध उमंग।
बजन लगे बाजे बिहद, सब ही एको संग ॥२७६॥

छंद नाराच

बजि ढोल मद्दल[3] बंब[4] भैरिय[5] शोर[6] बाजन को भयो,
जिमि घोर बद्दल सर्द ऋतु मे जोर सों अति गज्जयो।
ठननंकि हथ्थिन घस्ट त्यों छननं कि पक्खर गुघ्घरे,
रननंकि रन कंकन त्युहिं हननंक[7] बाजिन[8] की फुरे[9]।२७७
उडि खेह घोरन पोर तैं रवि रश्मि पूरन ढंकई,
निश जानके गिरि खोहनन लुटि पेर चक्करू चक्कई।
अति वृष्टि निब्बल धेनु ज्यौ थहराय कातर धुज्जए,
हहराय शत्रुन हृदय ओ भट बीर बानन सज्जए ॥२७८॥

---

१—सूरज भगवान। २—आवाज। ३—वाद्य।
४—छोटा नगारा। ५—बड़ा नगारा, नोबत। ६—आवाज।
७—घोड़ों का बोलना। ८—घोड़े। ९—घोड़ों के खुर।

सचरणा गद्य

जा समे विशाल चतुरंगिनी के जुरने पर कंवर मानसिंह गजारूढ़ है सेना के मध्य भाग में स्थित होय ख्वाजा महमूदरफ़ी औ सियाजुद्दीन गुरोह पायन्दाह क़ज्ज़ाकअली मुराद उजबक़, सैयद हासिम बारहा व बख़्शी अलीमुराद पातशाही इक्के और राजा लुणकर्ण को हरोल में करन लगे।

तथा सेना के वाम भाग में सैयद अहमद को ह दक्षिण में सीकरी के शेखों के समूह सहित काजी अली को स्थिर करि महतरखां को चन्दोल मे रखि दुन्दुभि पे डंके परन लगे।

या प्रकार वीर पुंगव महाराणा ने भी सेना के दो विभाग करि एक सेना का नायक हकीमसूर नामक पठान शाहज़ादा को नियुक्त करि दूसरी प्रबल वाहिनी के संचालक स्वयं बनी अग्र भाग में बद-नोर के रामदास राठौर को रु दक्षिण भाग में गवालियर के राजा रामशाह तँवर को तथा वाम पार्श्व में सादड़ी के राजराणा मानसिंह झाला को नियुक्त करन लगे।

या तरह व्यूह बनाइ संसार से मोह त्यागि मत्त गयन्दन की भांति भिरन लगे।

# युद्धारम्भ

## मनहर

टोकर टमंक परी नंदी की तुहिन-गिरी[1],
गैल परी कङ्क[2] अति गूद[3]-अनुरागिनी।
होत हलचल्ल नवलक्खन[4] में हंक परी,
नेवर छमंक परी परी[5] बड़ भागिनी।
धरनी धमंक कटि कच्छप के बंक परी,
पत्ता और तुर्कन तमंक[6] लई खागिनी।
लंक तक संक परी घंटन ठमंक परी,
अङ्क भरी सेषने चमंक परी नागिनी ॥२७६॥

"

लागी है उड़न नील बर्न की पताका उत,
इत नभ भगवां सुरंग ध्वजा फरकी।
भूमि भार छूते तुरड शूकर दबन लागी,
लागी माल, घिसन हजार सेष शिर की।
नारद के बीन तार झनंकार होन लागी,
लागी रट उत तै अलाह अकबर की।
बड़े बड़े बीरन को अच्छरान जोन लागी,
जबै होन लागी है आवाज हर हर की ॥२८०॥

१—कैलाश पर्वत। २—मांस भक्षी जानवर। ३—मस्तिष्क का भेजा। ४—नौ लाख योगिनियें। ५—अप्सरा। ६—जोश में आकर। ७—पंक्ति।

"

कायर डरन लागे रन ते मुरन लागे,
सैनप अरन लागे मानो मल्ल गन से।
बन्दरन हूक, गिरि कन्दर जरन लागे,
गजब करन लागे गोले गाज घन से।
आहरे तुरक उर उर सों भिरन लागे,
नेक न टरन लागे अङ्गद चरन से।
पैनी खग वाह नर है वर परन लागे,
गैंवर[1] गुरन लागे कुञ्जर गिरन से ॥२८

"

मैनका[2] घृताची[3] हाथ चन्दन घिसन लागे,
कञ्चुकी[4] कसन लागे अधिक उताली[5] मे।
पान खान लाल रंग ओठन दसन[6] लागे,
वीरन फसन लागे मन नखराली मे।
वरसन लागे बन नन्दन के फूल तहां,
नारद हसन लागे अट्टहास[7] वाली मे।
धर्म धुर धोरी धीर धारन धसन लागे,
त्रिदिव बसन लागे बड़ी चित्रशाली मे ॥२८

१—हाथी। २—एक अप्सरा का नाम। ३—एक अप्सरा। ४—कांचली, स्त्रियों के सीने पर पहरने का वस्त्र। ५—जल्दी से। ६—दांत। ७—जोर से हँसना।

"

फेरुक[1] फिकार[2] रन अङ्गन फिरन लागे,
डाबर भरन लागे रक्त के प्रवाह तें।
कच्छप की भांति तूटे खेटक[3] तिरन लागे,
भैरव धरन लागे भूतन दुबाह तें।
योगिनीन झुण्ड एक एकन गरन[4] लागे,
उचरन लागे सिन्धु[5] अधिक उछाह तें।
मुगल सिपाह ओर आहरा[6] झरन लागे,
कीरति करन लागे कवि राह राह तें ॥२८३॥

"

ऐंचि ऐंचि बाग को सबेग गति ऐंचि[7] डार,
कहे शम्भुझाय सारथी तें युद्ध कथ को।
आहव अपूर्व तुम अरुन बिलोको अब,
पीछेही करेंगे हम फेर पार पथ को।
करुना निधान एती समथ लगाय दीनी,
तिगुनी वढ़ाय दीनी तृतीया की तिथ को।
महारान पातल, प्रपोत्र पानि पेखिबे को,
पितामह ठाढो मारतण्ड रोकि रथ को ॥२८४॥

---

१—गीदड़, सियार। २—सियालनी। ३—ढाल।
४—गलबांह। ५—सिन्धूराग। ६—सीसोदिये। ७—खींच।

रन को हरिद्री घाट वीरन रचायो रंग,
इतै उत हूते एक पग हू हिले नही।
डाकिनी डरत अति शाकिनी[१] सहमि[२] गई,
भूरि भय पाय भूत-प्रेत हू मिले नही।
पहुमी पटी है नर गेंवर हयन्दन तें,
लुथ्थन पे लुथ्थ तातै मारग खुले नही।
बिमानन बेठि परी[३] नीठ नीठ पार परी,
हार परी चरडी पगडंडी हू मिले नही॥२०



१—देवी दुर्गा की सहचरीं। २—घबरा गई। ३—अप्सरा।

## अल्लबदायुनी का आशिफ़खाँ के प्रति पूछना

दोहा

बोल्यो अल्लबदायुनी, परत नहीं पहिचान ।
कौन हमारी ओर के, कौन पराए जान ॥२८६॥

## आशिफ़खाँ का उत्तर

दोहा

तीर चलाते जाहु तुम, करहु न कछु परवाह ।
कोऊ दल काफ़िर मरे, है इसलामहिं लाह ॥२८७॥

## कवि बचन

दोहा

निरखहु तुरकन नीति को, कितनो आशय क्रूर ।
मानत है नहिं मान तउ, चाटत पग की धूर ॥२८८॥

# बहलोल खां का मारा जाना

दोहा

शोधन मान कुमार को, राना बढ्यो हरोल।
एते मह आयो नजर, बीर एक बहलोल[1] ॥२८

मनहर

बकत कुवाक्य आयो खान बलवान वहाँ,
तेग को उठाय रान तुर्क तनु ताक्यो है।
टोप काटि शीश अङ्ग साखत तुरंग काटि,
रक्त तै अघाय खग भूमि रस चाख्यो है।
उभय विभाग कीने बिनाश्रम महावीर,
केशोदास उपमा को शोधि शोधि थाक्यो है।
मीर बहिलोल भीम पातल भुजन काज,
जरा[2] राक्षसी ने मानो जोरि कर राख्यो है॥२९

दोहा

जरासिन्ध बहलोल के, वध मे यह व्यति रेक।
भीम कियो द्वै भुजन तें, पातल ने कर एक ॥२९

---

१—एक अफसर का नाम। २—एक राक्षसी का नाम जिसने जरासन्ध की देह की फांके जोड़ी थी।

मनहर

अम्बिका प्रताप पर उतारन लोंन लागी,
खौन लागी शंका महा भय तें नजर की ।
माला दीठमनियोंकी[1] पारवती पोनलागी,
बान्धन को लागी धूप बत्ती ले अगर की ।
शोधन को लागी वाम पग की तुरत धूरि,
बनावन लागी जंत्र ममता जिगर[2] की ।
मीर बहलोल खां पै ज्योंही तरवार बागी,
झार फूँक होन लागी त्योंही महेश्वर की ॥२६२॥

,,

याही बेर रान कों बिलोकि कें इकल्ले तुर्क,
सेंकरन तूटि परे खलन स्वभाव हैं ।
शत्रुन अनेकन ने शस्त्रन के बार कीन्हें,
जान्यो मान लाग्यो यह अपूरव दाव है ।
रान खग झारि महि पाटी शत्रु मुंडन तें,
त्वरा[3] दिखाई वीर अर्जुन के भाव हैं ।
चेटक के तीन सप्त पातल के घाव लागे,
एते मह आइ गए कैते उमराव हैं ॥२६३॥

---

१—नजर नलगने की माला जो माता बच्चों के बांधती है ।
२—कलेजा । ३—फुरती ।

## घनाक्षरी

पवन अवाची[1] हूँ तै बद्दल उदीची[2] जैसें,
देखि के शिकारिन को मानो मृगझुंड जात।
दुर्जन मनोरथ ज्यों तुर्क छिन्न-भिन्न भए,
तुरत पयान करे जैसे रवि देखि रात।
बड़े-बड़े रायज़ादे शाहज़ादे दौरे जात,
कूरम बली को ऐसे रान ने दिखाए हाथ।
शेर[3] कहलाते जहँ सीकरी के शेख जादे,
एडिन लगाय पीठ भेड़न से भागे जात ॥२६४॥

"

कंकरन पाहन औ थूहरन कंटक की,
करत अमीर नहीं कछू परवाह बाह।
जल की न थल की न गरमी प्रबल की न,
शंक नहिं दलदल[4] की दौरत बिना ही राह।
आशिफखां लूनकर्न शेख मनसूर आदि,
बड़े बड़े सैनप दुरूह बोले आह आह।
सरिता बनास को फलंगन तैं पार कीन्हीं,
छीन लीनी मृगन की उपमा कौं वाह वाह ॥२६५॥

---

१—पच्छिम दिशा। २—पूर्व दिशा। ३—सिंह
४—पानी का कीचड़

मनहर

जाहि बेर रान की कृपान पवि[1] मान चली,
छूटे पांव खलन रह्यो न चित्त धीर है।
महम्मद रफी औ सियाजुद्दीन पायँदाह,
गाज़ीखां कज़ाक अली आदिक अमीर है।
आशिफखां अहम्मद इब्राहिम चिस्ती भट,
भागि परे हरावल[2] चोर कर भीर है।
केउन के कन्धन में केउन के जन्घन में,
केउन के गडिगे नितम्बन[3] में तीर हैं ॥२६६॥

"

केउन के अंग तें अभेद तनत्रान[4] हटे,
केउन के गिरिगे है शस्त्र निजपान तें।
केउन के फटिगे शरीर है करीरन तें,
भागत अमीर जात विव्हल जुबान तें।
केउन के बान परे केउन के म्यान गिरे,
केशोदास प्यारो कौन आपने या प्रांन तें ?।
केउन के घ्रान कटे केउन के कान फटे,
केउन के गुमान मिटे रान की कृपान तें ॥२६७॥

---

१—बज्र के तुल्य। २—सैना का अग्रभाग। ३—चूतड़। भागते समय शेख मनसूर के लगा था। ४—बक्तर।

"

खञ्जर कृपान जमदट्ठ[1] रु त्रिशूल गदा,
भांति भांति वारे पकवान मन भावने।
स्वागत करी है पातशाह के सिपाहन की,
पाँतिए पटाय दीने चौसर[2] सुहावने।
रान के सुभट सब चतुर परोसकारे,
एक हू न भूखे गए जिनके जिम्हावने।
मान के सहित तहाँ पत्ता महारान हू ने,
पांच कोस हू लो पहुँचाए प्रिय पाहु ने ॥२६८॥

दोहा

कीनी महतरखां[3] कुहक[4], जबै ढोल बजवाय।
आय गए अजमेर तैं, शाह हमारि सहाय ॥२६९॥

मनहर

दुन्दभी बजाय खल आहव[5] में पीछे मुरे,
महतरखां आदि के प्रपंच करन में।
नंन्दी के सवार[6] कइलाश मगहू तै मुरे,
आय नची जोगिनी जमात मोद मन में।

---

१—कटार। २—चोतर्फ। ३—एक अफसर का नाम जो चचन्दोलमेथा अर्थात् सेना के पिछले भाग में था। ४—आवाज हला मचाया था। ५—युद्ध। ६—शंकर।

उलट बजी है खनंकार फेर खग्गन की,
थीन की परी है झनंकार स्रवनन में ।
कैते ही कबन्ध[1] डोलै भुजन पै आभ तौलै,
मार मार बोलै दुहुँ ओर बीर रन में ॥३००॥



१—बिना शिर के योधा ।

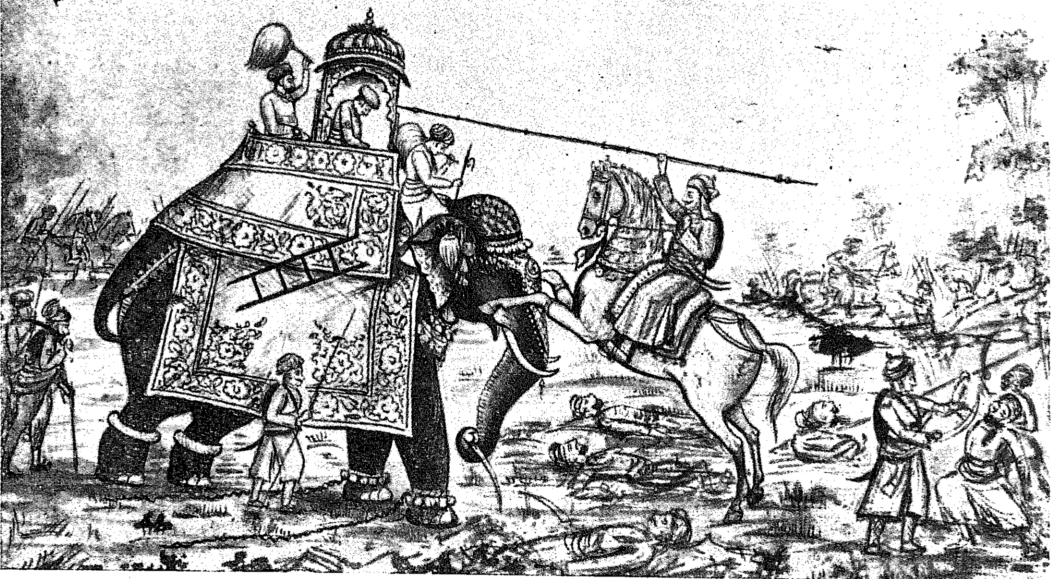
# हाथी पर चढे हुए मानसिंह पर महाराणा का आक्रमण

दोहा

इमि प्रपंच करिके यवन, सुभट प्रचारे संग ।
पुनि प्रतना[1] साहस पकरि, झुरी भयंकर जंग ॥३०१॥
इक गज पर आरूढ है, बैठो मान सुवीर ।
महाबली दल गोल[2] महँ, धकि ठाढोरनधीर ॥३०२॥
राना बढिय हरोल[3] तै, शोध्यो मानसुचाह ।
बोल्यो पातल बीरबर, अति मन रन उत्साह ॥३०३॥
कहिय हमारी तुम कुँअर, मन्नी नहिं मनुहार ।
मानहु अब करिके महर, पहुनाई[4] रखि प्यार ॥३०४॥
शेल चलायो शीशवद, यों कहिकें फिर आप ।
कूरम दबिगो कटहरे[5], पलटयो तुरंग प्रताप ॥३०५॥
स्वर्ग गयो कूरम सुपह, समुझिय रान विलोक ।
पै कूरम के प्रान को, रक्खिय होदे रोकि ॥४०६॥

---

१—सैना । २—फोज का मध्य भाग । ३—सैना का अग्र भाग । ४—मिजमानी । ५—हाथी पर कसा हौदा ।



सैनापति मानसिंह पर महाराणा का आक्रमण

मनहर

चेटक उडायो बलवान महा चातुरी तैं,
कुँम्भस्थल करी पै जमायो पाँव आन है ।
शेल तोकि दीनो गजा रूढ भए फारकी में,
अटकि गए तें बार निष्फल दिवान है ।
आँबेरप स्वर्गलोक अरर[1] धकेल आयो,
शेष हुती आयु हरि इच्छा बलवान है ।
कूरम को जीव रक्खा होदा जोन होतो तोतो,
पितृन मिलाय देतो पत्ता रान मान है ॥३०७॥

दोहा

बैठो जिहि कूरम बली, सिन्दुर वाके सुण्ड ।
खाण्डा पकरायौ खलन, अरिन करन खलखण्ड ॥३०८॥
वह खांडा के बार तै, चेटक को पग[2] वाम ।
कट्यो कहा नृप चित कट्यो, रस विष होय तमाम ॥३०९॥
पैर कटन की नहि परी, जब लग नृप को जान ।
करत रहे तबलग कतल, महाघोर घमसोन ॥३१०॥

१—अर्गल किमाड़ आदि । २—चेटक का पिछला बावाँ पैर ।

# राष्ट्रवर जयमल्ल के सातवां पुत्र रामदास का मारा जाना

दोहा

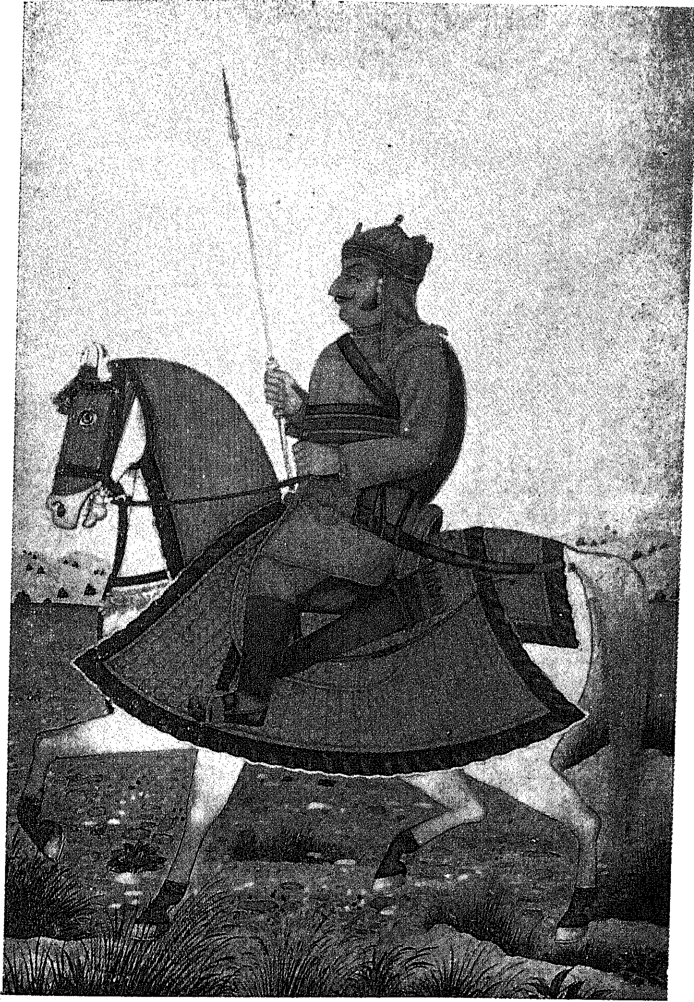
रट्ठोरन की शूरता, सो है जगत प्रसिद्ध ।
ताही साथ उदारता, सर्व भांति है सिद्ध ॥३११॥
जयमल सुत सप्तम जुर्‌यो, हरदी घाट हरोल[1] ।
मर्‌यो गिर्‌यो तउ बीसर्‌यो, नहि उदारता कोल॥३१२॥

मनहर

सेवा भर पायो रामदास तै प्रतापरान,
क्षेत्रपाल वृन्द स्रोन पान सुख पायो है ।
अरीगन पायो डर आरियन पायो दुःख,
मान पायो महा सुख हर्ष उर छायो है ।
राष्ट्रवर राज हू तै कौन नहिं कहा पायो ?,
कोऊ जीवधारी नहिं निरमुख आयो है ।
धर[2] पायो माताधर, शिर पायो शंकर ने,
गर[3] पायो गिद्धिनी घृताची[4] वर पायो[5] है ॥३१३॥

---

१—सैना का अग्र भाग । २—शरीर का कलेवर । ३—गिद्धनी का खाद्य-मान्स । ४—एक अप्सरा का नाम । ५—दुलहा ।



सुप्रसिद्ध वीराग्रणी राठोड़ जयमल के सातवें पुत्र रण कोविद
रामदास मेड़तिया बदनोर वालों के पूर्वज

षटपदी

जिहि जयमल वर जोध
साह सों करीन सन्धिय।
जिहि जयमल वर जोध,
चित्रकूटहि[1] गल बन्धिय।
जिहि जयमल वर जोध,
खलन खग झारि खपायउ।
जिहि जयमल वर जोध,
धरनि अति श्रोन धपायउ।
उज्वल दिखाय पुनि जोधपुर,
तूट्यो व्हे तिलतिल सुभट।
यह रामदास रट्ठौर वर,
जयमल को सुत हो प्रगट ॥३१४॥

दोहा

पत्ता जयमल सुपहु की, प्रतिमा लै पतशाह।
राज भवन मह आगरे, रखी सराह सराह ॥३१५॥
महा बीरन के मुकुट मनि, हने मीर हमगीर।
तिहि जयमल को पुत्र यह, रामदास रनधीर ॥३१६॥

---

१--चित्तोड़।

जिहि जयमल रट्ठोर भट, रन पण्डित तै रान।
सैनिक शिच्छा लीन भल, विधिविधि ते विद्वान ॥३१७॥
रामदास रट्ठौर भट, निडर राखि जग नाम।
कर कूरम जगनाथ के, कमधज आयो काम ॥३१८॥

सोरठा

यह कूरम जगनाथ, भारमल्ल को पुत्र लघु,
अरु भगवन को भ्रात, हो पितृव्य भट मान को ॥३१९॥



# ठारिये रावत पृथ्वीराज का परिचय

मनहर

घेरि म्लेच्छन कों खगन घुमाय डारी,
किधौं चले फग्गुन मे डंडे चंचरी[1] के है।
ारिय दुर्ग ईश शोभा छाय डारी छिती,
आग डारी तीव्र हिय कूरम अरी के है।
फन हूँ पै भूमि सुभट हिलाय डारी,
फौज मथि डारी रूप मन्दर[2] गिरी के है।
को[3] निभाय खग धारन धपाय डारी,
हृदय में कीन्ही ठौर पत्ता केसरी के है ॥३२०॥

षटपदी

जिहिं भट रावत खान,
दुष्ट वन वीर[4] उथप्पिय।
जिहिं भट रावत खान,
नृपति उद्दल कह थप्पिय।

---

रक खेल जो गेर नाम से प्रसिद्ध है वह फाल्गुन में खेला है। २—मन्दिरा चल। ३—मानसिंह को उदेसागर दा होते समय जो कहे थे। ४—एक दासी पुत्र का नाम त्तौड़ की गद्दी बैठ गया था।

जिहिं भट रावत खान,
समर चित्तोर उमंगिय।
जिहिं भट रावत खान,
रसा निज स्रोननि रंगिय।
रावत सुखान बलवान भल,
स्वामि भक्त दृढ रान को,
पृथ्वी सु राज चहुआन भट,
यह प्रपौत्र वहि खान को ॥३२१॥



## सादड़ी राजराना बीदा उपनाम मानसिंह का काम आना

मनहर

याही की सलाह युद्ध मंडल[1] दुरग रुक्यो,
याही की सलाह मच्यो आहव[2] गिरिन में।
याही की सलाह तें कुमार मान कूरम को,
नट्यो महारान छल भाव पकरन में।
भट सराहनीय उत्तम सलाहकार,
माननीय पण्डित हो भारत करन में।
मय[3] जहांन बीच सुयश अखूट भर्यो,
मान मकवांन[4] बीर तूट पर्यो रन में ॥२२२॥

---

१—मांडलगढ़। २—युद्ध। ३—अहलाकपरलोक। ४—
झाला राजपूत।

# ग्वालियर के राजा रामशाह तंवर का तीनों पुत्रों सहित काम आना

घनाक्षरी

आयो हो शरन ग्वालियर को अधीश यहाँ,
इन पै अक्कबर ने क्रुद्ध है लगाई घात।
मुद्रा त्रय लक्ख[1] प्राप्त जितनी पहुमि पाई,
जीविका लिखाई महाराना उदैसिंह हाथ।
अल्प काल पीछे यहाँ आन घमसान मच्यो,
जगत प्रसिद्ध बीर क्षत्रिन दिखाई जात।
रामशाह तंवर संयुक्त तीन पुत्रन के,
पेश कर दीने प्रान पट्टे परवाने साथ ॥३२३॥

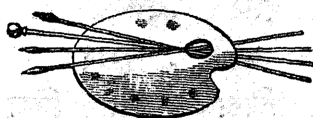
—————

१—तीन लाख की आमद के तीन प्रान्त बारां—मऊ—मन्दसोर जागीर में मिले थे।

# सांगावतों के पूर्वज रावत सांगा का काम आना

मनहर

महावीर बहुतेरे मीरन को मार मार,
पार पार हथ्थिन कों स्वर्ग महमान भो ।
सबन दिखायो निज दावा जो सराहनीय,
माननीय सत्य हरवल्ल[1] को प्रमान भो ।
वारन के लागो सांगा चुण्डवंशी[2] धीर बीर,
काहू के न लागो हाथ तिल तिल मान भो ।
फेर फेर गनन को शंकर सुमेरु हेत,
हिमजा[3] सहित हेर हेर के हिरान भो ॥१२४॥



१—सेना का अग्र भाग । २—चोंडा को वन्शज । ३—पार्वती ।

# कानोड़ के शक्त नेतसी का काम आना

मनहर

वीणा[1] को उठाई हँसि नारद महान मुनि,
महादेव सिंगी[2] को बजाई मोद मन तें।
अच्छरीन गाई कल कंठन विवाह गीत,
प्रभुता बढाई राव भांवरी फिरन तें।
आहव हरिद्री घाट उत्सव रचायो ऐसो,
'केशव' ने गायो यश पूरे प्रेम प्रन तें।
सुरन बधायो भट नेतसी सिधायो स्वर्ग,
कंकन खुलायो मंजुघोषा[3] के करन तें ॥ ३२५॥

षट्पदी

सदल बहादुर शाह,
रान विक्रम की वेरा।
गुजरातिन अति गुमर,
चित्र कूट हि दिय घेरा।
उमरावन मिलि अखिल,
खलन कीने खल खंडा।

१—वाद्य। २—विवाह के समय के फेरे। ३—एक अप्सरा का नाम।

तब नरवद भट अपन,
झुकन दीनों नहि झंडा।
कीनो सुमेरु शंकर तबे,
मथ्थ लइय जिहिं मरद को।
सारंग देव यह नेतसी,
पुत्र वही नरवद को ॥३२६॥

## पुरोहित गोपीनाथ का युद्ध।

दोहा

हात दिखातो स्वस्ति[1] हित, शान्त रस हि के साथ।
खलन दिखाए खग्ग ले, निज बल गोपीनाथ॥३२७॥

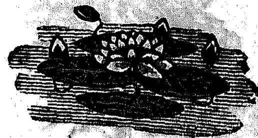


१—मंगल कामना के हित।

# सलूंबर के रावत किशनदास का घायल होना

मनहर

खलन खपाए पल खगन खिलाए खूब,
नारद हँसाए दिखलाए निज कर को।
खप्पर भराए योगिनीन के अरिन खून,
शत्रुन के शीश पहराए बीर हर[1] को।
पारि पारि तुर्कन घपाए क्षेत्रपालन को,
मुख मुरझायो मान कूरम कँवर को।
प्रभुता प्रसारि खग-धार घाव पूर भयो,
कृष्णदास रावत सुबीर सलूंबर को ॥१२८॥



१—शंकर।

# सज्जावत झाला मानसिंह का मारा जाना

### मनहर

मारे मुगलान म्यान पटकि कृपान ही तें,
    दिन में दिखाए तारे मान[1] मान[2] वारे को।
छान छान कूरमन त्रिदिव पठाए बीर,
    पूरन निभायो जिहिं राजपद धारे को।
जानकार आहव[3] को रान को परम भक्त,
    वीरन समान मतिमान प्रन पारे को।
जाइ बैठो पानि गहि रंभा[4] को विमान बीच,
    सज्जावत मान मकवान[5] देलवारे को ॥३२६॥



---

१—कँवर मानसिंह। २—अभिमान वारे को। ३—युद्ध।
४—अप्सरा। ५—मानसिंह झाला।

# केलवे ठाकुर शंकरदास का मारा जाना

मनहर

पिता औ पितामह के पंथ को पकरि पूर,
धूर मे मिलाये म्लेच्छ लीनो लाह लरि के।
झारि तेग कीन च्छय आहव[1] अरिन झुन्ड,
चन्द्रमौलि[2] -चरन सुचित्त ध्यान धरिके।
देश हित प्रान वारि शंकर[3] समर बीच,
अन्तिम विदाई लीनी युद्ध खेत परिके।
अनुज सिधाए साथ रामदास वीर कृष्ण[4],
धारातीर्थ स्नान तें पवित्र देह करि के ॥३३०॥

दोहा

सांगा हित बीदा[5] सुभट, नेता[6] ऊदल हेत
पातल हित शंकर परयो, नरहर पुत्र समेत ॥३३१॥

---

१—युद्ध। २—शंकर महादेव। ३—शंकरदास। ४—कृष्णदास। ५—बीदानामक राठोड। ६—नेतसीह।

## शाहजादा हकीमसूर की शूरता

दोहा

आयो शरनागत यहाँ, मुगलन तें दुख मान ।
खूब लर्‌यो भट खलन तें, सूर[1] हकीम पठान ॥३३२॥

## बच्छावत महता जयमल की शूरता

दोहा

महता बच्छावत[2] मरद, माननीय जयमाल ।
जिहिं पकरी इहिं युद्ध महँ, क़लम ठौर करवाल[3] ॥३३३॥

## महासाहाणी जगन्नाथ की शूरता

दोहा

महासानी कायस्थ कुल, निडर बीर जगनाथ ।
तेग झिली इहिं मिसल[4] तजि, घली अरिन
शिरघात ॥३३४॥

---

१—हकीमसूर शाहजादा । २—बच्छराज का वन्शज ।
३—तलवार । ४—सिरकारी कागज ।

## भीमसिंह डोडिया का मारा जाना

मनहर

सहस्रन भीर को हटाइ के बढायो पांव,
उज्वल दिखाई गिरनार[1] राजधानी को ।
बरछा चलायो सेनापति पै महान बीर,
क्रूर कर्म कूरम के हेत कुरबानी[2] को ।
दैवगति हीते तहाँ शत्रु ने लुकायो तन,
सबन दिखायो तो हू मेदपाट पानी को ।
ऐसो बल जोन भीम डोडिया दिखातो तोतो,
कहते कुतर्की झूठ भीम[3] की कहानी को ॥३३५॥

## भीमसिंह डोडिया का कुल-परिचय

दोहा

महाराना ऊदल समय, यवनन लिय गढ घेर ।
अकबर हठ छूटो नहीं, टूटो नहिं आसेर[4] ॥३३६॥

---

१—गिरनार गढ से मतलब है जहाँ डोडियों की प्राचीन राजधानी थी । २—पशु बलि करना । ३—पान्डु पुत्र भीम । ४—गढचित्तोर ।




डोडिया भीम रणविजय घोड़े सवार सिरदार गढ़ वालों के पूर्वज

आदि अन्त में परि गयो, चार मास को बीच ।
संधी हित होवन लगी, उभय और तें खींच ॥३३७॥
यह विवाद मेटन अरथ, अरि दल बारम्बार ।
आत जात पतशाह पै, यह सांडा[1] सरदार ॥३३८॥
अति परिचय तें एकदिन, अकबर हृदय उदार ।
कहि सांडा तें लेहु कछु, मैं हूं देवनहार ॥३३९॥
या देवे में शाह को, आशय गूढ अपार ।
घाव सराहों शत्रु को, हो अकबर रिझवार ॥३४०॥
शाह विचारिय मांगि है, सांडा प्रान्त महान ।
तो बस ह्वै है भेदिया, यश मम होहि जहांन ॥३४१॥
जो शायद यह युद्ध को, रोकन कहहि सुभाय ।
तो याके शिर देइ के, घेरा लेहुँ उठाय ॥३४२॥
तब सांडा सरदार ने, शाहहिं कह्यो सराह ।
मनइच्छत तुम मोहि को, देवहुं जहाँपनाह ॥३४३॥
अष्ट सहस क्षत्रिय यहाँ, है गढ़ महँ हमगीर ।
मृतक होहिं रनक्षेत्र जब, दग्ध करहु रनधीर ॥३४४॥
अष्ट सहस महँ एक हू, पानी देवनहार ।
रहिहै नहिं रनक्षेत्र टरि, तुम पर दारमदार ॥३४५॥
आशय सांडा को यहाँ, अति गम्भीर दिखात ।
अष्ट सहस के सिर परे, गढ आवहि तव हात ॥३४६॥

[1]—भीम डोडिया के पिता का नाम ।

सांडा के इम वचन सुनि, शाह कहिय शाबास।
बीर भए प्रमुदित बिहद, कायर भए उदास ॥३४७॥
पत्ता जयमल भट प्रगट, अरु वर रावत खान।
सांईदास रु ईशरा, खेत परे बलवान ॥३४८॥
युद्ध अन्त आरज अखिल, जिते मरे जूझार।
दाह करायउ द्विजन तें, अकबर हृदय उदार ॥३४९॥
तिहिं सांडाको यह तनुज, भूरि भाग्य भट भोम।
रन बेला बोलत रहत, जाको सुयश गनीम ॥३५०॥

मनहर

कैसी चित्रकूट की रु बीरन की महिमा है,
जाको इतिहास जग निपट नवीनो है।
वीरांगना सहस्रन जौहर[1] जलाय कर,
सार्थक दिखाय दीनो मरनो रु जीनो है।
जिन्दा निज नारिन को अपने करन जारि,
झरि पर‍्यो भट वृंद रौद्र रस भीनो है।
करिकै दिखाई सांची सांडा ने कही जो मुख,
बीरन को दाह तब अकबर कीनो है ॥३५१॥

१—युद्ध में लड़ने वाले बीरों की विजय की आशा न रहने पर उनकी स्त्रियां जीवित ही जल जाया करती थीं।

दोहा

सांडा ऊदल समय भो, भीमा पातल काल ।
पै प्रसंग वशतें कह्यो, हमने पूरव हाल ॥३५२॥
अब पीछो यहि युद्ध को, हौं कह हौं कछु हाल ।
कैसे आहव[1] स्थगित भो, गे कैसे गिरि माल ॥३५३॥



१—युद्ध ।

## सोन्याणा के सौदा बारहठ जैसा और केशव का काम आना

दोहा

मम प्रपिता मह बन्धु द्वै, जैसा केशव नाम ।
मरे मारि मुगलान को, हरदी घाट हगाम ॥३५४॥

## केशव और जैसा का परिचय

भगवानपुरा रावत सुजानसिंह जी कृत ।

मनहर

बार बार कीनो जिन शीशोदन बारहठ,
लेतो लरि सम्पदा जो विपद बटाने को ।
केउ कुल चत्रिन को हठीले द्रढायो हठ,
म्लेच्छन मुकाबले पै मर मिट जाने को ।
जैसा अरु केशा हठ कीनो त्यों हरिद्री घाट,
घाट खग शत्रुन उतारि स्वर्ग जाने को ।
मान को गुमान छीनो रान हित प्रान दीनो,
बारहठ हठ कीनो पैर न हटाने को ॥३५५॥

—❀—

# नीमड़ी के राठोड़ बाघसिंह का परिचय

## मनहर

घोर घमसान चित्रकूट पे भयद भयो,
शाका[1] हू कहत ताको उदेसिंह काल को।
कन्धे पै चढ़ाय जयमल्ल कों प्रसिद्ध कला[2],
विना उतमंग[3] लर्‌यो भारि करवाल[4] को।
जाहू को सुपुत्र यह बीरन को मौलिमनि,
रंभा को सुघर बीन्द लोभी वरमाल को।
महैचा[5] कमन्ध बाघसिंह को अनमि शीश,
वनिगो सुमेर श्रेष्ठ शंकर की माल को ॥३५६॥

## दोहा

खेत परे अरि पंच शत, त्रयशत घायल तुर्क।
भेद गए भट रान के, त्रयशत मण्डल अर्क ॥३५७॥

---

१—जिस युद्ध में सब के सब मारे जायँ उसका नाम। २—कलाराठोड़। ३—शीश। ४—तलवार। ५—राठोड़ों की एक शाखा।

## रणभूमि का दृश्य ।

मनहर

डाकिनीन झुन्ड रन अंगन फिरत कहूँ.
कहूँ पल चारी जीव लोभ तें लरत हैं ।
घायल रटत परे राम रहिमान कहूँ,
वाह वाह करत कराह के करत हैं ।
लुथ्थन पे लुथ्थ तातै नेंक न फिराव कहूँ,
शोभा बनजारन[1] पराव[2] की हरत हैं ।
झूलन सहित होदा हथ्थिन गिरे है कहूँ,
कहूँ गजगाह युत साखत जरत हैं ॥३५८॥

"

अलका पुरी में अजौंपरो राशि मुन्डन की,
अजों चन्द्रहासन[3] सुवास इतरन की ।
रक्तनाल बहे तातैं धरा ना पटो है अजौं,
दीखत है लाल लाल अजौं भूमि रन की ।
घोर घमसान रच्यो पातल हरिद्री घाट,
पीर ना मिटी है अजौं शेष[4] के फनन की ।
साल प्रतिसाल टाल टाल के निकाल कर,
अजौं चन्द्रभाल[5] खाल ओढत गजन की ॥३५९॥

---

१—बालदिये । २—बालदियों के ठहरने की जगह । ३—तरवारें । ४—शेषनाग । ५—शंकर ।

# रण के अन्त में महाराणा का लौटना

दोहा

ऐसो हलदी घाट पर, घोर मच्यो घमसान ।
ललच्यो रवि आहव लखन, लच्यो[1] नहीं महरान ॥३६०॥
एते महँ दुहुँ ओर तें, मद अति झरत मतंग ।
कैधों कुमर अरावली, जुरे पच्छ ले जंग ॥३६१॥
रामप्रसाद महाबली, रन-मदार गजराज ।
गजमुक्त रूलूणा गयँद, भिरे करत अति गाज ॥३६२॥
तिहीं बेर दुहुँ तरफ तें, भयो थकित रन भीम[2] ।
चाहत थे विश्राम चित, अपने और गनीम[3] ॥३६३॥
पकरयो रामप्रसाद पुनि, शाही दल संचाल ।
किधौं दैत्यगन ने गह्यो, प्रबल एक दिगपाल ॥३६४॥
सो पठयो पतशाह पै, यह गज करि आधीन ।
बिजय चिन्ह बतलान कों, कूर्म चातुरी कीन ॥३६५॥
पकरन रान प्रताप कों, कीनों कूरम कोल[4] ।
पठयो तातें गज पकरि, बीर निभावन बोल ॥३६६॥
रह्यो नाम या द्विरद को, पहिले रामप्रसाद ।
पहुँचत ही पतशाह ने, पुनि दियपीरप्रसाद ॥३६७॥

१—लचकना, नम्र होना २—भयंकर। ३—दुशमन। ४—प्रण।

# युद्ध का स्थगित होना और दोनों फौजों का लौटना

## दोहा

प्रविशत डेरन में लखे, शाही सुभट निशान।
पातल हू तब पलटिके, आए अद्रिन[1] थान ॥३६८॥
जेष्ठ मास दुपहर समय, ऐसी बरसत आग।
जरन लगे सब नरन के, दारुन ताप दिमाग़ ॥३६९॥
समर अमित सुभटन सहित, पातल बढ्यो पहार।
मग थाहर लीनो मयँद[2], मनहु गयंदन मार ॥३७०॥
सुनियत शाही सेन को, खान पान सामान।
लीनो भीलन लूट के, मन दीनो दुख मान ॥३७१॥
चेटक घन घावन चुवत, त्योंही हिन्दुन छात।
छे इक्कन[3] प्रछन्न गति, चली रान पर घात[4] ॥३७२॥



१—पहाड़। २—सिंह। ३—सैंकड़ों में से चुने हुए योधा। ४—प्रहार।

## शक्तिसिंह के हृदय में भ्रातृ-प्रेम का उफान।

दोहा

वर्तमान के क्षत्रिवर, सुनहु चित्त करि शान्त।
सुभट बीर सगतेश को, बरनो कछु वृतान्त ॥३७३॥

## एक स्थल पर खड़े हुए शक्तिसिंह के मन की गति।

मनहर

एक ओर वादी[1] है विरोध आन ठाढो भयो,
भ्रातृ-प्रेम ठाढो प्रतिवादी[2] एक ओर है।
एक ओर खरो कटु-वचन गवाही देत,
एक ओर धर्म काट करत करोर है।
न्यायाधीश[3] बुद्धि के विशाल उर न्यायालय,[4]
ऐसी झक झोर मची तहाँ दुहुँ ओर है।
वादी हो विरोध सो तो नाहक फजीत भयो,
भ्रातृ-प्रेम जीति गयो प्रतिवादी जोर है ॥३७४॥

दोहा

देखी इस घटना दुखद, बीर शगत तिहीं बार।
पूरन बान्धव प्रेम को, उमड्यो सिन्धु अपार ॥३७५॥

---

१—मुद्दई। २—मुद्दायला। ३—हाकिम। ४—कचहरी।

सुभट वीर शगतेश को, जबै खून किय जोश।
भजे एक छिन में तबहिं, रोष दोष सौ कोस ॥३७६॥

सवैया

कटु बोलन[1] तोमर[2] को न गिने,
हठ-लंगर[3] को अब मानत है।
अमरोष अलान[4] तें छूटि गयो,
नहिं अंकुश वैर प्रमानत है।
ममता हित कारिणी हीय जमी,
जिय की गति की जिय जानत है।
अब बांधव प्रेम मदान्ध भयो,
मन मेरो मतंग न मानत है ॥३७७॥

दोहा

मन अग्रज[5] चरनन लग्यो, शुचि हित जग्यो स्वदेश।
चढ़ि नाटक[6] पर भट चल्यो, सत्वर गति शगतेश ॥३७८

सवैया

हम जानि रहे मनिहौंन कभी,
मननौ अब काको मनावनो है।

---

१—कड़ुवे बचन। २—भाला। ३—डगबेड़ी। ४—हाथी का ठांन। ५—बड़े भाई। ६—नाम का घोड़ा

जब आनि बनी इम बान्धव पै,
मन को अब का मुकरावनो[1] है।
सगतेश कहै अब तो जियरा,
नहिं मातु को दूध लजावनो है।
कोउ धर्म गिनो कि अधर्म गिनो,
अब प्रेम कै पंथ पै धावनो[2] है ॥३७९॥

,,

भव[3] बीच सदा निज आतन को,
यह कैसो सम्बन्ध सुहावनो है।
वह दूर रहे सुख सम्पति में,
पर भीर परे मिल जावनो है।
जब बान्धव पै अरि आन चढ़े,
तब कैसे बने टल जावनो है।
कोउ धर्म गिनो कि अधर्म गिनो,
अब प्रेम कै पंथ पै धावनो है ॥३८०॥

,,

हम आपस में झगरैंगे तऊ,
कहा शत्रुन को दिखलावनो है।
इन चोरन जारन तेंकि कहा,
भुवि मातु को चीर खिंचावनो है।

---

१—मोड़ना। २—चलना। ३—संसार।

जब लागत है कुल दाग जहाँ,
तब क्यों न तहाँ मर जावनो है।
कोउ धर्म गिनो कि अधर्म गिनो,
अब प्रेम के पंथ पै धावनो है ॥३८१॥

"

खल संभव पूगि गए उनको,
अब कौन अरातिन[1] को अटके।
अब तुर्कन तीय उछाह करो,
सब मेट भए तुमरे खट[2] के।
कब जाय परौं प्रभु पायन में,
कब जाय लगौं उनके घट[3] के।
सब बात गई पर हाय दई,
पर[4] क्यों न दिए हय नाटक के ॥३८२॥

शक्तिसिंह का इक्कों को देखना।

मनहर

ऐते महँ देखत अरिन सगतेश बढ्यो,
पथ्थ धनु बान कढ्यो जैसे जय[5] रन में।
मानो कपिलेश मुख आप की अवाज उठी,
थाप उठी केधोसिंह शावकी[6] गजन में।

१—शत्रु। २—धोका। ३—हृदय। ४—पांख।
५—महाभारत। ६—बच्चे की।

हुताशन मेल तें हजारों मन राल उठी,
पलक ऊठी के चन्द्रभाल की मदन में।
धधक विशाल उठी हृदय में शाल उठी,
आँख ह्वै प्रवाल[1] उठी झाल उठी तन में ॥३८३॥

शक्तिसिंह का इक्कों को मारना।

मनहर

वीर सगतेश जूकी इक्कों पे कृपान बही,
जैद्रथ पे भल्ल बही मानो पानि नर[2] तें।
योगिनीन झुन्ड आय अचानक नाच उठी,
हूरन के राच उठी मँहदी प्रखर[3] तें।
आमिष अहारिवे को प्रेतन को पुँज उठ्यो,
गुञ्ज उठ्यो अन्तरिच्छ हास हरहर तें।
धरतैं अलग ह्वै के शिरधर परे मानो,
गिर परे खप्पर फकीरन के कर तें॥३८४॥

महाराना का शक्तिसिंह को देखना।

दोहा

पुनि देख्यो शीशोद प्रभु, खेह[4] उडत खुरतार।
कर चमकावत कुन्त[5] को, आवत कोउ असवार॥३८५

१—मूँगिये। २—अर्जुन। ३—तेज। ४—गिरद
५—भाला।

ऐते महँ पहुँच्यो अनुज, शक्ति सिंह शरमात।
बिना बुलायो व्यक्ति कउ, ज्यौं पर घर में जात॥३८६॥

## महाराना और शक्तिसिंह का मिलाप

### मनहर

आगे को बढ़त दुहुं भाइन जुरत दीठ,
शान्त बीर रस वारी लहरें उमड़गी।
इतको अपार भयो रान अकूपा को भय,
उतै प्रति [1]हिन्सा की विचार शक्ति मढगी।
ऐते महँ छोरि सकतेश गहि लीनै पांव,
बहुत स बेग तै दुहुघां प्रीति बढगी।
टूटिगई दोउन की तरक तरक कसें[2],
कुरख[3] दुहूँन की करेजा छोरि कढगी॥३८७॥

### घनाक्षरी

बान्धव उभय चिर कालसों सप्रेम मिले,
पूरन सनेह सो दुहूघां हिय भरकर।
मिलन उछाह सों दुहूघां भयो मोद मन,
दोऊ पछतात गत[4] क्रोध कों सुमर कर।
सुभट दुहूघां स्पष्ट बैन न उचारि सके,
नेह के प्रवाह तैं दुहूँघां अश्रु ढर कर।

---

१—बदला। २—अंगरखे की कसें। ३—कसक। ४—पिछला।



महाराणा के अनुज ( सक्तिसिंह ) का आ मिलना व चेटक का अवसान

प्रेमको पयोधि भर्‌यो छिन में उझल पर्‌यो,
पांव सगतेश पर्‌यो पाहि पाहि कर कर ॥ ३८८॥

दोहा

काके ये हय नृप कहिय, हैं असवार विहीन ।
खुरासान मुगलान के, है इक्कन तें लीन ॥३८९॥
कहिय रान इक्के कहां, हय किम लीने छीन ।
तव प्रदत्त तरबार ने, कीने मोक्ष अरीन ॥३९०॥

---

महाराना और शक्तिसिंह का सम्वाद ।

शक्तिसिंह क्षमा प्रार्थना कर रहा है ।

शक्तिसिंह—

सवैया

दल शत्रुन के महँ जाइ मिल्यो
प्रभु पूगि गयो पथ पाप के हूँ ।
नहि मालिक को प्रिय दास भयो,
बदमाश भयो निज बाप के हूँ ।
नहि लायक बन्धु प्रताप के हूँ,
वध योग्य कि पात्र में आप के हूँ ।
तुम कोप कृपा मन है सो करो,
अब तो शरणागत आपके हूँ ॥३९१॥

प्रताप—

"

जाहि को राम कियो अपमानन
मेरे कुवाक्य तें आत सिले[१] हो।
वे तो रहे निशिवासर औधमें[२],
संकट में तुम आन मिले हो।
कैसें सराह करौं मुख ऊपर,
प्रेम के पंथ तें नाहिं टले हो।
रान कहे सगतेश सुनो तुम,
भर्त हुते वहु अंश भले हो॥३६२॥

शक्तिसिंह—

"

मैनाक[३] भए हमतो तजि कें,
महारान उदार सदा मलयागिर।
हम औगुन रास रहे अवनी,
गुन आगर अग्रज वन्श उजागर।
यह चाकर तो महा मूढ मती,
नर वीर दिवान बड़े नयनागर[४]।
हम गागर[५] तुच्छ भरे झलके,
प्रभु आप भरे रतनाकर सागर।

१—विंधे हो। २—अयोध्या। ३—पर्वत जो इन्द्र के डर से समुद्र में जा रहा था। ४—चतुर। ५—घड़ा।

प्रताप—

तुमरे बहुसद्गुन की[1] महिमा,
हमरे ढिग शब्द नहीं कहिवे को।
अपकार बिसार रु दौरि परे,
हमरी सब भांति भली चहिवे को।
जग में प्रिय बान्धव जन्म लियो,
तुमने रथ धर्म धुरी बहिवे को।
हमरी कटु आदत कों शकता तुम,
भ्रात समर्थ भए सहिवे को ॥३६४॥

शक्तिसिंह—

नहिं को विद्‌हों पटुतान[2] लहो,
प्रभु जन्म हुको बहु बावरो हूँ।
गृह फूट बतावन शत्रुन कों,
अधिनायक पूर्न उतावरो हूँ।
सब पापिन को सिरदार सदा,
तरणी अघ खेवन नावरो[3] हूँ।
दुख आकर[4] हौं झगरा करहौं पर,
आखिर चाकर रावरो हूँ ॥३६५॥

प्रताप—

रावन को करि दीन[1] विभीषण,
राम हुँ सो मिलके कुल खातमा[5]।

[1]—पास। २—चातुरता। ३—केवटिया। ४—खांन। ५—नाश।

बालि मराइ दियो सुगरीव ने,
ताल[1] बताइ बिंधाय के सातमा।
पारथ तीच्छन बान प्रहारि कें,
कर्न की काढि दई शुचि आतमा।
लोक उन्हें धरमातमा बोलत,
क्योंन कहेंगे तुम्हें वे महातमा ॥३९६॥

शक्तिसिंह—

रावरे नाम प्रसिद्ध भयो पुनि,
रावरे नाम तें किर्ती कमाई।
दीन के बान्धव देश विदेशन,
रावरे नाम हि तें जय पाई।
आदर मान सबै ही प्रमानत,
जानत रान प्रताप को भाई।
दास को ना पुरषारथ है,
सब रावरे नाम हि की प्रभुताई ॥३९७॥

प्रताप—

जिहिं वृत्त की शाखन[1] सुन्दर है,
तिहिं की जग क्यौं न गिने गुरुताई[2]।
बुरजें जहि दुर्ग की उन्नत[3] है,
तिहिं की पुनि क्योंन मने दृढ़ताई।

१—ताड़ वृत्त। २—शाखे। ३—बड़ाई।

खगराज की पांख सजौर सदा,
तिहिं तें मिलि देवन दीन बड़ाई।
तुमरे सम बान्धव हैं जिहिं के,
तिहिं नाम की क्योंन बढ़ै प्रभुताई ॥३६८॥

"

मित्र मिले रु कलत्र[1] मिलै पुनि,
अत्य[2] मिलै मन भावन सांई।
मांन मिले सनमांन मिलै अरु,
आंन मिलै धन रास गमाई।
राज मिले सुख साज मिलै महा,
राज असंभव हू मिलि जाई।
भक्ति किए भगवान मिलै पर
शक्ति[3] समान मिलै नहिं भाई ॥३६६॥

शक्तिसिंह—

"

जग में हम जन्मि कें कीन कहा,
इहि तें वरु बाजती मातु निपूतो।
निज देश तें द्रोह कियो हमने,
इहि तें बढिया कहा होहि कपूती।

---

१—ऊँची २—श्री। ३—दास ४—शक्तिसिंह।

महाराज कृपानिधि आपहु की,
सब भांति सराहन जोग सपूतो।
जग भूपन वृन्द तलाक[1] दई वह,
राखि लई तुमने रजपूती ॥४००॥

प्रताप—

अपनी इकलिंग निभावहिंगें,
हमने यह टेक कठोर गही है।
नहिं छोरत तुर्क निजी हठ को,
जिहिं ने करि दीन निछत्रि मही है।
हमरी गति तो तुम वीरन तैं,
यह जानहू बात नितान्त सही है।
अपने कुल की सब गौरवता,
तुम बन्धुन के रखिवे तैं रही है ॥४०१॥

## कवि वचन

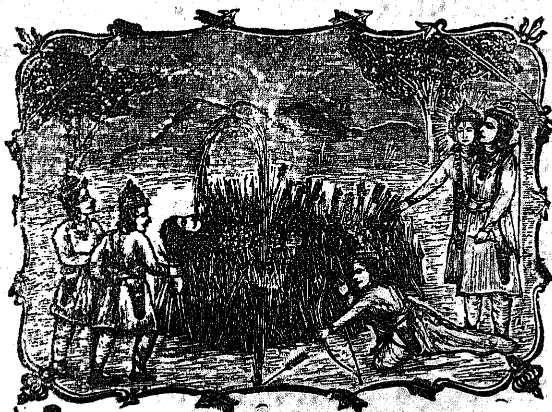
### सवैया

कैसे बिरोध कियो इनने अरु,
का विधि प्रेम तें प्रीति विशेष की।

---

१—त्याग देना।

कैसे तजी निज जन्म मही अरु,
कैसे सहाय करी फिर देश की ।
'केशव' आखिर संकट में किम,
भीर भरी[1] परताप नरेश की ।
आर्य कहा रु अनार्य[2] कहा सब,
सीखिये सज्जन ता सकतेश की ॥४०२॥



१—मददी । २—अहिन्दु ।

# चेटक की मृत्यु और महाराणा का शोक ।

दोहा

पुनि देख्यो पग तुरग को,
कटिगो लागि कृपान ।
पातल ऊपर पवि[1] पर्‌यो,
किधों गिर्‌यो असमान ॥४०३॥
जिनके तुरकन जारिवे, आगि रहत उगलांहि ।
अति भरिगो जल आज उन, लोयन कोयन मांहि ॥४०४
पातल को सक्तेश पुनि, बहुबिधि कीन प्रबोध ।
प्रभु शौभित नहिं आपको, शोक इतो शीशोद ॥४०५॥
कैतो दुख भ्राता कहूँ, इहिं मेरो मन अश्व[2] ।
चेटक के पीछे गयो, सब ही जनु सरबश्व ॥४०६॥

मनहर

कहत प्रताप हम आश्रय बिहीन भए,
छीले गए यकृत[3] महान सोक छाए तैं ।
यवन रंगीले भए मान सुरखीले भए,
मेरे तनु कीले दए तेरे बिनु पाए तैं ।

१—वज्र । २—घोड़ा । ३—कलेजा ।

तुरक जसीले भए मुख चमकीले भए,
मित्र मन गीले भए विजय गमाए तैं।
मनोरथ ढीले भए मेरे अंग पीले भए,
हाय नीले[1] तेरे आज स्वरग सिधाए तैं ॥४०७॥

"

हाय हय चेटक तुम्हारे धर पोढन तैं,
मेरो हिय आज एक बारगी सहमि[2] गो।
आज असमान तें अचिन्त ही परी है गाज[3],
आज मम गांठ तें अमूल्य रत्न गुमिगो।
पातल कहत धर्म जंग बदरंग भयो,
आज तुर्क उरमे उमंग रंग जमिगो।
साहस के सागर की तूटि गई आज पाज,
मेरी जय जू को ध्वजदंड आज नमिगो ॥४०८॥

"

तुमुल[4] हरिद्रीघाट भयानक जंग भयो,
दुहूँ ओर तेगन की मची व्हां झरा झरी।
वाही बेर कीनो मेरी जीवन जरी पे वार,
करी[5] घातकीने हाय कैसी दुष्टता करी।

---

१—चेटक घोड़े का रंग सफेद था। २—घबराना। ३—बिजली। ४—युद्ध की अधिक भयंकरता प्रमाणित करने के अर्थ एकार्थ वाची 'तुमुल और' भयानक शब्द की पुनरुक्ति की गई है। ५—हाथी।

स्वामी पहुँचायो त्रयपांव इक कोस तोहू,
तुरंग हमारे पर कितनी कृपा करी।
लोक में रहेगें परलोक हू लहेंगे तोहू,
पत्ता भूलि हेंगे कहा चेटक की चाकरी ॥४०९॥

"

मैंतो भो अधीन सब भांति सों तुम्हारे सदा,
तापै कहा फेर जयमत्त ह्वै नगारो दे।
करनो तू चाहे कछु और नुकसान कर,
धर्मराज मेरे घर एतो मत धारो[1] दे।
दीन होइ बोलत हूँ पीछो जियदान देहु,
करुना निधान नाथ ! अबके तो टारो दे।
बार बार कहत प्रताप मेरे चेटक कों,
एरे करतार ! एक बार तो उधारो[2] दे ॥४१०॥

दोहा

ग्राम बलीचे के निकट, चेटक गो सुरधाम।
ताको स्मारक चिन्ह तहँ, अजहु खरो अभिराम ॥४११॥
वही ग्राम वर विप्र को, पातल कीन प्रदान।
तातैं होवत तुरग की, पूजन विधि परमान ॥४१२॥

---

१—धाड़ा डाका। २—कर्ज।

# शक्तिसिंह का सेनापति से वैमनस्य होकर महाराणा से आ मिलना ।

दोहा

चढन अनुज नाटक[1] परसु, चढ्यो रान परताप ।
इक्कन दागल अश्व पर, चढनो मानत पाप ॥४१३॥
रन सम्बन्धी बात करि, बिछुरे दुहुँ बलवान ।
सगत तुरुष्कन[2] सैन गो, कुँभल गढ महारान ॥४१४॥
शक्तिसिंह सों सैनपति, सत्वर कीन सवाल ।
कहां गए इक्के कहहु, है जो निश्चय हाल ॥४१५॥
कही सकत इक्कन कों, मारि लिए महारान ।
बन्धु जान मेरो बहुरि, पता न लीनो प्रान ॥४१६॥
क्रोध युक्त सैनप कही छल बल छुप्यो छिपैन ।
कहे देत हैं आपके, निज करतब को नैन ॥४१७॥
कह्यो मान पुनि क्रोध करि, कहाँ नाटक सगतेश ।
हमकों रहे भ्रमाइ तुम, बात बनाइ विशेष ॥४१८॥
बोल उठ्यो सगतेश तब, भुज जिहिं भारत भार ।
संकट में तिनसों सुनहु, कैसें करौं किनार ॥४१९॥

---

१—शक्तिसिंह के चढ़ने के घोड़े का नाम । २—तुर्क ।

सैनप कहि मम सेन तैं, करि जावहु तुम कूँच ।
मिल्यो सगत महरान तै, सुपहन[1] सहित समूच ॥४२०॥

दोहा

युद्ध बाद दुहुँ दलन अब, रहि कीनो कहा रंग ।
पुनि कहहुँ जो छूटिगो, पीछो वही प्रसंग ॥४२१॥
आहव हरदी घाट इत, जिते मरे जोधार ।
अन्त कर्म कीनो सबन, अपने मत अनुसार ॥४२२॥
महाराना पातल मुररि, आप सदल इत आय ।
घाव सिलाए घायलन, कालोड़े[2] महँ जाय ॥४२३॥
कढि हैं इहिं गिर तैं किधों, वहिं तें कढिहैं आय ।
पातल को यवनान पै रह्यो हृदय भय छाय ॥४२४॥
और साह अजमेर तैं, किय आगरे पयान ।
मुगलन दल कछु मुदित भो, मन में इम जय मान ॥४२५॥

## हलदीघाटी से बची हुई शाही फौज का गोघूंदे जाना ।

दोहा

शत्रुन-दल रणभूमि सों, गो गोगूंदे ग्राम ।
पातल राना पकरिवे, करिवे शाही काम ॥४२६॥

---

१—भटन । २—कालोड़ा ग्राम का नाम जो हलदी घाटी से एक कोस पर है ।

## गोघूंदे के आदमियों का शाही फौज के हाथ मारा जाना।

दोहा

महलन हित महारान के, सुरमन्दिर रच्छार्थ।
मरे वीस आरिय मरद, करि स्वारथ परमार्थ ॥४२७॥
अमित अमीरन को यहाँ, रह्यो छाय भय पूर।
राना अपनी सेन पे, धावा[1] करहिं जरूर ॥४२८॥
तातैं तुरकन चौतरफ, खाई लीन खुदाय।
सो ताकूं लंघ रू सहज, अरी सके नहि आय ॥४२९॥
अरु ऐसी गति ग्राम के, बनवाई दीवार।
कोऊ ताकों कूदि कें, सके न आय सवार ॥४३०॥
करि प्रबंधलिय याहि क्रम, तब कछु भए निचिंत।
तऊ स्वप्न आवत रहत, अरध रात्रि के अन्त ॥४३१॥
सैनप कहि फिर सेन की, सूची[2] करहू तैयार।
मरे किते रन खेत महँ, गज भट अरु तोखार[3] ॥४३२॥
सैयद अहमद खान कहि, कहा खास यह काम।
मानि लेहु गज नर तुरग, को उन आए काम[4] ॥४३३॥
या बिरियां फहरिस्त यह, कछु नहिं रखत सबंध।
खाने के लाले[5] परे, ताको करहु प्रबन्ध ॥४३४॥

१—हमला। २—फहरिस्त। ३—घोड़े। ४—मारे गए।

यहाँ पहारी प्रान्त महँ, अल्पधान पैदास।
बनिजारे आवत नहीं, सोचहु जरिया खास ॥४३५॥
यह सुनि लावन रसद हित, चढ़े सवार अनेक।
पै इन सैनिक नरन को,चल्यो उपाय न एक ॥४३६॥
लूटि लई भीलन रसद, हरदी घाट हगाम[1]।
तातैं तुरकन असन[2] को, मिल्यो नहीं आराम ॥४३७॥
घाटिन घाटिन पै कियउ, पातल भटन प्रबंध।
इतउत नहिं डिग सकत अरि, भई प्रगति सबबंद॥४३८॥
परे पहारन में रहत, मुगल बिहाय[3] मरोर[4]।
मानो कैदी रहत है, ज्यों दरियाईशोर[5] ॥४३९॥
जैसे उपजे ज्ञान के, तन इन्द्रिय शिथिलात।
तैसे शैल[6] नमें तुरक, परेरहत दिन रात ॥४४०॥
परे रहे चवमास[7] पुनि, शाही सेन सिपाह।
आमिष तैं अरु आम,तैं करत रहे निरवाह॥४४१॥
तातैं सैनिक भट तहाँ, बहुत परे बीमार।
इनको अति महँगी परी, राना कीका रार ॥४४२॥

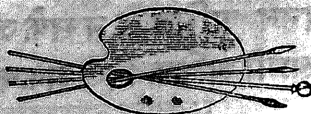
— —

१—युद्ध । २—भोजन । ३—त्यागना । ४—ऐठ। ५—कालापानी। ६—पहाड़ों में । ७—चातुरमास।

# आसिफखां काजीखां मानसिंह आदि अफसरों को अकबर का वापिस बुला लेना।

दोहा

चार मास के समय में, कर न सके कछु काम।
लीनी शाह बुलाय तब, शाही सैन तमाम ॥४४३॥
आसिफखां अरुमान की, शाह बिना इनसाफ।
करि दीनी अति कुपित ह्वै, महलनडोढी माफ ॥४४४॥
कहिय शाह गफलत करी, तुम रन बेर तमाम।
कढिगो जाते कैलपुर, याको यहीं इनाम ॥४४५॥
इहीं दोष दीनो बहुरि, चुगलन के परि फंद।
तुमने सैनिक अशन को, कीनों कछुन प्रबंध ॥४४६॥
बहुत मास लों बीरबर, गए नहीं दरबार।
मिल्यो हुकम पुनि मुदत सों, दुहुँ आवनसिरदार॥४४७॥



# शाही सेन के वापिस लौट जाने पर महाराणा का सिरोही सुरताण व ताजखां आदि को अपने पक्ष में मिलाना

दोहा

जब शाही दल कूँच किय, मुलक छोरि मेवार।
करन पक्ष अपनो प्रबल, पातल कीन बिचार ॥४४८॥
ताजखांन जालोर को, सीरोही सुरतान।
नाम नरायण दास नृप, ईडर पति मतिवान ॥४४९॥
इनको अपने पक्ष में, लिय मिलाय कहलात।
शाही थाने जेर किय जे प्रदेश गुजरात ॥४५०॥
सेन सभी शीशोद पर, सुनत यही पतशाह।
तरसूखां हाशम तुरक, रायसिंह[1] मरुराह[2] ॥४५१॥
ताजखान सुरतान भो, पुनि अकबर आधीन।
रह्यो नरायणदास रुपि, पातल पक्ष प्रवीन ॥४५२॥
उद्यम किय यवनन अमित, ले न सके जय लाह।
इहि सुनत हि लागी अधिक दिल अकबरके दाह[3] ॥४५३

---

१—जोधपुर के राजा चन्द्रसेन का तीसरा पुत्र। २—मारवाड़ के रास्ते से आया। ३—प्राण।

## मनहर

प्रथम चढाइ शाह  निष्फल बिलोकि कर,
रोम प्रति रोम ज्वाला निकरन लागी है।
मानो शेर बब्बर को अचानक बोल दीनो,
किधों सोर गंज में लगाय दीन आगी है।
पान्डुन पैं कैधों अश्वत्थामा को प्रकोप भयो,
किधों नागकारे की विशाल पूँछ दागी है।
किधों यमराज महा बिकट चढाई भौंह,
किधों कुँभकर्ण की अपक्व नीन्द जागी है ॥४५४॥



## पातशाह का आगरे से कूँच।

दोहा

पुनि आश्विन में उर्सपर,[1] हिय मह जारत[2] हेर।
पात शाह फिर पलटि के, आयो गढ अजमेर ॥४५५॥
कुतबुद्दीन कलीजखां, महमुद आसिफखान।
इनको गढ अजमेर तैं, कियो शाह फरमान ॥४५६॥
तुम झट जावहु सब तुरत, मुलक वहीं मेवार।
पकरहु रान प्रताप को, मिलिके डारहु मार ॥४५७॥
कुतबुद्दीन कलीजखां घोर कियो घमसान।
पै सब भांति परास्त ह्वै, पीछो कियो पयान ॥४५८॥
करिहौं में जिहिं काम कों, किंकर करि सकिहैंन।
यहिं उधेर-बुन में रहत, अकबर सदा अचैन ॥४५९॥
सोरह सौ पैंतीस पुनि, मेचक कार्तिक मास।
मुगल आय मेवार मँह, अकबर करि जय आस ॥४६०॥

मनहर

पातल को प्रबल बिलोकि बस कर्न काज,
वीर समराट को अथाह रोष बाढो है।
कारागृह डारों के अवश्य मार डारों रान,
गर्व उर धारि कें विचार कीन गाढो है।

---

१—उर्स का मेला जो अजमेर में होता है। २—यात्रा।

'केसव' कहत धर्मराज को प्रचारे कौन,
कवन अरोगे भट संखिये को काढो[1] है।
मुगलन सुयोधन को फुरत कछू न यत्न,
रान दृढ धर्म है विराट रूप ठाढो है ॥४६१॥

दोहा

मिस शिकार षट मास लों रह्यो यहाँ सम्राट।
पकर न सक्यो प्रताप कों घर न सक्यों कछु घाट॥४६२॥
किती बेर पातल निकट अकबर निकर्‌यो आय।
रन पण्डित महारान पे, तऊ न चल्यो उपाय ॥४६३॥
मन अकबर मुरझाइ के पीछो कियो पयान।
आये ऊतर गिरन तैं मेंदपाट महारान ॥४६४॥



१—क्राथ।

# मेवाड़ में होकर शाहीलश्कर का जाना बन्द करने पर अकबर का क्रोध और महाराना के पकड़ने को शाही फौज का आना

दोहा

मेदपाट ह्वै जात हो, अकबरपुर[1] को राह ।
सूरत[2] को आवागमन[3], कियउ बन्ध नरनाह ॥४६५
सुनत खबर पतशाह ने, शीघ्र पठाई सेन ।
सदा रहत अफसरन को, नहीं रात दिन चैन ॥४६६॥
मान और भगवंत नृप, खानाखान नवाब ।
मीर बहर कासिम मरद, इन पग दियउ रकाब ॥४६७॥
अरु सूबा पति भट बहुरि, मिलि आए मेवार ।
पकर न सके प्रताप को, गे सब बदन बिगार ॥४६८॥
राना के उमराव गन, बहु मिल कें इक बेर ।
शाही सेना सबन कों करि हल्ला लिय घेर ॥४६९॥
मिरजा खानाखान के, हतो जनांना साथ ।
अमरकुमर गहि आनयो, खरी रखन भुवि ख्यात॥४७०

---

१—आगरा । २—सूरत शहर । ३—आना जाना ।

उमरावन कीनी अरज, प्रभु पातल ढिग पेश ।
तुरकन तिय हित करत है, आप कहा आदेश ॥४७१॥
कहिय रान इन तियन को, रखि उत्तम वरताव ।
पीछी पठवहु पतिन पहँ, भट तुम शुद्ध सुभाव ॥४७२॥

मनहर

मिरजाखां मानसिंह कासिमखां आदि बीर,
आए थे प्रबीर गहिबे कों महारांना को ।
ऐसो भाव जान भट रांन खग तोल उठे,
बोलि उठे सुजस प्रताप बीर बाना को ।
शत्रुन की इच्छा तें नितान्त विपरीत भई,
आन भई ठाढी है चढाए बुरकाना[1] को ।
कौंर अमरेश के पवित्र कैदखाना बीच,
खाना नौश करत जनाना खानखांना को ॥४७३॥

लीनो हो पकरि खानखाना को जनाना पर,
पीछो पठवायो करि उत्तम प्रबन्ध है ।
कौन महारान जैसो भूप मरियादा पाल,
'केसव' अगाध सदाचार को समन्द है ।
उपमा गहूं मैं कलिकाल को कहूँ मैं राम,
लहै ना अत्युक्ति रंच तउ मेरो छन्द है ।

१—मुसलमान परदेनशीन स्त्रियों के ओढने का वस्त्र ।

रान परताप को पवित्र व्यवहार देखि,
इन्द[2] होत कुन्द[3] शरमन्द होत चन्द है ।।४७४।।

दोहा

या घटना के बाँद तैं, मिरजा खानाखान ।
रह्यो जिते जानत रह्यो, अपने पर अहसान ।।४७५।।
उभय बीर अरु कवि उभय, मतिबल उभय महान।
धन्यवाद के पात्र दोउ, राना खानाखांन ।।४७६।।



१—इन्द्र । २—रंजीदा ।

# महाराणा पर चतुर्थ बार फौज की चढ़ाई।

दोहा

सोरह सो तैतीस पुनि, आश्वनि मास उजाल।
नष्ट करन परताप को, सैना सजी बिशाल ॥४७६॥
बड़े बहादुर अरु बली, रुस्तम[1] से समराथ।
ऐते भट भेजे यहाँ, शाहबाज के साथ ॥४७७॥
कुँवर मान कछवाह अरु, दूजो भगवंतदास।
पायन्दा भट मुगल पुनि, आए मिलि जय आस ॥४७८॥
कासिम हासिम कटि कसी, सैयद राजू साथ।
उगल असदखां तुर्क इन, घली रान पर घात ॥४७९॥
गाजीखां रु शरीफखां, मिरजा खाना खान।
इब्राहिम भट शेष मिलि, अरु गजरा चहुआन ॥४८०॥
शाह सेन मिल करि सबन, ग्रह्यो केलपुर ग्राम।
करि दीनो हल्ला कुपित, कुम्भलगढ़ जय काम ॥४८१॥
बिकट पहारन बीच है, यह कुम्भल आसेर[2]।
करनों जय अति कठिन है, सद्रश कंठा शेर[3] ॥४८२॥

१—प्रसिद्ध पहलवान जो मुसलमानों में हुआ था। २—गढ़।
३—सिंह।

तातें मिलि छत्रिन तुरत, किय हल्ला करि कोप ।
कछुक काल लों कलह[1] में, रहे मुगल पग रोप ॥४८३॥
पहिलें हरदी घाट पर, पकरयो रामप्रसाद[2] ।
इत पकरे चव फील[3] यहाँ, अरिगन रक्खन याद ॥४८४॥



१—युद्ध । २—प्रसिद्ध हाथी का नाम । ३—हाथी ।

# महाराणा की फौज में रसद का बन्ध करना ।

दोहा

पै अब शाही सैन ने, पूरन कियो प्रबन्ध ।
गोडवार मेवार तै, भई रसद सब बंध ॥४८५॥
शाहबाज हासिम सुभट, सझि दल नयो शिपाह ।
घेरि लयो कुम्भल दुरग, रोकि दयो निज राह ॥४८६॥
तोप चढ़ाई गढ़ तुरत, फूटि गइ इक फेर[1] ।
मनुज किते महारान के, मरिगे कुम्भलमेर ॥४८७॥
सुनियत जिहिं गिरि शृंगतै, तोप फटीविधिरेख[2] ।
तिहीं हरामी[3] टेकरी, कहित अजों कितेक ॥४८८॥
नठिगो पहिले ही निपट, गढ़ महखान रूपांन ।
अब जरिगो आघात यहीं, सब रन को सामान ॥४८९॥
कछुक काल घेरा रह्यो, पातल कह्यो प्रसिद्ध ।
यों दुख सहनो नहिं उचित, रहनो गढ़ अवरुद्ध ॥४९०॥
पहिले रानन के समय, देते अरर[4] जराय ।
छुधित त्रषित रहि बहुत दिन, पुनि कढते दुखपाय॥४९१॥
रसद बन्ध कर देत रिपु, बाहिर राख प्रबन्ध ।
पुनि आखिर कढनो परत, अति जय देन अरिन्द॥४९२॥

१—फायर । २—विधाता के लेख । ३—हरामटेकरी ।
४—किंवाड़ ।

महाराणा पातल सुमति सबन कही समुझाय ।
रहि बाहिर लरनो रिपुन, उत्तम यही उपाय ॥४६३॥
गढ़ तातें सिरदार गन, तजहू आप तुरंत ।
अरु खुलाय देहु अरर[1], चितभट राखि निचिन्त ॥४६४॥



१—किंवाड़ ।



रावत दूदा सांगावत ( चूंडावत ) देवगढ़ वालों के पूर्वज

# देवगढ़ रावत दूदा का पराक्रम।

मनहर

अरर[1] खुलान महारान का हुकम चला,
इतकों विमान चला देवन अकाश तैं।
इतकों हरोल[2] महँ सांगावत[3] धीर चला,
योगिनीन झुँड़ चला इतें रक्त आस तैं।
धरनि धुजात इत ब्रन्द उमराव चला,
नारद मुनिन्द्र चला इतें अट्टहास[4] तैं।
इतकों दुधारा चला दूदा रनधीर जूका,
इतकों चला है नन्दी[5] हेमगिरि[6] पास तैं ॥४६५॥

"

कहत प्रताप रन सागर मे शत्रुन को,
मेरे स्वामि भक्त सिरदारो तिरने न दो।
रहे अभिमान जो अपार वाहिनी[7] को सदा,
यवन अकबर को आज करने न दो।
करिके दिखावो जो अपूर्व बल क्षत्रिन को,
हिन्दुन को धर्म धन मान हरने न दो।

---

१—किंवाड़। २—सेना का अग्र भाग। ३—सांगा का पुत्र। ४—जोर का हसना। ५—शंकर के चढ़ने का नन्द-केसर। ६—कैलाश। ७—फौज।

पाट डारो पहुमि तुरकन को काटि डारो,
गौरव तुम्हारो शूर बीरो गिरने न दो ॥४६६॥

दोहा

प्रताप—

दूदा हिन्दुन धर्म को, मो पर भार अपार।
मेरे मन को अब मरद, भट तेरे भुज भार ॥४६७॥

दूदा—

जबलग भट हम रावरे, बीर खरे बलवान।
तबलग पातल नृप तनिक, मन जिन करिये म्लान ॥४६८

घनाक्षरी

कहें उमराव दूदा सुनिये हमारी अर्ज,
तुर्कन की कौन बात काल सौं लरेंगे हम।
आए हैं प्रबीर मीर प्रतना[1] प्रवल पेल,
तिन सों न कृपानाथ तनिक डरेंगे हम।
राखि कें अखन्ड धर्म आर्यन को भारत मैं,
रावरी कृपा सों रन सागर तिरेंगे हम।
मेदपाट बीर अनुरक्त धर्म सदा यातैं,
यवन बिहीन हिन्द अवनि करेंगे हम ॥४६९॥

---

१—सैना।

दोहा

एसें कहि उमराव गन, म्यान तजिय करवाल[1] ।
पट[2] मलीन अच्छरि तजिय, शंकर जीरन माल[3] ॥५००॥

मनहर

उरसौं भिराय उर दहू घां भिरे है भट,
किधौं चिरकाल हु तैं मिलत सगे-सगे ।
केते बीर लूमें जाय गयन्दन दन्तन के,
केते घाव चूर घूमें गोलन दगे-दगे ।
केते सुर साखी करि नाम जग राखि रहे,
केते मुख ताकि रहे कायर ठगे-ठगे ।
महा रणधीर आज दूदा वर वीर आगे,
केते ही अमीर मीर फिरत भगे-भगे ॥५०१॥

"

भूतन को भूत केते दावत जिमावत हैं,
कायर किनेक भागि जावत सने-सने ।
ठेलत है हत्थिन कृपान तन झेलत हैं,
पेलत प्रबीर केते तुरक चुने-चुने ।
कातर[4] डराने कहलाने[5] त्रन दन्त गहै,
केते ही उदग्र खग्ग रहत तने तने ।

---

१—तरवार । २—वस्त्र । ३—पुरानी रुन्ड माला । ४—कायर । ५—घबरा गए ।

केते घाव पूर अच्छरान के बनाव लखे,
केते उमराव राव फिरत बने[1] बने ॥५०२॥

"
साखत सहित किते करभ[2] तुरंग परे,
कितें परे भूषण समूह हालरान के।
कितें गहि ढाल असवार रन खेत परे,
कितें परे टूटूक तरवार और म्यान के।
कितें सिरदार परे कुम्भल दुरंग पोर,
कितें परे टूक-टूक म्लेच्छ मुगलान के।
रुधिर करीन झरें ग्रीषम फुहारे किधों,
पावस पनारे[3] परें शाही महलान के ॥५०३॥

"
रक्तबीज[4] बूँद जैसें शाही फौज आय रही,
रान की कृपान काली[5] रसना गई है खाय।
सुनो रहिमान खान कहाँ मेरे बाल-बच्चे,
अब ही करी है शादी खुदा ही करे सहाय।
कुँवर सुबुद्धि नहि मानी हे चतुर मान,
कैसे आन पटके पहारन के बीच लाय।

---

१—बींद, दुलहा। २—ऊँट। ३—नारदाने। ४—एक दैत्य जिसके रक्त बूँदे युद्ध में गिरती उतने दैत्य उत्पन्न हो जावे। ५—महाकाली।

तुरक कहत केते कहाँ जाय तोबा-तोबा,
कूरम ने हमको मराय डारे हाय-हाय ॥५०४॥

"

कालिका लहूरें[1] लेत रणांगन रास कीनो,
शंकर हुलास कीनो गाढ़ी प्रीति शिर मैं।
जय विसवास कीनो कूरम कुमार अब,
सांगा हर सुजस प्रकाश कीनो घर मैं।
तेगन तराकन तैं तुर्कनन त्रास कीनों,
हासम को नाश कीनों एक छन भर मैं।
गिद्धिनिन ग्रास कीनो नारद ने हास कीनो,
दूदा ने निवास कीनो उरवसी[2] उर में ॥५०५॥

"

द्रोन[3] द्विज कीरति में कछुक कलंक लग्यो,
सकट सु व्यूह टरे भीम भर भेटा की।
निन्द्रा बस पान्डुन के पांच बाल मार डारे,
समता मिलाऊँ कैसें द्रोनी मन हेटा की।
रन मैं बकारि बहु मीरन को मारि-मारि,
खेत परे झारि-झारि खग्ग खननेटा की।
दूदा सगराम लह्यो दोउ निकलंक यस,
बीरता बखानू मैं कहाँ लो बाप बेटा की ॥५०६॥

---

[1] युद्ध का गाना। २—अपसरा। ३—द्रोनाचार्य।

दोहा

सुपह भांन सोनीगरा, आदि बहुत जश चाह।
खेत परे हनि खलन कों, राखी रजवट राह ॥५०७॥
यहिं आहव[1] हित मे सुन्यो, पुनि मत भेद नवीन।
कोऊ कहत भो रानपुर[2], कोउ कुम्भलगढ़ कोन ॥५०८॥
युद्ध होउ किहिं ठोर पै, हमन विवाद उठांहि।
पर्‍यो खेत दूदा सुपह, यामें संसय नांहि ॥५०९॥
किय घेरा तुरकान को, तिन दिन तेरह तीन।
कंठीरव[3] गिर तैं कढ़े, केधौं मारि करीन[4] ॥५१०॥
सदा रखन स्वतन्त्रता, महल तजे नवखंड।
भट अब बनवासी भए, महिप गए चामन्ड[5] ॥५११॥



१—युद्ध। २—एक जैन मन्दिर। ३—सिंह। ४—हाथियों को। ५—ग्राम का नाम।

# कुम्भलगढ़ पर पातशाह का अधिकार।

दोहा

सोरह से पेंतीस अरु द्वादस तिथि मधुमास[1] ।
कुम्भलगढ़ को विजय किय, शाहबाज शाबास ॥५१२॥
और चढ्यो दल पाय अति, शाहबाज बलखान ।
पुनि गोगूंदा उदयपुर, कीन स्ववस तुरकान ॥५१३॥
गहरी अब सब भर गई, मुगलन तें मेवार ।
मग-मग मारत अरु मरत, रोपत पग-पग रार ॥५१४॥
बन्सबहाला[2] दिस बढ्यो, शाहबाजखाँ आप ।
करि-करि उद्यम बहु थक्यो पकर न सक्यो प्रताप ॥५१५॥
मुख सिटाय मुरझाय कें, रखि कछु रोबरदाब ।
शाहबाज पतशाह पै, पहुँच्यो पुनि पञ्जाब ॥५१६॥
शाह हमायूँ के समय, मुगल रहे रन मस्त ।
पूरण हते परिश्रमी, कबहू भए न सुस्त ॥५१७॥
शाह अकबर के समय, अब कछु भए अमीर ।
यवनन ग्रीषम ऐस तें नठत जात बल नीर ॥५१८॥
इहि रुज[3] में शाहबाजखाँ, ग्रस्त हुतो हमगीर ।
दोर धाम गिर देश की, सहि नहि सक्यो शरीर ॥५१९॥

१—चैत्रमास । २—बांसवाड़ा रियासत । ३—रोग ।

# महाराणा का मेवाड़ को विरान बना देना ।

दोहा

आज्ञा भई अधीश को, प्रजा सहित परिवार ।
आवहु सब गिरि ओर अब, मुलक छोरि मेवार ॥५२०॥
ग्रामन वासी वसि गए, आज्ञा के अनुसार ।
जिन कीनी अवहेलना, लीने शीश उतार ॥५२१॥

मनहर

जाही ठोर कृषी[1] परिपूर्ण लहराती तहाँ,
कीकर[2] करीरन[3] ने भाग भरि लीनो है ।
जाही ठोर कलरव[4] लोकन रहत हुतो,
लूँकटी सियारन ने तहाँ घर कीनो है ।
करि न सकेंगे प्राप्त अरथ विजेता यहाँ,
सोचिकें उपाव भूप निपट नवीनो है ।
पूरन स्वतन्त्रता के प्रेमी महारान पत्ते,
एसे राज थान कों विरान करि दीनो है ॥५२२॥

"

औरन ज्यों चाहते तो राज कों बढ़ाय लेते,
यवन उदारता पैं नेक हु लुभायो ना ।

१—खेती । २—बंबूल । ३—केरव्रक्ष । ४—आवाज ।

कौंन नृप ऐसो निज देश को उजारि देत,
कौंन नृप लच्छमी पै मन विरमायो[1] ना ।
'केसोदास' और काल और देश और जात,
जननी जहान मध्य दूजो पूत जायो ना ।
भारत में भूप एसो प्रलोभन काल[2] बीच,
त्यागी महारान जैसो दूसरो लखायो ना ॥५२३॥



१—आसक्त होना । २—समय जमाना ।

# महाराना पर फिर चढ़ाई ।

---

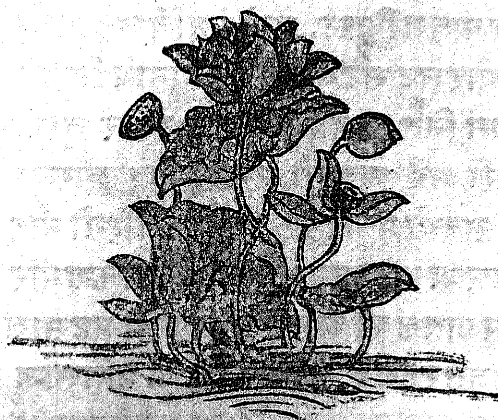
## दोहा

पोष कृष्ण की प्रतिपदा सोरह सौ पैंतीस ।
पुनि सेना पञ्जाब तैं, पठई जवनन ईस ॥५२४॥
गाजोखाँ महमुद हसन, तीमुर भयो तियार ।
शाहबाज आदिक खटन, भटन दीन भुज भार ॥५२५॥
अकबर इनसों अक्खइ, मन धरि जोश अमाच ।
राना को तुम सभिझ रन, दमन करहु रचि दाव ॥५२६॥
जो शायद जीते बिना, भट आवहिगे भग्ग ।
तो करिहौं निज तेग तैं, उनके शीश अलग्ग ॥५२७॥
हजरत देते इम हुकम, नेकन राखत ढील ।
करि न सकत रंघर कछू, तोउ ताकी तामील ॥५२८॥
मन्दसोर मन्दारिया, माडल गढ़ चित्तोर ।
मोही ऊँटाला मही, इम जहाजपुर ओर ॥५२९॥
करि दीने थाने नियत, जवनन नै बरजोर ।
पै न पता आधीन भो, कीने जतन करोर ॥५३०॥
ऐसें अकबर की अनी, चढ़ि-चढ़ि आवत जात ।
जैसें दच्छन पवन तैं, बद्दल उतर बिलात ॥५३१॥

# महाराना के भँवर कर्नसिंह का जन्म

दोहा

सोरह सो चालीस महँ, पातल पुन्य प्रभाव ।
जनम्यो अमर कुँमारके, भँवर करन सद्‌भाव ॥५३२॥
इहिं अवसर पातल अधिप, कुलपति उच्छव कीन।
जंगल में मंगल करन, दुख में प्रभु सुख दीन ॥५३३॥



# महाराना पर पातशाह की और चढ़ाई ।

दोहा

पुनि सज्जिय प्रतना प्रबल, अकबर जवनन ईस ।
सम्बत सोरह सो अरु, हायन[1] इकतालीस ॥५३४॥
सुभट भयो सेनापती, जगन्नाथ[2] कछवाह ।
मिरजा जाफर बेग कों, किय बखसी पुनि शाह ॥५३५॥
जगन्नाथ द्वै वरस तक फिरत रह्यो करि फेल ।
करें कहा बहु मिलि कलम[3], इत महारान अपेल[4] ॥५३६॥
एक बेर पातल निकट, गयो पहुचि जय आस ।
मुख बिगार तउ भट मुर्‌यो, है जगनाथ निरास ॥५३७॥
पहुचावत नित पालवी[5], ताजा खबर तुरन्त ।
आठ घरी महँ आवती, साठ मील उपरन्त ॥५३८॥
पकर न सक्यो प्रताप को, निपट उतरिगो नीर ।
निज पित्रव्य भट मान को, कूरम[6] गो कशमीर ॥५३९॥
अह[7] निस पातल को असह, साह हृदय महसाल ।
सैना भेजत रहत है, सज्झि-सज्झि के प्रतिसाल ॥५४०॥

---

१—वर्ष । २—मानसिंह का जेष्ठ भ्राता । ३—मुसलमान । ४—जिसको हटाया न जाय । ५—भीलों का मुखिया । ६—कछवाहा । ७—दिन ।

शाही अफसर सेन सझि, फिरत रहत चहुँ फेर ।
तुरकन पुनि चामन्ड के, गिर लीने सब घेर ॥५४१॥
भारत[1] दुःख हिय महँ भर्‌यो, धरम धुरन्धर धीर ।
घने करोलन[2] तें घिर्‌यो, किधौं रान कण्ठीर[3] ॥५४२॥
समय-समय पे शीशवद, घलत तुर्कन घात ।
पातल नृप प्रच्छन्न गति, परत किधो पवि[4] पात ॥५४३॥
पे तुरकान प्रबन्ध तें, रान रहत अवरुद्ध[5] ।
तजत न तोउ स्वाधीनता, शीशोदा मति सुद्ध ॥५४४॥



१—हिन्दुस्थान । २—मृगया की खबर लानेवाले । ३—सिंह । ४—वज्र । ५—रुका हुआ ।

# महाराना का चामंड से मेरपुर की तरफ जाना ।

षटपदी

भूत भवष्यत देखि, निपुण नय रान एक निस ।
चढ्यो तुरग जय चाह, रह्यो भरपूर वीररस ।
तोरि दिये गहि तेग, शीश तुरकान शीशवद ।
बढ्यो मेरपुर तरफ, हटन जावद[1] लीनी हद ।
केते पठान मुगल रू किते, बांके शेख सइदखां ।
मुख को सिटाय रहिगो मुगल,
सह सेना सहाबाजखां ॥५४५॥

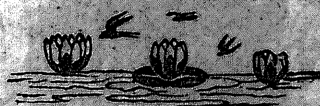
दोहा

रोक्यो मग महारान को, धक्यो अरिन्द अधाप ।
फिर फिर थक्यो फरीद्खां, पकर न सक्यो प्रताप ५४६॥
सेवक मंत्री कवि सुभट, अखिल मिले वहाँ आन ।
प्रचुर पहारन मेरपुर[2], रहत वीर महारान ॥५४७॥
इनके भेजत हो यहाँ, रसद मेरपुर राव ।
काढे तिनतें दिन कछुक अधिप सहित उमराव ॥५४८॥

---

१—ग्राम का नाम जो पहाड़ों में है । २—मेरपुर भोमट में एक ठिकाना है ।

अब दूतन द्वारा अरिन, भेद लह्यो छल भाव ।
रसद मग्ग किय बन्ध रिपु, पकरन रान उपाव ॥५४६॥
इन उनके अन्तर अधिक, अर्थ राज दल थाट ।
कहाँ महिप मेवार को, कहाँ भारत संम्राट ॥५५०॥
अकबर आमद की यहाँ, रोकि दई बहु राह ।
राजा को विनु राज के, कैसे ह्वे निरवाह ॥५५१॥
ऐसी आपति में अधिप, रहत पहारन बीच ।
अकबर बल जल उदधि को, कढ़त उलीच-उलीच ॥५५२॥
सबे नठ्यो शीशोद को, खांन पांन सामान ।
एक नठ्यो नहिं आपको, अति महान आपान ॥५५३॥
किए बन्ध अब शत्रु अन, सब मारग सुख साज ।
खुल्यो रह्यो खुमान[1] को, इक रजवट मग आज ॥५५४॥



1—खुमान महाराणा के प्रसिद्ध पुरखा थे जिससे यह वन्स खुमा[...] कहलाते हैं ।

# महाराना का पहाड़ों में भ्रमण

## दोहा

इहिं मग तें अब आहरा, आगे बढ़े अबीह।
गिरि इक तें दुवगिरि गहन, छुधित चले जनु सीह॥५५॥
कष्ट उठावत कैलपुर, पग-पग पर अप्रमान।
शोशोदा परिकर सहित, रहत विखे महारान॥५६॥
केशव वर वाहन कहाँ, और कहाँ नरयान[1]
विकट पहारन वीर वर, पैदल करत पयान॥५७॥



१—मियाना आदि सवारी।

# श्री महारानियों के पैदल पयान पर युक्ति ।

### मनहर

केसव' स्वधर्म तें स्वतन्त्रता को पाठ पढ़ि,
रानी जन चलत पयादी दिनरात है।
टक गडात चुभि जात काठे कंकरन
कञ्ज पखुरी से पांव रक्त तें सनात है।
हिषी प्रताप मकवानी की तपस्या गुनि,
रानी मघवानी पानी पानी भइ जात है।
खि देखि साहस कों मही सकुची सी जात,
नीची करि आंखिन को सची सरमात है ॥५५८॥

"

कों श्रम लागत हो दूसरे महल जात,
ओघट[1] गिरिन बीच आज नहिं हारती।
सव' तनिक सीत घाम घबराय जाती,
धर्म हेतु माता नहिं छांह धूप टारती।
हित देखि लेहू तिच्छन तपस्या ताकी,
समता लहै न याकी अनुसूया भारती।

---

—कठिन रास्ता।

क्षात्र धर्म जीवन उचारती अमोघ मंत्र,
आज कमधांनी[1] पंथ पैदल पधारती ॥५५९॥

मंद मंद गति सों चली है जान मन्दाकिनि,
अकबर आसा व्रच्छ जरन उखारती।
भारतीय साधुन उबारन कों भागीरथी,
पूरन प्रवाह दहूँ तटन प्रसारती।
शत्रु मित्र सन्तन असन्तन की दर्शनीय,
हिन्दुन पवित्र धर्म चलत उधारती।
क्षात्र धर्म जीवन उचारती अमोघ मंत्र,
आज चहुआनी[2] पंथ पैदल पधारती ॥५६०॥

कष्ट की सहिश्नुता विलोकि शत्रु नारिन के,
साह की कृपा के जेते गर्व सब गरिगे।
पावत है राजरानी तीखे अरु फीके फल,
रम हजारन के फीके मुख परिगे।
आज चावरांनी[3] त्रण शय्या पे शयन देखि,
आज सुर नारिन के नयन उघरिगे।
भरिगे है देखि चरनार बिन्द छालन तैं,
'केसव' कठोरता के आज नैन भरिगे ॥५६१॥

१—राठोड़जीरानी। २—चहुआन जाति की रानी ३—चावरा जाति की रानी।

,,

रानी भटियानी[१] जाकी असह सहिश्नुता है,

कबे निराहार कबै सूखे फल पावती।

होती मातु कैकइ तबे तो वो विलोकि आज,

राम वनवास पै जरूर पछतावती।

'केसव' असीम वज्र हृदया तियाही तोहू,

मन्थरा जो होती तो अवश्य सरमावती।

जोती नारि ढूँढा[२] तो तो रोती मुख फारि फारि,

होती पूतना तो दोय आँसू टपकावती ॥५६२॥

,,

कर्त परवाह नहीं कंटक न पाहन की,

लागत है राह जाको कोमल कमल सी।

'केसव' कहत पराधीन अघ काटवे की,

निर्मल गती है जाकी जान्हवी के जल सो।

गरुई अथाह रही मेरु सी बिपत्ति ताको,

राजरानी गिनत चतुर्थ भाग तिलसी।

जबे जीव जीवन स्वतन्त्रता कों जानि लीनी,

मान लीनी मही कों महीषी मखमल सी ॥५६३॥

१—यादव जाति की रानी। २—एक राक्षनी का नाम जो अग्नी मंत्र के बल से प्रहलाद कोभी जलाने लगी थी। जिसको होली भी कहते हैं।

## महाराना का महारानी से प्रश्न

मनहर

कहत प्रताप जग तुर्क न प्रगट हो तो,
तथा मेरी जन्म रात जग में न आवती।
नाना विधि व्यञ्जन अरोगि वेहि वारी तुम,
काहे कों अपक्क केर ऊमरन पावती।
पुष्पन की सेझ पर पोढ़न हि वारी तुम,
काहे कों कटीले त्रन पत्रन बिछावती।
काहे को तपावती या कंचन सी देह ऐसें,
काहे को अपार कमधानी दुःख पावती ॥५६४॥

## महारानी का उत्तर

मनहर

कहे महारानी कमधानी महाराना प्रति,
जो न कैलाश रानी में नहिं रिझावती।
जोन विधिना सों श्रेष्ट लिखत लिखावती मैं,
पूर्व जन्म हिमालय जो न गलि जावती।
सहज अबोध अपवित्र तिय जात सदा,
क्षात्र धर्म मारग को कैसे जान पावती।
रावेर पदाम्बुज की दासी ना कहावती तो,
प्राननाथ ऐसो मैं सुयोग कहाँ पावती ॥५६५॥

# कवि वचन

## मनहर

धर्म हेत देखिये प्रतापसिंह राना जैसो,
कौन ऐसो संकट सहेगो दिन रेन में ।
गंगाजल पीवत जे केसर मिलाय कर,
पीवे कौन पानी वे गधूले पोखरेन[१] में ।
देश की स्वतन्त्रता के कारन दरीन बैठो,
बैठननवारी राजरानी गोखरेन में ।
बड़े बड़े शाहन को बांधे जिन बीरन के,
धर्म हेत बालक बँधेगे टोकरेन[२] में ॥५६६॥

,,

ऐसो कष्ट झेलि भाम[३] बनमें निवास करयो,
जाति अभिमान भरयो जाके तन मन में ।
पराधीन भोजन में जहर घुरयो है किधों,
अमृत धरयो है ले स्वतन्त्र ऊमरन में ।
खांन पांन वस्त्रन को संकट अभूत सह्यो,
तोहू मजबूत रह्यो बीर निज पन में ।
अन्य भूप महलो में बैठि कें खिराजैं[४] देत,
पातल बिराजें ऐसे जावद[५] गिरन में ॥५६७॥

---

१—तलाइनाड । २—छबड़े । ३—भयंकर । ४—खिराज ।
५—जावद ग्राम का नाम ।

# पातशाह का महाराना के सामंतों को मिलाने का प्रयत्न करके निष्फल होना।

दोहा

यादव सारँगदेव अरु, चूंडावत चहुआन।
सोलंकी आदिक सुभट, बड़े बीर बलवान ॥५६८॥
कमध और परमार कुल, स्वामिय धरम सयान।
यहाँ सुभट उमराव ये, महाबली मकवांन ॥५६९॥
गुन आगर तन छांह गति, रहत सदा ढिग रान।
धारत स्वामिय धरम धुर, कलि[1] पारत तुरकान ॥५७०॥

छन्द पद्धरी

अब करिय और अकबर उपाव,
इन भटन डारिवे भेद भाव।
इक चतुर व्यक्ति इन पहँ पठाय,
प्रच्छन्न कहाई समय पाय।
नय निपुण आप सब लोक नीक,
वीरता आदि गुन ग्राम ठीक।

---

१—युद्ध।

आप में तऊ इक गुण अभाव,
सम्पति चहत नहिं निज स्वभाव ॥५७१॥
सबन कों करों राजा रईस,
मन सब समर्पि कर दौं अनीस।
महारान साथ तुम त्यागि देहु,
जग बीच जनम को लाभ लेहु।
कहत मैं आज सिर धर कुरान,
नें कहु पलटि हौं नहिं निदान।
मैं लहहुँ नांहिं मेवार ग्राम,
तुमकौं हि बांटि देहौं तमाम ॥५७२॥
शाह के सुनत भेदोक्ति बेन,
ह्वे गए भटन के लाल नैंन।
बोल कटु सुन्यों जनु खुधित बाघ[1],
अचानक लई जनु सोर आग।
कहन यों लगे भट सब सक्रुद्ध,
तुम यवन बहुत बातन अबुद्ध।
जानत न हमारी छत्रि जात,
कैसें लजाय हैं दुग्ध मात ? ॥५७३॥

---

१—सिंह।

जो आदि सृष्टि क्रम पलटि जाय,
हम नहीं स्वामि सों पलट खाय ।
फुर फूटि जाय ब्रहमण्ड फेर,
हम नही फूटि है कऊ बेर ।
कदाचित हटहि ध्रुव अन्य ठोर,
हम हटहि नाहिं यत्न करोर ।
लोमस तजि देहैं यद्यपि देह,
नहिं तजहिं रानपद हम सनेह ॥५७४॥
हम धरम धुरी के धरन हार,
तिन पे न चलहिं अपनो विचार ।
उन्नती हमारी कहा आप,
यवनन अधीश करि हो अमाप ।
हम सदा जगत उन्नत अधाप,
प्रभु है प्रताप जिनकै प्रताप ।
आपको चलहि नहिं यहां उपाव,
दीजिए क्लीवनन[1] शीश दाव ॥५७५॥
रहि गयो शाह सिर फोर फोर,
सिरदार एक नहि सक्यो फोर ।

---

१—नपुंसक ।

# पातशाह का महाराना से संधी का प्रस्ताव

दोहा

ऐसे अकबर को यहां, एक न चल्यो उपाव ।
शाह कर्‍यो तब सुलह को, पातल तें प्रस्ताव ॥५७६॥

मनहर

शाह कहिलाइ महाराना परताप आप,
रहिवे स्वतंत्र ही में मानत सबाव[1] हैं ।
तदपि यहां न अकराइ त्यागि आय हो तो,
आय हैं कृपालु मेदपाट के तो ख्वाब[2] हैं ।
मानि लेहो तो तो मुख माग्यो सब देहैं हम,
मित्र के समान राखि अदब अदाब हैं ।
कहा सुघराइ ऐसें दरदर[3] फिरवे में,
करिवे में सुलह तुमारे बड़ो लाब हैं ॥५७७॥

---

१—धर्म । २—स्वप्न । ३—द्वार द्वार ।

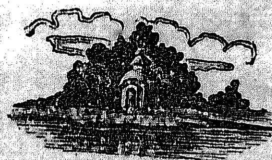
# महाराना का पातशाह की संधी का तिरस्कार

मनहर

तुर्कन के रक्त तैं न डाबर भरेगो तोहू,
शीशवद् वंश व्है खिराज तो भरेगो का।
फिरेगो न जोपे चित्रकूट के गवाच्छन में,
कैलपुरा तोहू आम खास विचरेगो का।
जाकी गाज हू तैं गजराज हू गिरेगो जो न,
गीदर की घुरकी तैं केसरी डरेगो का।
हिन्द तें न तुर्क निस कासन करेगो तोहू,
पराधीन व्है के पत्ता सुलह करेगो का ॥५७८॥

दोहा

एक न मानी आहरे, मन कुलवट मगरूर।
तुर्क नाथ प्रस्ताव तब, पल में भयो कपूर ॥५७९॥



# महाराना की समृद्धि

दोहा

रसा[1] लेन को यस रह्यो, महत देन को मान[2]।
असन ठोर हे ऊमरे, पोखर[3] को जल पान ॥५८०॥
जिन के जंगल देश जिम, राजस्थान पहार।
रान पास दूषन रहित, आभूषन तरवार ॥५८१॥

सौरठा

अकबर अघ ऐवास[4], चतुर परिश्रम करि चुनत।
ले खग सब्बल[5] पास, रान सदा ढाहत रहत ॥५८२॥
अकबर जहर अनूप, सह व्याप्यो संसार महँ।
रान गारूड़ी रूप, झार झार खग झारियत ॥५८३॥
अकबर डाकनि वाव, चख नख लौं प्रति रवि[6] चढ़त।
तेग धूनियन[7] ताव, रान सदा काढ़त रहत ॥५८४॥

---

१—पृथ्वी। २—प्रतिष्ठा। ३—तलाई, नाडा।
४—मकान। ५—लोहे का डण्डा। ६—प्रत्येक रविवार।
७—धूनी।

# एक महत्व पुर्न घटना और महाराणा का खेद ।

दोहा

तृन साला भीलन तहाँ, बिधि सों दइ बनाय ।
शीशोदा परिजन सहित, पातल रह मुद पाय ॥५८५॥
इक दिन पावस काल यहाँ, पानी पर्‍यो अपार ।
अपनी अपनी शाल मँह, सबै रहे सिरदार ॥५८६॥
गलित गिरे गिर अंग बहु, जन भे घरन बिहीन ।
किधौं नास व्रज करन कों, कोप पुरंदर कीन ॥५८७॥
अरध निसा के काल यहाँ, अमा[1] घोर अन्धार ।
पातल चोकस करत प्रभु, नय मय समय निहार ॥५८८॥
अकस्मात आए अधिप, कुटी जहाँ राजकुमार ।
दागत दुःख तें दम्पती, दहुँ जागत सिरदार ॥५८९॥
गिरन खाल तें जल गिरत, पर न शाल महपूर ।
बांधत पाली कुमर बधु, तउ बहि जावत धूर ॥५९०॥
कुमर कही हे समय की, कैसी गती कठोर ।
भूपति हू कौं भौंन में, मिले न निरचू[2] ठोर ॥५९१॥
कुमरानी मुख तें कह्यो, कातर बचन करीब ।
एसे हम बजि है अधिप, बजि है कौन गरीब ॥५९२॥

---

१—अमावस्या । २—जिस मकान में पानी नहीं टपकता हो ।

कुमर कही हम का करें, मानत नहिं महाराज ।
सरब काल स्वाधीनता, समुझत प्रान समान ॥५६३॥
सुनि लीनी पातल सरब, अधिक कुपे अधिराज ।
प्रसर्‌यो दिव[1] परभात महँ सबही जुर्‌यो समाज॥५६४॥
क्रोध युक्त पातल कही, मेरी सुनहु कुमार ।
तुम करि डारहु तुरक तैं, सुलह सहित शिरदार ॥५६५॥
निस घटना समुझत नहीं, पातल रखी प्रछन्न ।
अनुमानत विधि विधि अजन[2] जानत नहिं कोउ
जन्न ॥५६६॥

गहे मौन उमराव गन, सबही रहे हे सन्न ।
तुहिन पर्‌यो कैधों तुरत, बड़े कमल गन वन्न ॥५६७॥
तोलत मन करि करि तरक, बोलत कउन बचन्न ।
करि शाहस रानी कहत, कमधानी[3] दृढ़ मन्न ॥५६८॥



१—दिन । २—आर्य । ३—राठौरनीजी ।

## महारानी का प्रश्न ।

मनहर

कहे महारानी कहा कठिन कसूर भयो,
असंभव बात तातें आप फरमाई है ।
हम तो गँवार पग पग पै गुनहगार,
आप शरदार गिरमान गिरमाइ है ।
कृपा के अगार नाथ आप रतनाकर हे,
तुच्छन तें तुच्छ तुच्छ हमतो तलाइ है ।
राजकीय बातन में वाद प्रति वाद करें,
रावरें सम्मुख कहा चेरी की चलाई है ॥५९९॥

”

जो पे हम लोकन के कष्ट को विचार भयो,
तोउ इहँ कल्पना तो सारी निरमूल है ।
तुर्क की अधीनता में हमको हे फूल शूल,
सुन्दर स्वतन्त्रता में सबे शूल फूल है ।
क्यों न कहि देत हैं कृपालु अब मूल बात,
कहे बिनु चलत हमारे उर हूल है ।
प्राण नाथ कृपा कोप दासी कों कबूल हे पे,
ऐसे अविचार की तो रावरी ही भूल है ॥६००॥

"

सीता महरानी कहा कानन ते लोटि आइ,<br>
शैव्या हरिचन्द्र साथ विपति कहा गिनी ?।<br>
निन्द्रा वस नल कों विछोरि कहा भागि गई ?,<br>
रानी दमयंती कहा भइ अघ गामिनी ?।<br>
धर्म हेत कष्ट सहि जानत तियान कहा ?,<br>
करिवे सुलह बात ताहि तैं प्रभु भनी।<br>
समता न पाऊँ उन देवियों के साथ तोउ,<br>
प्राणनाथ रावरी कहाऊँ अरधांगिनी ॥६०१॥

"

रानी कुर्मदेवी[1] समरेश की धरम प्रिया,<br>
ताकी देश सेवा कहा नाथ नहिं नीकी है।<br>
जगावत पत्ता धर्म पत्नी कमलावती[2] की,<br>
तारा[3] की प्रसिद्धी कहा मानत अलीकी है।<br>
शीशवद् वंश बीर रमनी अनेक भइ,<br>
सहायक भइ जन्म भूमि जननी की है।

---

१—महारावल समरसिंह की रानी कुर्मदेवी पानीपत की लड़ाई में सामिल थी। २—आमेट रावत फता की श्री रट्ठोर जेमल की पुत्री चित्तोर के साके में युद्ध कर काम आई। ३—सुरतान सोलंकी की पुत्री कँवरप्रथी राज की श्री ( टोडा ) अपने पिता का राज्य लला पठान को मारकर प्राप्त किया अपने पती के साथ रह कर भयंकर युद्ध किया।

कहा भयो जो पे जन्म रात नहिं एक भइ,
प्राणनाथ तोउ दासी जात उनही की है ॥६०२॥

"
हम है स्वतन्त्र वन फूल है श्रृंगार श्रेष्ठ,
याके बिनु हीरन के आभूषन शूल है।
लाय[1] लगो क्योंन परतन्त्रता के व्यञ्जन पे,
शोड़ष ही भोजन हमारे कन्द मूल है।
केती अन्य भूपन की रानी हे कृपा की पात्र,
स्वर्ग सुख भोगे पै हमारे भाय धूल है।
तुर्क के अधीन होय रहनो उसूल नाहिं,
कहे राज रानी नर्क रहनो कबूल है ॥६०३॥

"
धर्म धुर धोरी संग विकट पहारन में,
प्राननाथ झारन में पैदल फिरूँगी मैं।
राज सुख कोउ काल में तो समरूँगी नाहिं,
शौक सों अरोगि वे मैं ऊमरे धरूँगी मैं।
मेरो करतव्य निज पालिहों प्रसन्नता सों,
जन्म भूमि सेवा प्राण प्रण तें करूँगी मैं।
नैंक ना डरूँगी आप साथ ओर काम परे,
तुर्कन तैं नाथ तेग पकरि लरूँगी मैं ॥६०४॥

---

१—आग।

"

मैं ही तो वही[1] हू च्छात्र धरम हिसाब जू की,
मैंही तो सही[2] हूँ परवाने हिन्दवानी की।
मैं ही तो रही हूँ सदा पोषक स्वतन्त्रता की,
मैं ही ती वही हूँ वीर जाति जग जानी की।
तुर्क सो सुलह ह्वै बो मेंही तो सुनीगी कैसें,
मैं ही तो महीषी मेदपाट राजधानी की।
मैं ही तो पदाम्बुज दासी हिन्दुवान भान,
मैंही तो पतोहू नाथ[4] कर्नवती रानी की ॥६०५॥

"

मन्डोवर राष्ट्रवर गंगा की सपुत्री रही,
त्योंही वीर भगनो ही मालदेव भाई की।
बहादुर शाह की चढाई पे चलाइ तेग
मुरति लखाइ ह्वां सजीव सूरताई की।
तुर्कन की यद्यपि अमोघ यम पासी हों न,
प्यासी हों तथापि रक्त सत्रुन सदाई की
गुन गिर मासी हों न खासी तेज रासी हों न,
दासी हों पतोहू तोहू जवाहरबाई की ॥६०६॥

---

१—हिसाब की बही। २—दस्तावेज पर राज्य चिन्ह लगाते थे। ३—ताकत की खान। ४—एक रानी का नाम जो राजा-रानी युद्ध में घायल होने बाद राजा के जहरीले घावों को चूस कर वीर गति को प्राप्त हुई ५—राना सांगा की रानी। प्रसिद्ध

महा कष्ट सागर मे तरनी बनेगी क्यों न,
आखिर तो नाथ चेरी घरनी तुम्हारी है।
रावरी प्रसिद्ध कुल राह हीन जानि सके,
रानी कमधानी रान एती का गँवारी है।
नीकी भांति जानत हूँ शीशोदन वन्स वधु,
जोंहर[1] जलन काज विधना सँवारी है।
कैलपुर नाथ आप जानत नहीं हो कहा,
पद्मनी प्रसिद्ध सास ददिया हमारी है ॥४०७॥



---

१—युद्ध में विजय की आस न होने पर उन वीरों की स्त्रियें जीवत ही जल जाती थी जिसको जोंहर कहते थे।

# महाराना का उत्तर।

मनहर

दिवाकर हू तैं रस्मि[1] अदाचित रूसि रहे,
कदाचित मेघ कों विछोरि जाय दामिनी।
श्री हरि को छोरि कर सायत रमा हू चले,
अत्रि तैं न बोलै अनुसूया धर्म गामिनी।
चन्द को विलोकि के कुमोदनी हू मान करे,
चन्द्र को विछोरे चन्द्रिकाहू अभिरामिनो।
सुपने हू मेरी मति हू तैं मुख मोरै नाहिं,
मोको है भरोसो यो तुमारो राजभामिनी[2] ॥६०८॥

सवैया

नैनन तें वरसन्त सुधा नित,
बैनन तें मन होत हरो सो।
प्रेम पयोद को थाह न पावत,
और लखावत पुर्न भरोसो[3]।
नेह बढ़ावत और बढ़ें अति,
कंचन सो मन तार खरो सो।
आपति में अवलम्ब पियान को,
ऐसी तियान को का अभरोसो ॥६०९॥

---

१—किरणे। २—राजरानी। ३—भराहुआ।

मनहर

तुर्कन मरोर तोरि डारें तरवार मेरी,
(पे) तेरे मान[1] आगें मेरी सिथल मरोर है।
मेरे जोस हूतें शत्रु सर्वदा ससंक रहे,
(पे) तेरे रोस हूतें मेरी गति कमजोर है।
बन्धों ना कठोर पराधीनता की श्रंखला तैं,
(पे) रानी! प्रेम हूँ तै बध्यो काचे ताग तोर[2] है।
रह्यों में खगेन्द्र[3] ह्वै के नाग तुरकिन्द्र को तो,
तेरे मुख चन्द को तो पातल चकोर है ॥६१०॥

„

कोउ विधि हूँ सों सस सिन्धु में समात नाहिं,
तेरे प्रेम सागर में मेरो मन मीन है।
में हूँ तुर्क मारि वे में परम प्रतापी पर,
तेरे नेह धन को हूँ लोभी जिम दीन है।
दोनों ध्रुव जैसें दूर तुर्क रु हमारो मन,
तेरे मन हूँ में मन मेरो सदा लीन है।
केसरी[4] कृतान्त क्रुर तुरक[5] करीन पर,
पातल स्वधीन तोउ तेरे तो अधीन है ॥६११॥

---

१—गर्व। २—तुम्हारे। ३—गरुड़। ४—सिंह। ५—हाथियों पर।

दोहा

तुम पर मेरो तनिक ही, सुन्दरि नहिं सन्देह ।
अपनी आत्मा एक है, दीखन की द्वे देह ॥६१२॥

कवि,

इडर अधिपति राष्ट्रवर, नाम नरायनदास ।
ताकी यह तनुजा सुघर, महारानी गुन रास ॥६१३॥



## राजकुमारी का प्रश्न।

दोहा

केसव राज कुमारिका, बदी रोष युत बैन।
कहा हमारी ओर को, चितहिं पिता न चैन ॥६१४॥

मनहर

सत्रुन की तेगन तैं कभी सहमूँगी[1] नाहिं,
सबही सहूँगी गति कठिन विधाता की।
है कें सुकमारि मैं दुल्हार समरोंगी नाहिं,
नजर चहूँगी ना कुटुम्ब नेह नाता[2] की।
देखिके अनेक कष्ट मुख मुरझे हौं कहा,
कहा मैं लजैहौं कोंख जन्म भूमि माता की।
हिमालय जाऊँ गरिजाऊँ जरिजाऊँ चिता,
देस के निमत्त मरजाऊँ आंनदाता[3] की ॥६१५॥



१—डरूँगी नहीं। २—समबन्ध। ३—पिता को कहते हैं।

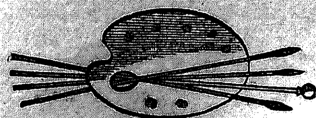
# महाराना का उत्तर ।

### मनहर

कहत प्रताप नैंक पुत्री अकुलावो मत,
अधिक प्रसन्न हौं तुमारी तिव्र बान पे ।
तेरी ओर हूँ तें मोकों कछु अविस्वास नांहिं,
चोट पहुँचावो ना व्रथा ही तव प्रान पे ।
छत्रिय कुमारिका के योग्य तब भाव देखि,
जानि लीनी जैसी प्रीति तेरी कुल कान पे ।
ऐसी ही सपुत्रियों तें देश को सुधार होत,
भारत भलाइ को भरोसो पुत्रियान पे । ६१६ ॥

### दोहा

कृपा युक्त पातल कह्यो, दुहिता नहिं तब दोस ।
राजकुमारी रोस तैं, तबे लियो सन्तोस ॥६१७॥



१—उग्र वचन ।

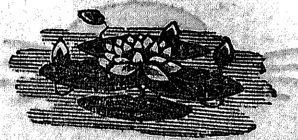
## सूर सामन्तों का प्रश्न ।

दोहा

कहि सुभटन कर जोरि के, हैं हम अनुग हजूर
कहिय हमारो है कहा, कृपा समुद्र कसूर ॥६१८॥

मनहर

कदाचित देवगन अम्रत को त्यागि कर,
हलाहल बोतल अरोगि वे को खोलेंगे।
कदाचित प्रेम को विसारि के कृपा निधान,
रमा महारानी नहिं ईश्वर तैं बोलेंगे।
कदाचित कोहनूर[1] जोहरी अभाव करि,
मेले औ कुचेले काच टुकरेन मोलेंगे।
कदाचित डोलेंगे अडोल ब्रह्मण्ड तोऊ,
सुपने हूँ दासन के चित्त नहिं डोलेंगे ॥६१९॥

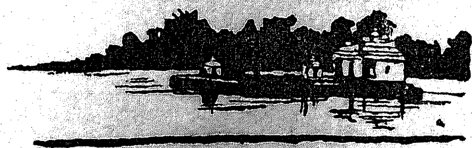


१—भूरिश्रवा के भुज बन्ध का हीरा ।

# महाराना का उत्तर ।

मनहर

कदाचित नर[1] को बिसास तजै नारायन,
　　शुक्राचार्य जाने झूठ संजीवन जाप को ।
कदाचित जाने कऊ मिथ्या होत केसोदास,
　　शंकर के तीव्र वरदान और श्राप को ।
बीरन बिहीन मेदपाट को प्रमाने कोऊ,
　　कदाचित जाने पराधीन परताप को ।
ईश्वर को श्रष्टि करतार जो न माने कोऊ,
तोऊ अभरोसो नहिं आने कोउ आपको ॥६२०॥



१—अर्जुन ।

# महाराज कुमार का प्रश्न ।

मनहर

जोरि कर अमर कुमार फिर कीनी अर्ज,
वेनतैय[1] गामी च्छुद्र काक पे चढ़ेगो का ।
वेदव्यास[2] काव्य नहिं हृदय मढ़ेगो तो हूँ,
सनातन धर्मी वाम ग्रन्थन पढ़ेगो का ।
जो पै स्वर्ग सीढिन पे दास न चढ़ेगो तो हूँ,
रौरव[3] की ओर निज कदम बढ़ेगो का ।
शेश वद वन्स में सपुत्र हूँ भयो न तो हूँ,
पिता ! तव पुत्र ह्वे कपुत्र तो कढ़ेगो का ॥६२१॥

दोहा

सुनि लीनी पातल सरब, बोले नहिं कछु बैन ।
और दिशा की ओर अब, नरपति कीने नैन ॥६२२॥



१—गरुड़ । २—गीता भागवत आदि । ३—नर्क विसेष ।

# राजकुमारी द्वारा कुमरानी का क्षमा मांगना

मनहर

अरज कराइ कुमरानी ने विनम्र भाव,
मेरो उर नाथ आज होत टूक टूको है।
मांगी ना मिलत मीच पहुमी ना देत बीच[1],
मीन कीच जैसे आज मेरो जिय सूको है।
स्थूल तन पाप को अमाप यह लूखो भयो,
धर्म पिता आपको विलोकि मन रूखो है।
तारो किन तारो कोप सागर में डारो आप,
दीनानाथ सारो दोष कुमर वधु को है ॥६२३॥



१—फटना।

# महाराना का प्रसन्न होना

दोहा

प्रभू पतोहू विनय पर, रोस तज्यो महारान।
पातल [illegible]त प्रसन्न भे, नरपति कृपा निधान ॥६२४॥



# नणद भावज की वार्तालाप

दोहा

अन्तहपुर में एक दिन, बढ़िगो कछुक विवाद ।
हों मन रंजन हेत यहँ, सो कहिं हौं संवाद ॥६२५॥

मरु भाषा

दोहा

बा०
बाईजी इण विध वदी[1], भाभी ! थांरी भूल ।
पालो नह रजवट-पखो[2], ओछा रखो उसूल ॥६२६॥

कु०
जे हूँ सपने जाणती, बधशी इतरी बात ।
बाईजी ! केती विहद, सह लेती बरसात ॥६२७॥

बा०
पीहर घरवट आपणी, सो न जोड़णी सथ्थ ।
करणी नहिं भाभी ! कदे, कैल पुराँरी कथ्थ[3] ॥६२८॥

कु०
की बाईजी ! थे कहो, धरो न मन निरधार ।
शमवड़[4] पीहर सासरो, लगे न फरक लगार ॥६२९॥

बा०
भाभीजी ! साची कहो, सम वड़िया सरदार ।
तीरथराज प्रयाग ये, वे तीरथ हरद्वार ॥६३०॥

१—कही । २—पक्ष । ३—कथा । ४—बराबर ।

कु०

रणबंका राठोड़ है, सह वातां समरथ्थ ।
बाईजी ! इण बंश ने, मोशा[1] बोलो मत्त ॥६३१॥

बा०

रणबंका राठौड़ हैं, जाणूं सदा सजोर ।
पण भाभीजी ! आहड़ां[2] था तो घरवट और ॥६३२॥

कु०

जयमल कल्ला जोधशा, शंजम जिसा सुभट्ट ।
घणा हुआ गोविन्द घर, बीर बहण रजवट्ट ॥६३३॥

बा०

कमंध हुआ कछवाहरी, संगत सूँ शकलंक ।
पण भाभीजी ! पेखलो !, यो हिज घर निकलंक ॥६३४॥

कु०

शमवडिया[3] राजा सरब, राजा सह रजपूत ।
बाईजी ! बांधे बिजड़[4], सारा बांधे सूत ॥६३५॥

बा०

नर गिर सारा एक नहिं, नरां गिरां में फेर ।
इक गिर हेमलयागिरी, इक गिरि राज सुमेर ॥६३६॥

कु०

दूजा भारत देशरा, राजा नहिं रजपूत ? ।
की बाई ! बातां करो, राणा ही रजपूत ? ॥६३७॥

---

१—व्यंगयुक्त । २—शीशोदिये । ३—समानता के । ४—तलवार ।

बा०
भाभी ! सरब सपूत है, बाजै सह रजपूत ।
रजपूती राखी जिके, राणा हिज रजपूत ॥६३८॥

कु०
दल–पंगल जैचन्द रो, पूरण जग आपांण ।
बाईजी ! वां पकड़िया, सात सात सुरतांण[1] ॥६३९॥

बा०
शुरताणां[2] नू शाहिया, जिकां गमायो देश ।
ये सुतंत्र भाभी ! अनम, हिन्दू भाण हमेश ॥६४०॥

कु०
रहणो जाणो राजरो, यो तो नैम संसार ।
किणरी बाईजी ! कहो, रण बांकी तरवार ॥६४१॥

बा०
भाभी खल दल भिड़ण री, या साधारण बात ।
कर जूँहर[3] शाका[4] करण, योहिज घर विख्यात ॥६४२॥

कु०
क्यूँ इण रो अंजश करो ?, बड़ी बणावो बात ।
बाईजी ! जूँहर बलो, ?, जे तो म्हांरी जात ॥६४३॥

बा०
रावां अर रंकां रहै, शारां रै घर नार ।
मोड़[5] तणो नहि महतपिण, शोड़[6] तड़णो संचार ॥६४४

१—बादशाहों को । २—बादशाहों कों । ३—युद्ध के समय जीवत वीरॉंगनाओ का जलाने का नाम । ४—सब के सब माराजाना । ५—विवाह के समय शिर पर बांधते हैं । ६—सशैंया ।

कु०

बिन माथे खग बाहणा, रण-गहला राठोड़ ।
बाईजी ! इण बंशरी, जुड़े न दूजा जोड़ ॥६४५॥

बा०

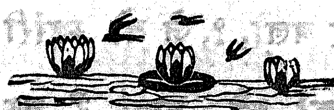
बंशां पैतीसां सिरे, हूँ जाणूँ राठोड़ ।
पिण भाभी ! शीशोदियां जग उपरान्त मरोड़ ॥६४६॥

कु०

बाईजी ! लीधा विरद, शो जश कहै सुपात ।
जग में अवर न जनमिया, राठोड़ां री रात ॥६४७॥

बा०

कुलवट वाला है कमध[1], जुध मतवाला जांण ।
रजवट वाला धरमरा, रखवाला महाराण ॥६४८॥



1—राठोर ।

## दूतों द्वारा पातशाह को खबर मिलना और सन्धि का भ्रम।

दोहा

गुप्त दूत पतशाह के, रहत यहाँ दिन रात।
बेर बेर भेजत खबर, जैसी जो सुनि पात ॥६४९॥
रान कियउ जो रोष तै, सन्धिय करन सवाल।
दूतन समुझी क्षुद्र-दिल, है यह सांचो हाल ॥६५०॥
सब विधि सों पतशाह तैं, रान भयो हैरांन।
करि है सत्वर संधि अब, मानहु बचन प्रमान ॥६५१॥
आय घटी घटिगो अरथ, सैन घटी घमसान।
क्यों नहि घटि है अब कहो?, मन पातल महारान॥६५२॥
नई नई सैना निपट, अकबरपुर[1] तैं आत।
बढ़त रह्यो दल शाह को, इनकों छीजत जात ॥६५३॥
यहि भ्रम तै आनन्द भौ, यवन न सैन अछेह।
हजरत पै पठई हुलसि, अरजी दूतन ऐह ॥६५४॥
अब बोलत है आपको, पातल नृप पतशाह।
सुलह करहिगे दिनन में, निश्चिय जहाँ पनाह ॥६५५॥
हमनें प्रभु! यह सुनि लई, खरी और विख्यात।
इक दिन पातल ने कही, सुलह करन की बात ॥६५६॥

१—आगरा।

पत्र देखि पतशाह कों, अति उमड़िय आनन्द ।
कैधों रतनाकर लख्यो, राका रजनी चन्द ॥६५७॥
समुझि लई साँची सरब, सैनप अरु पतशाह ।
आसिफखां अरु मान की सबहि करत सराह ॥६५८॥
बोले शाह वजीर सों, श्रम भो सफल सुकाज ।
हमरे इच्छित दिवस को, उदित भयो रवि आज ॥६५९॥



## राष्ट्रवर राजा पृथ्वीराज का प्रतिवाद ।

दोहा

वही बेर दरबार[1] महँ, रह्यो भूप रट्ठोर ।
वर भट बीकानेर को, कवियन को शिरमोर ॥६६०॥
उक्त खबर सुनिके अधिप, मिटिगो हृदय प्रमोद ।
ओहि! गजब !! नमिगो कहा, सिर हिन्दुन शीशोद॥६६१
जाके बल हम गरजते, आरज कुल धरि आश ।
जो ऐसी ह्वै जाय तो, अब किहिं पै विशवास ॥६६२॥
इमि गुनि कै पिथ्थल यहाँ, चित महँ युक्ति चलाय ।
बहु पटुता[2] तैं बीर वर, करी अरज शिरनाय ॥६६३॥
यह तो खबर अलीक[3] है पिथ्थल कही सहास ।
यों कहिवे तैं आपको, हैहै जग उपहास ॥६६४॥
मेरु डिगन संभव मने, संभव दिन की रात ।
पातशाह पातल कहै, बड़ी असंभव बात ॥६६५॥
कहिय शाह पिथ्थल कमध, करहु पत्र व्यवहार ।
तब कढि जावहिगो तुरत, सांच झूँट को सार ॥६६६॥
आज्ञा लहि यवनेश की, लिख्यो पत्र चितलाय ।
पातल प्रति पिथ्थल सुपह, बुधिबल कवित बनाय॥६६७

---

१—बादशाह के आमखास में। २—चतुरतातें। ३—मिथ्या।

# महाराना को पृथ्वीराज का पत्र।

दोहा

सिद्ध श्री श्री उदयपुर, सुन्दर सुभग सुधाम।
श्री प्रताप महारान को, सविनय लिखौं प्रनाम ॥६६८॥
प्रभु! पवित्र हिन्दुन पुरी, हिन्दुन को बल भाग।
उदय नगर मानत अखिल, जैसे तीर्थ प्रयाग ॥६६९॥
का उपमा दै आपको ?, आप सदा उपमान।
हम सब सेवक रावरे, आप हिन्दु-कुल-भान ॥६७०॥
हृदय विदारक खबर इक, यहि ठां पहुंची आन।
उत्तर सत्यासत्य को, पातल करहु प्रदान ॥६७१॥
हमरे अरू पतशाह के, बदिगो इहां विवाद।
यातो करिहौं आत्म-बलि, या करिहौं आल्हाद ॥६७२॥
तकिहो सेवा तखत की, रखिहो रजवट रेख ?।
हिन्दुन पति! लिखि दीजिये, इन दोउन महं एक॥६७३॥
अब हिन्दुन उद्धार को, आप भुजन आधार।
रखिहो तो रहि है नतो, (हम) बूडहिं कालीधार॥६७४॥
भावी वश तैं रावरो, जो नमिगो ध्वज दण्ड।
तो मेरो हिय तुरत ही, ह्वै है खण्ड विखण्ड ॥६७५॥

——

मनहर

पृथ्वीराज पातल को प्रबल लिख्यो है पत्र,
तीर्थराज-तोय[1] फिर उलटि बहैगो का ?।
कार्तिक[2] अजेय सेना पतिना रहैगे-देव,
आज्ञा काम देव सिर शंकर लहैगो का ?।
तुर्कन समाज सब उच्छव सझैंगे आज,
'केशोदास' पृथ्वीराज हृदय दहैगो का ?।
पूरन प्रतिज्ञावान शीघ्र लिखि दीजै रान,
"पातशाह" पातल जबान सो कहैगो का ? ॥६७६॥

दोहा

पढ़त पत्र परताप को बढ़िगो जोश बिशेष ।
दक्ष प्रजापति पै चढ्यो, मानो रोश महेश ॥६७७॥
स्वयं रान उत्तम सुकवि, बुधिबल कवित बनाय ।
पठयो पृथ्वीराज पहँ, सुनहु सभ्य समुदाय ॥६७८॥

कवित

कुम्भिन[3] के आमिष अहारि वेहिं वारो कृश,
केसरी कहूँहू घास चरन चहेगो का ।
संभव समूल सर्व नाश ह्वै तथापि वह,
युधिष्ठिर दुर्योधन दास ह्वै रहैगो का ।

---

१—जल । २—शंकर के पुत्र देवताओं के सेनप । ३—हाथियों के ।

वेग ना रहै पै कहा पत्री[1] को हरावे नाग ?,
तुर्कन पै बप्प वंशी तेग ना गहेगो का ? ।
लिखे महारान तुम पिथ्थल प्रसन्न रहो,
तुर्क को उपाधिवान पातल कहैगो का ? ॥६७६॥

दोहा

बिनुस्वारथ तैं बीरबर, मैं हो भारत मित्त ।
आरज तुम मम ओर तै, निडर रहहु भट नित्त ॥६८०॥
यहाँ योग्य सेवा लिखहु, समुझी आत्म सबन्ध ।
आप रखहु हम पै अधिक, कृपा सनेह कबन्ध ॥६८१॥

## पत्र पढकर बादशाह का अन्य-मनस्क होना ।

दोहा

इन भावन को पत्र वह, पढिके जहाँ पनाह ।
मुरझी उर बिकसी कली, मुख तै निकसी आह ॥६८२॥

---

१—गरुड ।

# एक अभूत पूर्व घटना और कारुणिक दृश्य ।

दोहा

कबै रहत सम भूमि पै, कबै गिरिन के कूट ।
पाञ्चाली पट ज्यों बढ़त, आपति रान अखूट ॥६८३॥

पातल जोश बढ़ायवे, दुरसा[1] सुनि यह बात ।
'बिरुद छिहोतरी[2]"काव्य वह,रचि लिख भेजी पात ॥६८४॥

कवि स्वतंत्र प्रकृति रहे, अरु फिर चारन जात ।
सुनि पातल कथ संधि की, हृदय पहुंचि आघात ॥६८५॥

बीर प्रकृति दुरसा बहुरि, प्रेमी सदा स्वतंत्र ।
इन दोहन के रूप में, लिखे छिहोतर मंत्र ॥६८६॥

आढा दुरसा ने अधिक, कविता रोचक कीन ।
सुनि पातल बल संग्रह्यो, भूप रह्यो रस भीन ॥६८७॥

पातल दुख पावत प्रचुर, तुरक बढावत कोप ॥
तावत ज्यों-ज्यों कंचनहिं, आवत त्यों त्यो ओप ॥६८८॥

फल अहार कोउ दिन करत, कोऊ दिन उपवास ।
कोऊ दिन जल तैं कढत, तोउन होत निराश ॥६८९॥

---

१—मारवाड़ इलाके में पांचेटिया ग्राम के रहने वाले दुरसा नाम आडा के गोत्र के चारण । २—विरदछिहोतरी प्रसिद्ध ग्रन्थ ।

इकदिन की घटना असह, सुनहु सभ्य समुदाय।
केशव कहा सुनि नरन के, देवन दिल दहलाय ॥६६०॥
माल[1] धान को एक दिन, सब समाज के साथ।
तहँ लागे भोजन करन मेदपाट नर नाथ ॥६६१॥
कछुयक खाद्य विभाग करि, सबहिन लयो समाज।
राजरीति सों हिन्दु-रवि, आप अरोगत आज ॥६६२॥
क्रम सो भोजन सवन किय, सब बैठे सरदार।
अन्तः पुर तैं आनिके, पहुँची कान पुकार ॥६६३॥
राजकुमारी हाथ तें, खाद्य पदारथ देख।
पशु सुभाव तैं ले भगी, वन विलाव अब एक ॥६६४॥
ताके रोदन शब्द को, सुन्यो अचानक शोर।
सहमि गए पातल सुहृद, महि पतियन शिरमोर ॥६६५॥
पातल कोउ घमसान में, कबहु न लघु मन कीन।
या घटना तैं दुखित भै, ईश्वर गति आधीन ॥६६६॥
राजन के राजा रहे, रवि-कुल रवि महारान।
जिनघर अन्नअभावजग, विधिगति अति बलवान ६६७॥
धर्म हेतु पातल धनी, यों दुख झेलत आज।
भयो कौन इमि भूप भल, सूरन को सिरताज ॥६६८॥
केशव ऐसो जग कठिन, लखहु कौन व्रत लीन ?।
हिन्दु धर्म अरु देश हित, कौन तपस्या कीन ? ॥६६९॥

१—धान्य विशेष।

धर्म हेतु को बन फिरे ?, कौन परे तरु हेट ? ।
कौन भूख काटी कहौं ?, पाटो[1] बाँधरु पेट ॥७००॥

मनहर

सुनि के पुकार बालिका की अश्रुधार युत,
'केशव' कठोरता को आज हिय फटिगो ।
वानी बान मूक भई, रंभा तान चूक गई,
सूक गई सरिता मतंग मद मटिगो ।
गज की पुकार वारो पाण्डवन नारि वारो,
स्थंभ नरसिंह वारो आज दिन घटिगो ।
देख दुख दासन को शंकर झझकि परे,
आज पाक शासन[2] को आसन उलटिगो ॥७०१॥

"

एक राज ऋषी ताकी कन्या की पुकार सुनी,
देव दरबार लौं अचान आज कूक[3] भो ।
गन्धर्वन गान चुक्यो सोम रस पान रुक्यो,
वीनयुत नारद को आज मुख मूक भो ।
पातल को धन्य धन्य लागे हैं कहन सुर,
यवन अनीक मुख हू पै थूक थूक भो ।
जावर गिरन आज पाहन पिघल गए,
आज कठिनाई को करेजा टूक टूक भो ॥७०२॥

---

१—भूख की वेदना में पेट पर कपड़ा बाँधना । २—इन्द्र ।
३—शोर ।

# महाराना का मातृ-भूमि का परित्याग ।

दोहा

अब न यहाँ रहनो उचित, सबै सुनहु सिरदार ।
भुगतहि जो भवितव्यता, लिखी बिरंचि ललार[1] ॥७०३॥
ऐसी हालत में यहाँ, है नहिं रहनो ठीक ।
आज दई मेवार अब, शीशोदन को सीख ॥७०४॥
कहाँ अरथ ? सैना कहाँ ?, कहां चढन वरबाज ? ।
ऐसी स्थिति में आपनो, रहि हैं कैसे राज ? ॥७०५॥
देखहु अब इहि देश को, है नहिं हम पर हेत[2] ।
तरसत है बालक तहाँ, टुकरे टुकरे हेत[3] ॥७०६॥
त्यागहिगे न स्वतन्त्रता, प्रन यह कठिन करूर ।
तातै परिहै देश को, अब त्यागनो जरूर ॥७०७॥
पूरन पन्द्रह वर्ष लौं, कष्ट सहे हम काय ।
देश किनारा[4] देन बिनु, अब नहि और उपाय ॥७०८॥
कछु दिन सिन्ध उजार मह, रहि कट्टहि दिन क्रूर ।
ले हैं देश छुराइ पुनि, जबन न मारि जरूर ॥७०९॥
बिनु वैतन नहिं दल बने यहाँ वैतन किम आय ।
रहि सदूर कछु सुभट गन, याको करहु उपाय ॥७१०॥

१—भाग्य । २—प्रेम । ३—लिये । ४—त्यागना ।

कछु दिन इमि रहि दूर कहिं, स्थापहिं राज्य स्वतन्त्र।
प्रान रहे तक नहिं रहै, पत्ता तो परतन्त्र ॥७११॥
समय समय हम समर हित, यहाँ अचानक आन।
शत्रु भगावहि देश तै, तुर्कन मारि कृपानि ॥७१२॥
कही भटन कर जोरि के, जैसी इच्छा नाथ।
जाहि देश प्रभु जाइहो, सब रहि है हम साथ ॥७१३॥
पातल नृप प्रच्छन्न गति, पुनि कीनो प्रस्थान।
मुशकिल तै कछु २ मिल्यो, खानपान सामान ॥७१४॥
बीर धीर पच्छिम बढै, चढै अरावली श्रृंग।
सरदारन युत शीशवद, सब अन्तःपुर संग ॥७१५॥
एक बेर फिर अधिप नै, महि देखी मेवार।
मातृ भूमि को मोह अब, उमड्यो हृदय अपार ॥७१६॥
चित उदास गिरि श्रृंग चढि, चितयो गढ़ चित्तौर।
पिघल गयो इक पलहि में, 'केशव' हृदय कठोर ॥७१७॥

मनहर

जाहि देश हेतु[1] ऋषि हारित की कीनी सेव,
जाहि देश खातिर महेन्द्र[2] देह ताई[3] है।
जाहि देश हेतु यहाँ द्वादश लखन[4] पुत्र,
एक साथ मरिके पवित्र कीर्ति पाई है।

---

१—लिये। २—बापारावल का नाम। ३—तपस्या करते ए शरीरको कष्ट पहुँचाना। ४—राणा लक्ष्मनसिंह।

जाहि देश हेतु जूँझि पत्ता[1] जयमल्ल परे,
जाहि देश ही तै आज होवत जुदाई है।
जाहि देश पावन निमित्त बहु कष्ट सहे,
ताहि देश ही तै लेत अन्तिम बिदाई है ॥७१८॥

,,

पातल कहत बापा रावल लगायो वह,
आज मैं मरोरत हौं छहाँगीर छाता को।
कृपा के निधान जिहिं धर्म हेत दीनो कष्ट,
आज कर जोरत हौं अनय विधाता को।
आज मेदपाट तै सदुःख मुख मोरत हौं,
तोरत हौं आज मैं पुराने नेह नाता को।
आज शोक सागर में नवका को बोरत हौं,
आज प्रभु ! छोरत हौं जन्मभूमि माता को ॥७१६॥

दोहा

ऐसे कहि महारान अब, प्रभु उतरे गिरि छोर।
सब उदास मन व्है सुभट, चले जुमरुधर ओर ॥७२०॥
ग्रामन ग्रामन तै मनुज, आवत दरशन काज।
आज धर्म हित उदयपुर-राना छोरत राज ॥७२१॥
यद्यपि गुप्त पयान किय, बुद्धिमान सु विशेष।
रहै लुपी किमि खबर यह, नृप त्यागन की देश ॥७२२॥

---

१—प्रसिद्ध पत्ता जयमल।

इक जावत मिलकर अनुग, इक आवत फिर और ।
कुम्भल मेर किनार पै, भई भीर चहुँ कोर ॥७२३॥
चले जात महारान मग, खिन-खिन व्है मन खिन्न ।
सैना संचय हित अरथ, मिलनो यहाँ कठिन्न ॥७२४॥
और प्रचुर सेना बिना, लेनो कठिन स्वदेश ।
बहुरि देश लेवे बिना, बढि हैं विपति बिशेश ॥७२५॥
रान विचारत मन रहे, जो इच्छा भगवान ।
विधि गति के उपरान्त नर, कहा करै बलवान ॥७२६॥
चतुर पहर सब भट चले, करि मग पार कठोर ।
अब भगवन रवि मुरि चले, अस्ताचल की ओर ॥७२७॥
फिर त्यों ही महारान की, नजर परी मग ओर ।
एक वृद्ध आडो खरो, कमर झुकी कर जोर ॥७२८॥
कछुक तिमिर कछु श्रान्त नृप, मंत्री वरण मलान ।
कछु लिबास विपरीत तै, परी नहीं पहचान ॥७२९॥
कोउ कारन तै मँत्रि यह, छोरि गयो निज देश ।
पुनि पहुँच्यो निज स्वामि पै, स्वामिय भक्त बिसेश ॥७३०

---

# भामा शाह का महाराणा को रोकना और सर्वस्व भेंट कर देना ।

मनहर

अर्थ के अभाव महारान देश त्यागत हैं,
जब तें परी है बात ऐसी स्रवनन में।
वृद्ध है अधिक वेस पूरन पलित केस,
बल हू बिसेस सेस रह्यो नहिं तन में।
टेकि टेकि लकरी को पगन उठावत है,
खावत है ठोकरें अनेक छिन छिन में।
प्रेम रस छायो स्वामि दर्श तरसायो धायो,
भामा शाह आयो लै स्वदेश भक्ति मन में ॥७३१॥

"

संकट मैं मालिक की आयो है करन सेवा,
अश्वमेध यज्ञ होत जाके पग पग में।
जायो पारसानी भाटियानी[1] ना पठानी जायो,
जायो ना सिठानी ऐसो और पूत जग में।
स्वामि भक्ति प्रेम धर्‍यो पूरन हृदय बीच,
देश अभिमान भर्‍यो जाकी रग रग में।

---

१—प्रसिद्ध विवसाइजाति, भाटिया।



भामाशाह् महाराणा की सेवा में

कीरति को लाडो और मन को उदार गाढो,
भामाशाह आडो आय ठाढो भयो मग में ॥७३२॥

"

कहत प्रताप तुम कौन हो स्थविर[1] जन ?,
जाति है तुम्हारी कहा कहो कौन नाम है ?।
कहिवे की आपनी उपाधि है स्वजन कौन ?,
रहिवे को कहिये तुमारो कौन गाम है ?।
हमको जो पूछो तुम मेद पाट वासी हम,
पूर्व जन्म कर्म तैं विधाता भयो वाम है।
देश छोरि जात तुम मारग को रोकि रहै,
कहो क्यौंन हम तैं तुम्हारे कहा काम है ?॥७३३॥

"

बोलि 'जयजीव' और नजर सप्रेम कीन्हीं,
सेठ के अपार भयो हृदय हुलास है।
हाथ जोरि चर्नन में अरज करन लागो
चित्र कूट हमारो पुरानो नाथ! वास है।
बनिया है जाति और किंकर को नाम भामा,
वर्तमान वास जो यहाँ तै बहु पास है।
पुरुषा हमारे रहे रानन के मंत्री खास,
रावरो दयालु! यह दासन को दास है ॥७३४॥

---

१—वृद्ध।

"

बहुत प्रसन्न होइ पातल नजर लीन्हीं,
कही महारान तुम बान्धव की ठौर हो।
लायक हो बहुत हमारे खास सेवक हो,
जेते है हमारे मंत्रि उनके हू मौर हो।
आपति स्वदेश को जो तुम तैं छिपावैं कहा ?
आपने हो तुमतो सदैव, कहा और हो ?।
संध्या प्रसरानी तातें सूरत पिछानी नाहिं,
भामा शाह तुमतो हमारे स्याम खोर हो ॥७३५॥

"

कही भामाशाह बात सबही सुनी है हम,
देश के निमित्त अब कहा द्रव्य देहों ना ?।
आप महाराज राज छोरि के पधारत हो,
राजभक्ति को मैं उर कैसे स्थान देहों ना ?।
ऐते पर मानिहों न अरज हमारी नाथ !
कहा एकलिंग नाथ जूकी आन देहों ना ?।
तान लेहों मैं तो अब एक की न कान देहों,
जान[1] देहों चर्नन पै तोहू जान[2] देहों ना ॥७३६॥

---

१—प्राण। २—नहीं जाने दूँगा।

घनाक्षरी

कहे महाराना शाह ऐसी ही तुम्हारी भक्ति,
तदपि हमारी गैल[1] नाहक परो हो तुम ।
धर्म के निमित्त सब सैन बलिदान भई,
देखि के हमारो दुःख नाहक जरो हो तुम ।
तुर्क सों लरन नई सैना फिर संचय व्है,
तै तो धन बूढे शाह कहाँ तैं भरो हो तुम ?।
अपने निवास पर क्यों नहिं फिरो हो पीछे,
ऐसो हट भामाशाह नाहक करोहो तुम ॥७३७॥

मनहर

कहे भामाशाह जन्मभूमि मैं विपत्ति परी,
तिहि को विलोकि प्रभु ! कैसे लुकि जाऊँ मैं ।
आज मम देश और स्वामि की करन सेवा,
पा के निधान नृप ! कैसे रुकि जाऊँ मैं ।
स्वामि काज सारन को देश कष्ट टारन को,
औसर महान ऐसो कैसे चूकि जाऊँ मैं ।
वित्त अनुसार आज सेवा ही बजाऊँ कहा ?,
मालिक के हेत नाथ ! ऊभो बिकि जाऊँ मैं ॥७३८॥

१—पीछे ।

"

और भामाशाह कह्यो डोलतसी गर्दन सों,
मेरी विनती पै नाथ ! जरा तो पसीजिये।
आश्रम चतुर्थ अन्त मैंने अब पांव दियो,
ऐसे वृद्ध मंत्री की कृपालु मानि लीजिये।
भारत उधारी बीर ! धर्म धुर धारी धीर !!,
किंकर की तुच्छ सेवा अंगीकृत कीजिये।
आज सकुटुम्ब निज दास को सनाथ कर्न,
पृथीनाथ पातल ! रकाब छोरि दीजिये ॥७३९॥

"

मंत्री की अरज मांनि पातल उतरि गए,
कांन परी भनक जबान तोतियान[1] के।
आरती उतारे महारान पै प्रसारे भक्ति,
बार बार वारे भरि थाल मोतियान के।
धन्य भाग्य मालिक पधारे है हमारे आज,
घर-घर मंगल भयो है गोतियान[2] के।
शाह नर नारी हात जोरि के खरे हैं सारे,
पग मसडे डारे मारवारी पोतियान[1] के ॥७४०॥

१—तुतली-काली बोलने वाली वैश्य (स्त्रिये)। २—कुटुम्बी।
१—मारवाड़ में सिर पर बांधने के साफे को पोतियाँ कहते हैं।

"

यथोचित स्वागत के शाह उपरान्त अब,
पान[1] ले धरे है रान अग्र मोद मन तैं।
पाहि पाहि बोलि पुनि बनिया चरन पर्‌यो,
मोल को लियो हों केसोदास तन-मन तैं।
ऐसे कहि चर्न सरवस्व करि दीन्हों भेट,
ऊरन भयो है शाह स्वामिभक्ति ॠन[2] तैं।
नजर निमित्त आन नजर प्रसारे तक,
हम्मालन अरथ उतारे कावरन[3] तैं ॥७४१॥

दोहा

कहिय शाह संग्रह कियो, करि मंत्रीपन काम।
यह धन है सब रावरो, मेरो केवल नाम ॥७४२॥



१—ताम्बुल। २—कर्ज। ३—कावड़ोसें।

# भामाशाह के लिए कवि की पुष्पाञ्जली।

डिंगल भाषा—सोरठा

तूटी सरब अतीव, अड़ब पत्यांरी एकठी।
साजी रही सदीव, कावड़ियारी कावड़ां ॥७४३॥

मनहर

केसोदास देस पै विपत्ति बढि आई तब,
महत्ता दिखाई पुनं जुगो जुग जीवे को।
नेह धन पूर कर बुझन न दीन्हों ताहि,
मेदपाट देश जैसे अस्त होत दीवे को।
स्वामि के चरन सरवस्व धरि दीन्हों भेट,
कोडी हू न राखी निज पास नाम लीवे को।
भामाशाह राखी निज सम्पति तैं वस्तू तीन,
कीर्ति इकलोती, धोती, लोटा जल पीवे को ॥७४४॥

"

इनके समान अति मन को उदार होय,
इनके समान फिर जाके पास पैसो[1] व्है।
इनके समान निज स्वामि तैं सप्रेम रहै,
सपने हू मालिक को नैक न अन्दे सो व्है।

---

१—जिनके पास धन हो।

इनके समान गिनै धर्म परमारथ को,
अनुचित स्वारथ को कौन जाने कैसो व्है ।
राज भक्त देश भक्त भामाशाह जैसो अहा?,
कैसोदास मंत्री जग बीच व्है तो ऐसो व्है ॥७४५॥

"

अग्रज[1] लँकेश को रु ईस्वर को कोषाध्यक्ष,
चतुर्दस लोक में धनेश कहलावे है ।
केसव कहत अनुमान करि लीजे आप,
जाकी धन सम्पदा को कौन पार पावे है ।
दे न सक्यो देश के निमित्त एक दमरी हू,
भामाशाह चित्त सो कहाँ तें मोल लावे है ।
ढेर ढेर धन के बिलोकि हिय हेर-हेर,
बेर बेर मन में कुबेर पछतावे है ॥७४६॥



1—बड़ा भाई ।

# महाराणा की कृतज्ञता ।

मनहर

जाहि देश बीच चुण्ड[1] पत्ता[2] जयमल्ल[3] भए,
ऐसो देश त्यागि अब और कहाँ दौरि है ?।
जाहि देश भए बीर मान मकवान जैसे,
ऐसे दिव्य देश तै न नातो अब तोरि है।
जाहि देस ही में भामाशाह से प्रधान मिले,
कहत प्रताप तातै क्योंऽब मुख मोरि है ?।
धर्म प्रान प्रजाजन वास जिहिं देश करे,
ऐसो कौन व्यक्ति जह ऐसो देश छोरि है ?। ७४७।।

,,

संकट में मालिक की करत पवित्र सेवा,
सन्तत ही ताके पर प्रेम आननो परै।
राज भक्त होय अरु देश भक्त रहे सदा,
बान्धव समान नित्य ताको ठाननो परै।
भेद भाव मन में परै जो कोउ कारन तैं,
करिके कसूर माफ ताको जाननो परै।

---

१—राणा लाखा का जेष्ठ कँवर चूँडा। २—रावत फत्ता आमेट का जो चित्तौड़ साके में मारा गया। ३—प्रसिद्ध जेमल राठौर ४—मानसिंह झाला।

कहत प्रताप मन बानी तैं हजार बार.
ऐसे दास को तो उपकार माननो परै ॥७४८॥

दोहा

उन किय सेवा लोभहित, तुम निरलोभ असेस ।
सेवक वर सुग्रीव तै, भामाशाह विसेस ॥७४९॥



## महाराना का सैन्य संगठन।

दोहा

अरथ देखि महारान अब, सब मिलि कीन सलाह।
देर कहा है देन में?, दुसहन के उर दाह ॥७५०॥
जुरन लगे जित तितहि तैं, साज बाज सामान।
वैतन भोगी सैन्य बहु, और मिली अब आन ॥७५१॥
करि लीन्हो नृप हुकम तैं, वीरन उचित प्रबन्ध।
किधौं चढ्यो खल गिरिन पै, सुरन सहित सुरइन्द॥७५२
गुन आगर फिर भील गन, सझि सझि बीरनसाज।
जे चिर सेवक रान के, आन मिले सब आज ॥७५३॥
सुभट सझे उमराव सह, संजुत भामाशाह।
गोडवार की ओर तैं, चढ्यो रान जय चाह ॥७५४॥



# महाराना की शाही सेना पर चढ़ाई ।

छन्द मुक्ता दाम—

चढ्यो अब सत्रुन पै महारान,
बढ्यो अति ध्वान[1] नकीबन बान ।
हरा हर हूरन हीय हरक्ख,
लहूरन लेन लगी नव लक्ख ॥७५५॥
लगे दल गैल सु खेतर पाल,
चुरेलन फाल मलंगत चाल ।
गह्यो कर गावन नारद बीन,
लह्यो उर मोद घनो अछरीन ॥७५६॥
चले चढ़ि नन्दिय शंकर साथ,
नमो कैलास पुरी कर नाथ ।
लिये संग भूत रु प्रेत पिसाच,
नचे बहु ताण्डव[2] आदिक नाच ॥७५७॥
चले फटकारत सुण्ड मतंग,
हले जनु कज्जल अद्रि उतंग ।
कसे कितने पर त्रम्बक[3] संग,
कसी बहरक सु भग्गव[4] रंग ॥७५८॥

---

१—सोर । २—नृत्यविशेष । ३—नगारा । ४—भंगवी ।

चले हय उद्धत कन्ध उठाय,
लखे जिन को सपतास लजाय।
फरक्कत है जिन पै गज गाह,
रह्यो रवि देखन को रुकि राह ॥७५८॥
चले गन भीलन सत्वर चाल,
गिने सम पद्धर नालन खाल।
धरी जिनने धव सोटिय कन्ध,
अगोटिय लेत लँगोटिय बंध ॥७५९॥
लसै जिन कन्धर पै धनु बान,
मलंगत बन्दर की गति मान।
हमालन भार उठानन हार,
हलैं गिरि मारग जानन हार ॥७६०॥
भजे फिर झेलत खग्गन भार,
धकेलत म्लेच्छ गरारन धार।
धरे जिनके सिर पै धव[1] पत्र,
वरे[2] जिन पै नृप क्लीबन[3] छत्र ॥७६१॥
सझे जिनने तन गत्तिय[4] आन,
लजे भट केउन के तन त्रान।

१—धोंकड़े के वृक्ष के पत्ते। २—नोछावर होना। ३—नपुँसकन।
४—गाती शरीर पर अंगरखा न होते से कपड़ा लपेटना।

चढ़ी धनुही[1] पनई[2] नहिं पाव,
लहे समता न क्रमेलक[3] धाव ॥७६२॥
लरी[4] जिनके गर गुञ्जन लाल,
वरी जिन पै बहु मुक्तिन माल।
करी जिन नै बहु पातल सेव,
दरी मँह आय मिलै जनु देव ॥७६३॥
चलै इमि ये चिर चाकर भील,
किधौं वन के झगरे न वकील।
चलै भट मर्द मलंगत मेर[5],
किधौं नय पालिय बब्बर शेर ॥७६४॥
चलै दल अग्रिम वन्सज चुण्ड,
झले रन भार जहीं भुज दण्ड।
चलै रन पण्डित जै चहुवान,
गही जिन म्लेच्छन शीश कमान॥७६५॥
चलै पर[6] मारन को परमार[7],
महा कुल वक्रम के उजवार।
चलै भट उद्धत सारँग[8] देव,
भली विधि आहव जानत भेव[9] ॥७६६॥

---

१—धनुष। २—पगरखी। ३—ऊँट। ४—लड़ी। ५—जाति विशेष। ६—शत्रुओं को मारने के लिए। ७—पँवार सिरदार। ८—सारंगदेवान कानोड़ वालों के पुर्वज। ९—भेद।

चलै रन मत्त महा मकवान[1],
जिन्हें प्रिय स्वामिय प्रान समान।
चलै रन पै रनबंक राठौर[2],
महा बलि बीरन के शिर मौर ॥७६७॥
यथारथ बिर्द घटात कबन्ध[3],
बिलोकत छूटत बैरिन बन्ध।
तुली तरवार त्युँही सगतेश,
सपत्न न मारि उधारन देश ॥७६८॥
दिपे रन रंग सु बीरम[4] देव,
अनम्मिय कन्ध सदैव अजैव।
चलै भट भट्टिय[5] यों चढि ऊँट,
गही कर मूँछ तथा खग मूँठ ॥७६९॥
चितैं भ्रकुटी जय जुब्बन जोर,
रहे सन मुक्ख सदा कर जोर।
चलै भट डोड[6] बड़े सरदार,
बड़े रन व्यूह बनावन हार ॥७७०॥
चले चढ़ि चंचल चालक[7] राव,
दयो दल दिल्लिय के पर दाव।

१—माला राजपूत। २—राष्ट्रवर। ३—राठोंड़ों से संबोधन बिना शिर लड़ने वाले को कबन्ध कहते हैं। ४—रानावतों के पुर्वज। ५—भाटी सिरदार। ६—डोढ़िये सिरदार। ७—सोलंकी।

चले भट चारन केफ चढ़ाय,
बयन्डन[1] बाजन[2] अग्र बढाय ॥७७१॥
चले चढ़ि हथ्थिन पै द्विजराज,
रमायन भारत बंचन काज।
सुनावत वीरन को वह श्लोक,
लहै नहिं पापिय हूँ यम लोक ॥७७२॥
चल्यो इमि पातल जोश अछक्क,
परे अब [3]बंबिन पै बहु डक्क।
किधों सिय कों फिर लावन काज,
रुप्या दृढ़ रावन पै रघुराज ॥७७३॥
लई इम आनि निराय[4] दिवेर,
घने बल रान लिये खल घेर।
परे गन तीतर पै जनु बाज,
किधौं मृग मारन को मृगराज ॥७७४॥
धक्यो महारान तहाँ धरि ध्वेस,
निकारन ध्वान्त चढ्यो कि दिनेश।
मनो मकरध्वज पै कि महेश,
किधौं सगरावत पै कपिलेश ॥७७५॥

---

१—हाथी। २—घोड़े। ३—नगारा। ४—गाम का नाम।

## युद्ध और महाराना की विजय।

छन्द मुक्ता दाम

सभयो उत खान त्युँही सुलतान,
सभे उत मीर महा बलवान।
किते नर काबल [1]बंग रहाक,
किते भट देस इरान इराक ॥७७६॥
कितेकन देश अरब्ब वतन्न,
किते नर सिन्धु किते कछरन्न[2]।
जिन्हें तन है पच हथ्थ उतंग,
हनें इक मुक्किय दे रु मतंग ॥७७७॥
किते भट सय्यद सेख पठान,
किते तुरकी व मुग्गल तुरान।
रखे वह सस्त्र छतीस प्रकार,
लखे जिन पै इक गर्दभ भार ॥७७८॥
हले वह बोलि अकब्र इलाह,
भले रन सागर जान मलाह।
भिरे रन अंगन में भट भीम,
भिरे गहलोत[3] रु आन गनीम ॥७७९॥
भिरे दहुँ ओर लिये भुज भार,
कहे निज स्वामिन की जयकार।

१—बंगाल। २—काठियावाड़। ३—गहलोत सीसोदिया।

भिरे जनु दानव देव उदार,
भिरे गिरि अर्बुद की गिरनार ॥७८०॥
भिरे गजराज की पूरन द्वेस,
भिरे उनमत्त कि द्वै वृषभेस।
इतैं उत तैज चली तरवार,
इतैं उत बोलत मार हु मार ॥७८१॥
इतैं उत होत नकीबन हक्क,
इतैं उत कायर फारत बक्क।
इतैं उत छूटत तोप बन्दूक,
इतैं उत होवत टूकन टूक ॥७८२॥
इतैं उत बोलत है जयकार,
इतैं उत भूत भ्रमे भयकार।
लगी अब योगिनि घुम्मर लेन,
लगी अब खप्पर कों भर लेन ॥७८३॥
लगी अब सिन्धुन की ललकार,
लगी अब प्रेतन की किलकार।
लगी अब अच्छरि डारन माल,
लगी अब हूरन होन निहाल ॥७८४॥
लगी अहिराज सुशीश मचक्क,
लगी कटि कूरम खान लचक्क।

लगी महि होन अबैं सब लाल,
लगे बहने अब रक्तन खाल ॥७८५॥
लगी गिरि कन्दर में कहुँ लाय,
लगी कहुँ होवन हाय रु माय।
रह्यो नृप पातल होय हरोल,
रह्यो रन भार भुजों पर तोल ॥७८६॥
रह्यो रन देखन रुक्कि अरक्क,
रह्यो उर कूरम मान धरक्क।
रह्यो शिव मुण्डन माल पिरोय,
रह्यो नृप तुर्कन को खतखोय ॥७८७॥
रह्यो कलि को नृप ह्वै पुनि राम,
रह्यो अब सत्रुन व्है विधिवाम।
करें कहुँ पट्टन के भट दाव,
करें कहु ऊट्टन ज्यों अरराव ॥७८८॥
करें कहुँ खग्ग भार फर गिद्ध,
करै कहुँ कीरति चारन सिद्ध।
करै कहुँ बाज भयंकर हींस,
करै गजराज कहूँ अति चीस ॥७८९॥
करै कहुँ बीर कटारन वार,
करै कहुँ पै तरवार न मार।

करै कहुँ आयत कंठ कुरान,
धरै नर वीर कहूँ हरि ध्यान ॥७९०॥
करै कहुँ जान बहिस्त उपाव,
धरै कहुँ वीर विमानन पाव ।
गिरे कहुँ आहव जीन पलान,
गिरे कहुँ वीरन कुण्डल कान ॥७९१॥
गिरे पतलून कहुँ तसबीन,
गिरे गलमाल कहूँ तुलसीन ।
गिरे कहुँ ढल्ल रु भल्ल कबान,
गिरे धनु बान कहूँ किरपान ॥७९२॥
गिरे कहुँ टूकन टूकन टूक,
गिरे कहुँ तोडन युक्त बन्दूक ।
गिरे कहुँ तैगन मार तुरंग,
गिरे कहुँ ठां मद मत्त मतंग ॥७९३॥
गिरे कहुँ लुथ्थन उप्पर लुथ्थ,
गिरे कहुँ हथ्थ कहूँ पर मथ्थ ।
दई इमि पातल तेगन रिठ्ठ,
दई अब तुर्कन सेषन पिठ्ठ ॥७९४॥
लई इमि भूप छुराय दिवेर,
लई पुनि किर्ति नई जग फेर ।

लयो इमि गोहिल कुम्भल द्रंग[1],
लये गढ़ तीश नए करि जंग ॥७९५॥
मरे जिनके किय दाहन कर्म,
दुहुअन आपन आपन धर्म।
भई फिर रान फते दिन दिन्न,
भई फिर भारत भुम्मि प्रसन्न ॥७९६॥

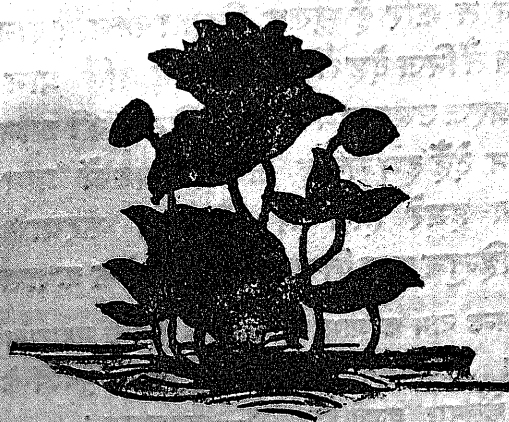
दोहा

कुँअर अमर सुरतान के, सम्भि उर दीनो शेल।
कढ़िगो रीढ़क फार कर, रक्त भूमि को रेल ॥७९७॥
माँडलगढ़ चित्तोर बिनु, सबही लिए छुराय।
जान रह्यो अबलौं जगत, मान रह्यो सरमाय ॥७९८॥
दाह हृदय लागी दुशह, अकबर लीनी आह।
सुनत भयो फिर समर तैं, हतोत्साह पतशाह ॥७९९॥
कई बेर पतसाह की, सम्भि सम्भि आई सैन।
एक बेर पतशाह हू, आय उदैपुर ऐन ॥८००॥
केऊ बेर घमसान किय, अर अर[2] मुगल अरीन।
तोउ हिन्दुन को तरणि[3], सदा रह्यो स्वाधीन ॥८०१॥
सब पलटे भूपति सहमि, पलटे बान्धव खास।
एक छन हू राना अनमि, तउ नहिं भयो निरास ॥८०२॥

---

१—दुर्ग क़िला। २—जुट जुट कर। ३—सूर्य्य।

वृद्धकाल पातल रह्यो, निष्कंटक नर नाह ।
मेदपाट की और तैं, मौन लई पतशाह ॥८०३॥
पातशाह पञ्जाब गो, मानि अजय मेवार ।
ता पीछे महारान नें, किय कछु राज सुधार ॥८०४॥
मुलक बसाय रु किय महिप, उदयनगर आबाद ।
दुशहन के उर दाह दिय, मित्रन को आल्हाद ॥८०५॥
और सहर आमेर को, मालपुरा लिय लूट ।
बांट दियो वह द्रव्य बहु, याको भटन अखूट ॥८०६॥
विपति समय जो वीर वर, रहे निरन्तर संग ।
गाम धाम ताजीम दै, बाढी सबन उमंग ॥८०७॥



# रुग्ण दशा में महाराणा का सन्ताप और सामन्तों की शपथ।

दोहा

महाराना चामण्ड[1] में, अधिक भए अस्वस्थ।
आज होहि जानी अखिल, आरज कुल रवि अस्त॥८०८
रान कंठ गत व्है रह्यो, पावन उनको प्रान।
कारन गुनि भावी कठिन, प्रभु नहिं करत पयान॥८०९॥
राव सलूंबर जैतसी, सुभट अरज किय स्पष्ट।
किहिं कारन तैं कैलपुर[2], सहत इतो प्रभु! कष्ट॥८१०॥
पातल ने कीनी प्रगट, अन्त समय अब एह।
मोहि कुँमर अमरेस पै, सदा रहत सन्देह॥८११॥
तुरकन तैं करि हैं सुलह, खिल्लत पहनहिं रान।
ता दुख तैं निज देह तैं, निकसत है नहिं प्रान॥८१२॥
करी अरज उमरावगन, नृप महिन्द्र[3] की आन।
करन न देहैं हम सुलह, जब लग घट में प्रान॥८१३॥
जबलग हमरे हात में, कैलपुरा करवाल
तबलग हिन्दुन कुल तिलक, करहुन सोक कृपाल॥८१४॥

१—चामन्ड नाम का ग्राम जो पहाड़ों में होने से महाराना अकसर रहते थे। २—केलवाड़े गाम में महाराना के पुर्वजों के निवास करने से केलपुरा बजते हैं। ३—बापारावल।

# महाराना का स्वर्गवास और युवराज अमरसिंह का प्रण।

दोहा

कुँवर अमर दृढ़ पन कियउ, सुनि यह रान सन्देह।
सीस न नमि हों शाह पै, रहि हैं जब लग देह ॥८१५॥

सपथ सहित पातल सुनी, बीरन की इमि बान।
बिबुधन लिए बधाय कें, रान गये सुरथान ॥८१६॥

हायन गुन सर खट मही, विक्रम सम्बत बेर।
माघ शुक्ल एका दशी, अवनि भयउ अन्धेर ॥८१७॥

मनहर

अवनि अपार महा घोर अन्धकार भयो,
चोपट उजार भयो मनहु जिहान को।
करुना विसार कर रुष्ट करतार भयो,
हृदय दरार भयो हाय आरियान को।
मान भो प्रसन्न त्योंहि अमें तुरकान भयो,
सुरग पयान भयो पत्ता महारान को।
त्रस्त भो समाज सूंन्य भारत भो आज हाय!,
दिवाकर अस्त भो समस्त हिन्दुवान को ॥८१८॥

"
मातृ भुवि रोवे वीर सुघर सुपुत्र काज,
राज रोवे ऐसे स्वामी महा बलवान को।
काल रोवे फूट फूट कूट करतूत पर,
छेत्र पाल रोवे भावी युद्ध घमशान को।
यत्र तत्र देखे तत्र राव अरु रंक रोवे,
सत्रु मित्र रोवें परताप महारान को।
राह राह दुहूँ दीन सरव जिहान रोवे,
शाह रोवे जय कों और मान रोवे मान को॥८१६॥





बादशाह अकबर के दरबार में बैठे हुए आढादुरसा चारण का छप्पय सुनाना.

# पातशाह का खेद ।

दोहा

सुन्यो जबै पतशाह नैं, पातल स्वर्ग पयान ।
सहमि गयो अरु स्तब्ध भो, आंखिन मह जलआन८२०
कोऊ नहिं साहस कियो, बहुत खरे कवि वृन्द ।
कवि आढा दुरशा कह्यो, छति पति छप्पय छन्द ॥८२१॥
दुरशा के बन्सज दिपत, मारवार के मद्ध ।
गुनि जन आढा गौत्र है, पांचे टिये प्रसिद्ध ॥८२२॥

दुरशा आढा कृत छप्पय ।

अश लेगो अण दाग, पाग लेगो अण नामी ।
गो आडा गवड़ाय, जिको बहतो धुर बामी ॥
नवरोजे नह गयो, नगो आतशां नवल्ली ।
नगो झरोखा हेठ, जेथ दुनियाण दहल्ली ॥
गहलोत राण जीते गयो, दशण मूँद रशणा डशी ।
नीशाश मूक भरिया नयण तो मृत साह प्रतापशी ॥

दोहा

सवहिन सोची सुकवि पै, शाह होहि नाराज ।
पै प्रसन्न भो पातशा, आसय कवि लखि आज ॥८२३॥

पातशाह—
प्रबल बुद्धि साहस प्रबल, सब विधि प्रबल सुजान ।
मेरे मन की इन करी, पूरनतय पहिचान ॥८२४॥

# महाराना प्रताप की सन्तान ।

## दोहा

महाराना परताप के, इक दस भए विवाह ।
सत्रह सुत अरु द्वै सुता, ताके योग्य सराह ॥८२५॥
युवराजा इनमें अमर, समर धीर बलबीर ।
शाह करी इन तैं सुलह, गहि न सक्यो जहँगीर ॥८२६॥
शहसमल्ल दूसर तनय, गुन आगर गंभीर ।
वन्सज ताके वीर वर, धरियावद महँ धीर ॥८२७॥
कच्चरा के कविगन कहत, वंसज जोलावास ।
उक्त ठिकाना इनहिं को, गोगूँदा के पास ॥८२८॥
कुवर बीर कल्यान के, पोत्र मुष्प परसाद ।
उक्त ठिकाना मह अजों, अधिक सुभट आबाद॥८२९॥
वंसज चांदा के विदित, निपट आंजणा नेक ।
कहत दरीबे के निकट, उक्त ठिकाणा ऐक ॥८३०॥
सेखा के वंसज सुभट, बहुत सुभाविक बीर ।
इनके कर में है अजो, गोडवार जागीर ॥८३१॥
बेहरा नाणा के बली, बीजापुर सु बिचार ।
राजत सांड़ेराव के, रानावत सरदार ॥८३२॥
पूरा के वंसज प्रकट, पूरावत कहलात ।
अधिक ठिकाने इन हिके, मेदपाट विख्यात ॥८३३॥

गुरलां अरु आटून गुनि, सीगोली मंगरोप ।
बत्तीसन के पद लिए, इनके वंजस ओप ॥८३४॥
वंसज हाथी सिंह के, दान्तड़ा रु बौरव्यास ।
मेदपाट के मध्य पुनि, विदित गेंदल्यावास ॥८३५॥
रामसिंह के वंश के, वीर उदल्या वास ।
मान करी आदिक महत, यहाँ ठिकाने खास ॥८३६॥
वंस कुमर जसवन्त को, अब कारूँडे आहि ।
इनकी सन्तति है अवर, महत जलोदे माँहि ॥८३७॥



# कवि की पुष्पाञ्जली ।

मनहर

शेष पर डारे कर हलाहल जारे कौन ?,
शंकर समाधी किधौं पथ्थ[1] पन टारे को ?।
बढ़िवा को ठारे कौन ? संजमनी[2] मारे कौन ?,
देखन को भानु आसमान तें उतारे को ?।
उद्यम करि थाको लाखों मुगल सम्राट कहे,
वज्र को विडारे तृन कंठीरव चारे को !।
मेरु को उखारे कौन ? काल को प्रचारे कौन ?,
पत्ता की स्वतन्त्रता को मनुस बिगारे को ?।। ८३८।।

"

अष्टा दस चोहनी खपाई पार्थ दुर्योधन,
कृष्ण जौ न होते राज वंश ही विलावतो ।
कूमति जिहाज पृथ्वीराज जयचंद भूप,
बोरि कर कीन्हों गोरिशाह मन भावतो ।
प्रलय समान मुगलान तुरकान बेर,
व्हेन पिष्ट-पेषन तो में हूँ गुन गावतो ।
पत्ता जोन व्हे तो कुल आरज सरोज रवि,
(तो) छिति[3] पर छत्रिन को खोज नहिं पावतो ।। ८३९।।

१—अर्जुन । २—धर्मराज का शहर । ३—प्रथ्वी ।

"

छाई पातशाही प्रलै अग्नि सी जनाई जग,
राजों की पलाई मनुसाई ठहराई ना।
बीरता बताई धर्म हिन्दुन सहाई बीर,
यस में लुभाई मति ऐस में लगाई ना।
खापिन छुराई खग्ग खलों पै बजाई खूब,
शाह आततताई के जय श्री हाथ आई ना।
विपति उठाई पत्ते पतोंतें[1] बुझाई भूक,
पाकरी[2] हूँ खाई पै स्वतन्त्रता गमाई ना ॥८४०॥

"

कौर कौर कज्जल सजोर चख कोरन पै,
कौर कौर वारि डारे कंज कलि कारिका।
सोर सोर सखि के सिंगार त्यौ सराहनीय,
पृथवी के छोर छोर प्रभुता प्रसारिका।
घौर घौर घन घनसार दे उरोजन पै,
और और भूपन को देखनो दुसारिका।
मौर मौर अंग परताप रान नायक पै,
दौर दौर आवे जय जैसे अभिसारिका ॥८४१॥

१—पानों से। २—पिलकन गूलर वृक्षों के फल।

"

तोर कें मरोर चहूँ कोर के महीपन की,
शाहन सजोर बहुकाल लों दिली रही।
शीशवद वंस रन मत्त कटि बद्ध सदा,
पताका मतंगन की पीठ पै खुली रही।
शाहन के घाती परताप निज सांग हू तैं,
सत्रुन की छाती निसि वासर सिली रही।
आज लौं अखंड एकलिंग की कृपा तैं अहा,
मूँछ महारान न की भौंहन मिली रही ॥८४२॥

## स्वर्गवासी १०८ श्री महाराणा फतेहसिंहजी की सत्य प्रशंसा।

मनहर

शाहन के शाह तें मिलाप भो समानता सों,
शिव पद टारि शीश काहू पे नमायो ना।
कोउ नर नाह शाह चरन कृपान धरी,
रान फतमाल बन्स गौरव गमायो ना।
नासा निज स्वास बढ्यो तबलो निसंक रह्यो,
जननी हमारे जान ऐसो पूत जायो ना।
काहू बड़ी दाट हूतें छोटे बड़े लाट हूते,
काहू समराट हूते कभी शहमायो ना ॥८४३॥

# कवि वंस परिचय ।

दोहा

पुन्यभूमि भारत प्रसिध, सरपरस्त संसार ।
तामें सब देसन तिलक, मुलक रह्यो मेवार ॥८४४॥
समय समय पर अवतरे, अधिपति यहाँ अनेक ।
कीरति तिनकी किमि कहों, आखिर रसना एक ॥८४५॥
बहुत बिदेसिन तें भए, यहाँ भयंकर युद्ध ।
भारत हित निस दिन सुभट, बीर रहे कटिबद्ध ॥८४६॥
तेरह सौ सम्बत महीं, दुशह अलाउद्दीन ।
विजय करन भारतबली, यवन चढ़ाई कीन ॥८४७॥
दल बल सज्झि घेरा दियउ, तुरक आय चित्तौर ।
इक हायन[1] लग तब यहाँ, भयो युद्ध अति घोर ॥८४८॥
महा रावल रतनेस पुनि, खेत पर्‌यो खुम्मान[2] ।
जौहर कर पद्मिनि[3] जरी, जानत जाहि जहान ॥८४९॥
किय लक्खन दृढ मति समर, महाराना रन मस्त ।
पुरजा पुरजा ह्वै परी, ताकी द्वादस पुस्त ॥८५०॥
गयो छूटि चित्तौर गढ़, सुभटन प्रानन साथ ।
जग जानत है जय विजय, है कमला पति हाथ ॥८५१॥

---

१—वर्ष । २—महाराणा के पूर्वज खूमाण नाम का प्रसिद्ध राणा होने से खुमाणा बजते हैं । ३—प्रसिद्ध रानी पद्मनी ।

लेन दुर्ग उद्योग किय, महाराज हम्मीर ।
कृत कारज तउ भौन कछु, विषम समय तैं वीर ॥८५२॥
देसाटन हित लुब्ध दिल, गयो रान गुजरात ।
गाम खोड़ गिरनार ढिग, रह्यो भूप इक रात ॥८५३॥
वहँ रह देवी वरवड़ी, विहद देस विख्यात ।
भूत भविष्यत कहत भल, जो वह चारन जात ॥८५४॥
पूछिय तिन सों रान पुनि, चारु दुर्ग चित्तौर ।
कब आवहि हमरे करम, सविनय कहौं निहोर ॥८५५॥
कछुक सोचि देवी कह्यो, हृदय भविष्यत हेर ।
हम्मा[1] ! तेरे हाथ में, आवहिगो आसेर[2] ॥८५६॥
कैसे आवहिगो कहो ! यह तो बात अभूत ।
नहीं अरथ सैना नहीं, नहिं घोरे रजपूत ॥८५७॥
बदिय[3] तबै इमि वरवरी, याको करहु न सोच ।
हम देहैं सो लेहु तुम, सुभट बिना संकोच ॥८५८॥
अरध सहस हय आपको, अपहिं नृपति उधार ।
गढ आवे तो देहु गिनि, यह मेरो इकरार ॥८५९॥
महिप आय मेवार महँ, हय लेकर हम्मीर ।
करन विजय उद्योग किय, बुधि-बल तें निज बीर ॥८६०॥
सेवा जालम साह की, अरु इकलिंग सहाय ।
बहुरि फल्यो देवी बचन, पुर्न तेग बल पाय ॥८६१॥

१—हमीरसिंह । २ – किला । ३—बोली ।

वर्तमान महता सुघर, जो है जीवनसीह।
याको महता जालजी, पूर्वज वही अबीह ॥८६२॥
यवनन अमल उठायकें, विजय करी बरबीर।
दुर्ग सहित निज देश लिय, महाराना हम्मीर ॥८६३॥
मालदेव सोनीगरा, जो हो किल्लादार।
ताको बहुत कुटम्ब हनि, कीनो गढ़ उद्धार ॥८६४॥
पुनि कृतज्ञता किय प्रकट, बारु सुकवि बुलाय।
पोलपात[1] स्थापिय प्रभु, नृप हमीर सद भाय ॥८६५॥
सुकवी सोदा बारुको, राना लाये साथ।
हतो सुबरवरी मातु को, बड़ो पुत्र विख्यात ॥८६६॥
वर दायक जो बरवरी, धर सोरठ सुखधाम।
अन्नपूरना[2] याहि को, पुनि कहियत उपनाम ॥८६७॥
प्रतिमा जिन चित्तौर पर, वर दीनी बनवाय
अन्नपूरना को वहाँ, सुचि मन्दिर सरसाय ॥८६८॥
अन्नपूरना को अवर, कहियत मनुज कितेक।
ब्रह्मपुरी महँ उदयपुर, आलय है लघु एक ॥८६९॥
आगाहट लिख आंतरी[3], द्वादस गांवन दीन।
देवी को पुनि भेट दिय, धन धन धर्म धुरीन ॥८७०

१—दरवाजे पर नेग लेने के पात्र। २—इनही अन्नपूरना का मन्दिर महाराना हमीर ने बनवाया जो तवारीख से प्रसिद्ध है। ३—गाम का नाम जालजी महता का दूसार नाम मोजीरामजी भी था।

बारू को थपि बारहठ, नहचल दीनी नीम।
सबही दीने सुकवि को, गाम धाम ताजीम ॥८७१॥
बारू कुल मेवार बस, पुसकल पौत्र प्रपौत्र।
बीर[1]भूमि को छोरि कर, अजहु न गए अनत्र[2] ॥८७२॥
जे बागर[3] महँ रहत है, सोउ शीसोदन साथ।
वंस वहाला[4] मेरुपुर[5], खुम्माना विख्यात ॥८७३॥
बारू के लघु पुत्र वर, नय जुत बेला नाम।
बागर अरु मेवार महँ, ताको वंस ललाम ॥८७४॥
समय समय पर समर को, हल चल रह्यो हगाम।
देश धर्म अरु स्वामि हित, कवि आये बहु काम ॥८७५॥
बन्यो रह्यो या विषय को, एक पुराना छन्द।
कहत गीत ताको सुकवि, सो लिखिहों ! स्वछन्द ८७६॥



१—मेवाड़ छोड़कर। २—और जगह। ३—वागड़ मुलक।
४—बांसवाड़ा। ५—डूँगरपुर।

गीत

पालम झड़ पोल चत्र गढ ऊपर,
जमणो लड़ मांडू जोधार ।
पील खाल अचल झड़ पड़ियो,
बेणो गढ मांडल उण बार ॥ १ ॥
जेसव केसव बेहूं जूटा,
हलदी घाटी हुआ हला ।
महाराणा कारज गज मुड़तां,
भाई बेहूं भड़े भला ॥ २ ॥
राणा सचल कुंभगढ राजड़,
माथे बीर बांधियो मोड़ ।
बिखमी बार सार झड़ बढियो,
अणी मोहर जूटे अण रोड़ ॥ ३ ॥
रजवट अकुट ऊजला रूकां,
बढ बारठ रूकां बिरदेत ।
हणमत पोल हिलोल हैजमा,
अमर नाम कीधो अकड़ेत ॥ ४ ॥
उदियापुर सोदे अजरायल,
पांडीसां तोले नरपाल ।
घणियां काज शाह दल धुबतां,
रचियो हरि देवल रणताल ॥ ५ ॥

तीन बार ल्हसकर तुरकांसूँ,
त्रिजड़ां हूंत रमे रणताल ।
आखा पीला करे ऊजला,
सोदा रहिया वंश शंघाल ॥ ६ ॥

दोहा

मम पुरषा या वंश महँ, राजसिंह जिहिं नाम ।
उदयसिंह[1] दीने अधिप, एक साथ त्रय ग्राम ॥८७७॥
क्रम क्रम सों मैं कहत हों, उन गामन के नाम ।
ओड़ां और पनोतिया, सोन्याना सुख धाम ॥८७८॥
राजसिंह आ? निहच, कुम्भलगढ़ पर काम ।
श्रीमुख तैं श्रीमान कहि, इक दोहा अभिराम ॥८७९॥
वह प्राचीन दोहा यह है ।
"कुम्भल मेरू कनक में, राजड़ जड्यो रतन्न ।
सोदां घर रहसी सुथर, पाणी मेरु पवन्न ॥"

दोहा

ताके पीछे जीविका, पुनि दिय सहस पच्चीस ।
बैठक औरु ताजीम वर, किय इज्जत बखसीस ॥८८०॥
वहि आमद महँ तैं रख्यो, यह सोन्याना ग्राम ।
राजनगर को परगना, जहँ मेरो सुखधाम ॥८८१॥

१—महाराणा कुम्भा के लड़के उदयसिंह जिनका नाम पितृ घाती होने से उदयपुर की वंशावली से निकाल दिया गया ।

पितृज मेरे भे सुपह, जेसव केसव नाम।
मरे मार मुगलान को, हरदीघाट हगाम ॥८८२॥
मम प्रपिता केसव महत, राजसिंह नृप बेर।
कृपा रान तैं करि कवी, पाई पुनि पानेर[1] ॥८८३॥
भई प्रतिष्ठा भूरि भल, महती राज समन्द।
रजत तुलाको दान किय, केसरसिंह[2] कविन्द ॥८८४॥
बारू कुल के बारहठ, महत बढ़े मेवार।
समय समय पर सबन को, प्रभुता मिली अपार॥८८५॥
राजसिंह नृप के समय, नरू बारहठ नाम।
देश धर्म अरु स्वामि हित, बीर गये सुरधाम ॥८८६॥
जहँ मन्दिर जगदीश हित, कविवर आये काम।
नामा आलमगीर में, कछुइक हाल ललाम ॥८८७॥
याकी प्रभुता को लिखूँ, वही गीत प्राचीन।
सिक्षा लै है सुनत सब, चारन अरवाचीन ॥८८८॥

गीत

कहियो नरपाल़ आविया, कटकां
घूण छड़ाल़ धरा पेधोल़।
पोल़ बड़ा गज बाज पांमतों,
पड़ते भार न छोडूं पोल़ ॥ १

१—ग्राम का नाम। २—केसरीसिंह ने तुला दान किया जिसका हाल राज प्रशस्ति में है।

राजड़ कियो राणा छल रूड़ो,
कांनों दे नीशरूँ कठे ? ।
अरि घोड़ो फेरण किम आवे,
तोरणघोड़ो लियो तठे ॥ २ ॥
आखा पीला करे ऊजला,
सोदे रोदां कलह सज ।
करग मांडतो नेग कारणे,
कमल ऊडियो तेग कज ॥ ३ ॥
उदियापुर सोदे अजरायल,
कलमां सूँ भाराथ कियो ।
दत लेतो आवे दरवाजे,
देवल जावे मरण दियो ॥ ४ ॥

दोहा

मेरे पुरखन ने महत कविता कबहु करीन ।
समय समय पर स्वामि हित,क्रम-क्रम सों रनकीन ॥८८९
अरु सोदन के गाम के, नाम गिनाऊँ नेक ।
गीहड़िया अरु रावछा, सेनोदा सविवेक ॥८९०॥
बरला बरवाडा बहुरि, है मेंगटिया हेक ।
महत डीडवाने महीं, कविवर भये कितेक ॥८९१॥
बीकाखेड़ा बारठन, और तिलाई गाम ।
केवलपुरा पनोतिया, ए सब ही अभिराम ॥८९२॥

पुन्यवान मेरे पिता, खेमराजजी नाम ।
पुत्र चार तिनके प्रकट, सों सोन्याने गाम ॥८९३॥
दत्तक दूलहसिंह के, दयो चतुर्भुज नाम ।
गाम नाम पानेर जहँ धर पहार सुख धाम ॥८९४॥
इनको सज्जन रान तें, इज्जत मिली सुचार ।
यह कविता के रचियता, बुधि-बर सुहृद बिचार॥८९५॥
सुत इनके जेठो सुघर, नाम राम परताप ।
कविता प्रासादिक करत[1], अरु धरमज्ञ अमाप॥८९६॥
फतहसिंह लघु सुत भयो, बीर धीर बिख्यात ।
सदविद्याबहुधासरस, गुन सागर को ज्ञात ॥८९७॥
याको दत्तक आंतरी, दीन समय को देख ।
बिनु सन्तति दिव गमन किय,प्रबल विधाता लेख॥८९८॥
जेष्ठ बन्धु मेरे जिहीं, नाम रूप कविजांन ।
पुत्र एक भौ प्रकट पुन, ताके चालक दान ॥८९९॥
बारठ राम प्रताप ने, याको दत्तक लीन ।
इन्द्र युम्न सिसु याहि के,दया सिन्धु प्रभु दीन॥९००॥
लघु भ्राता मेरे लखहु, याको लछमन नाम ।
अह निस याकी ओर तें, अति मोको आराम॥९०१॥
सरल चित्त अरु मति सुघर,ग्रह कारज सब ज्ञात ।
या तै मैं निश्चिंत है, रहों सदा दिन रात ॥९०२॥

---

१—करते थे ।

दीपत केसोदास के, इक चिरायु प्रभुदास ।
नाम सु गोरादान है, यह मम बंस उजास ॥६०३॥
सदा चार राखत सदा, नय अरु प्रेम निबाह ।
या रचना में याहिनें, अधिक दियो उतसाह ॥६०४॥
सहस करण है पौत्र सिसु, प्रभू दया तें पाय ।
जो रच्छक या जगत को, सो करि हैं दीर्घायु ॥६०५॥

## ग्रन्थ निर्माण काल

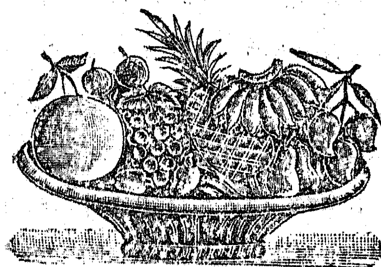
गुनीसे सम्बत गुनहु, सुभ इक्यासी साल ।
प्रारम्भिय के सब लिखन कविता में यह हाल ॥६०६॥
चौरासीके साल में, पूरन भयो निबन्ध ।
केऊ कारन लहि कठिन, छप न सके ये छन्द॥६०७॥



# उपसंहार

जबलग हिन्दुन धर्म है, जबलग है ब्रह्मण्ड ।
तब लग रान प्रताप को, अवनी सुजस अखंड ॥६०८॥
जय सहँसू भुज जयति जय, हरि सब संकट हर्न ।
यही लेख को अब यहाँ, करत प्रभू ! सम्पूर्न ॥६०६॥
यामें रस नाहीं अरथ, भाव पूर्न नहिं छन्द ।
एक रत्न उत्तम अधिक, नाम प्रताप नरिन्द ॥६१०॥
मम मति सोंया में प्रबल, पातल यस के तत्व ।
तातें लै हैं अवसि ही, यह रचना अमरत्व ॥६११
करहिं कृपा आनन्द घन, मेटहिं प्रबल अशान्ति ।
ओंम् ततसत्त अलख हरि, शान्ति शान्ति पुनि शान्ति

॥ इतिसमाप्तम् ॥



❀ श्री करनीजी ❀

# शुद्धिपत्र

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ३ | ७ | कितैक | किते |
| ३ | १३ | साहित्य | साहित्यरु |
| ५ | ३ | जोरहुन्डो | जोर-हुण्डी |
| २३ | १० | बाह | वाह |
| ३३ | १ | परयो | पर‍्यो |
| ३९ | ६ | बैर बैर | बेर बेर |
| ३९ | ७ | हैर हैर | हेर हेर |
| ३९ | १४ | सरवस्वधन | सरवस्व |
| ४० | ५ | हर्मन | हर्म्यन |
| ४४ | ९ | अबही | इतने |
| ४५ | ६ | कुमार | कुँवर |
| ५१ | ८ | फुरमान | फुरनान |
| ५५ | १७ | अकबर | अकब्बर |
| ५७ | १६ | अपगानी | अफगानी |
| ५८ | १५ | महीप | महिप |
| ५९ | २ | प्रछालन | प्रच्छालन |
| ७२ | १८ | निन्द्राहि | निद्राहि |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ७६ | २ | रूप | रुप |
| ७७ | १० | गाँवेंगे | गायँगे |
| ७८ | १४ | जाँयेगे | जायँगे |
| ७९ | १५ | ढंकइ | ढकइ |
| ८५ | १३ | चाटत पगकी | भूल करत भरपूर |
| ८७ | १५ | दिखाई | दिखलाई |
| ९३ | ११ | सिन्दुर | सिन्धुर |
| ९९ | १२ | अहलाक | इहलोक |
| १२५ | २० | दीन | दीन्ह |
| १४७ | ११ | कहित | कहियत |
| १४९ | १४ | अकबर | अकब्बर |
| १५२ | ९ | ग्रीणम | ग्रीषम |
| १५५ | ७ | गोगूदा | गोघूंदा |
| १६३ | १२ | खुमान | खुम्मान |
| १६५ | ८ | मकवानी | मखवानी |
| १६८ | १४ | जोन | जोनहिं |
| १६९ | १७ | जात | जाति |
| १६८ | १९ | रावेर | रावरे |
| १६९ | ११ | भाम | भीम |
| १७३ | ११४ | लाब | लाभ |
| १७५ | ४ | तृनसाला | तृणशाला |
| १७६ | ६ | यहाँ | यहँ |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| १७६ | १२ | कुटी | कुटि |
| १७८ | १२ | इहँ | यह |
| १७९ | ३ | निन्द्रावस | निद्रावश |
| १७९ | ९ | कुर्मदेवी | कूर्मदेवी |
| १७९ | १६ | श्री | स्त्री |
| १८० | ३ | श्रेष्ट | श्रेष्ठ |
| १८१ | ५ | सुनीगी | सुनोंगी |
| १८१ | ७ | पदाम्बुज | पदाम्बुज की |
| १८१ | ९ | गंगा | गांगा |
| १८१ | १० | भगनो | भगनी |
| १८१ | १३ | की | कों |
| १८३ | १४ | पयोद | पयोधि |
| १८६ | ४ | चितहिं | चित्तहिं |
| १८८ | १२ | ब्रह्मण्ड | ब्रह्मांण्ड |
| १९५ | २५ | ससैंया | सहशय्या |
| २०० | १७ | नमगोध्वज | नमिगोध्वज दण्ड |
| २०१ | १९ | युधिष्टर | युधिष्टर |
| २०३ | ६ | डुरसा | दुरसा |
| २०३ | २० | आडाके | आढाके |
| २०७ | १ | कछ | कछु |
| २०७ | ८ | कछ | कछु |
| २१० | १६ | अज्ञ | यज्ञ |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| २१३ | ९ | हट | हठ |
| २१६ | ८ | पुन | पुर्ण |
| २१८ | १० | जह | जग |
| २२६ | १६ | वक्रम | विक्रम |
| २२३ | २१ | सारंगदेवान | सारंगदेवोत |
| २२४ | १९ | भाला | झाला |
| २२४ | २१ | ढोढिये | डोडिये |
| २२५ | १० | रुप्या | रुप्यो |
| २२६ | १२ | मुग्गल | मुगल्ल |
| २२८ | २० | तरवार मार | तरवार न मार |
| २३० | १९ | छनहु | छिनहु |
| २३८ | ४ | कर | शंकर |
| २३८ | ५ | ड़वा | बड़वा |
| २३८ | ९ | मालको | कालको |
| २३९ | ६ | जयस्त्री | जयश्री |
| २३९ | ८ | हूँ | हू |
| २३९ | १३ | घौर घौर | घोर घोर |
| २४० | १० | फतेहसिंहजी | फतहसिंहजी |
| २४० | १२ | समानतासों | सप्रेम श्रद्धा |

आदर्श प्रेस केसरगंज,
अजमेर में छपा
संचालक—जीतमल लूणिया